CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

7'2 ½

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# महामृत्युंजय : साधना एवं उपासना

*मृत्यु का अतिक्रमण कर*
*अमरत्व प्राप्ति की अमोघ साधना*

एक पौराणिक कथा है—सनत् आदि ऋषियों द्वारा बालऋषि को चिरंजीवी होने का आशीर्वाद देने के बाद ज्ञात हुआ कि जिसे वे आशीष दे रहे हैं, उसकी उम्र तो सिर्फ दस बरस है। यह बात सही है कि काल की अपनी गति है। वह भी एक निश्चित नियम से बंधा है। लेकिन उन नियमों का नियन्ता तो उनसे मुक्त है। महाकाल उन काल-नियमों को बदल सकते हैं। ऋषियों ने बालक को महामृत्युंजय मंत्र जप करने को कहा। इसके अलावा और कोई उपाय नहीं था, जिसके द्वारा बालऋषि अकालमृत्यु से बच पाता। बालक ने विधिवत् अर्चन-जप प्रारंभ किया। करता रहा।

समय बीता। समय आ खड़ा हुआ। यम के गण आए। शिवार्चन में लीन बालक की आत्मा उनके पाश की पकड़ से दूर थी। आखिर स्वयं यमराज को ही आना पड़ा। यम के भयंकर रूप को देख बालक डर गया। उसने शिवलिंग को कसकर अपनी बांहों में ले लिया। साक्षात् शिव प्रकट हुए। 'हुं' की घोर शब्द ध्वनि निकली। शिव ने यम से कहा, "जो मेरे इस महामृत्युंजय मंत्र का जप करे, तुम उसके पास भूलकर भी नहीं जाओगे।" और यम वहां से खाली हाथ वापस चले गए।

यह कथा महर्षि मार्कण्डेय की है, जो चिरंजीवियों में से एक हैं। *महामृत्युंजय की साधना-उपासना अकालमृत्यु को रोकती है, रोगों से मुक्ति दिलाती है और सभी प्रकार के इहलौकिक व पारलौकिक फलों को प्रदान करती है।*

पुस्तक में इस साधना-उपासना के विभिन्न अंगों का शास्त्र सम्मत प्रतिपादन किया गया है। आशा है, शिव-आराधकों के लिए यह संग्रहणीय ग्रन्थ सिद्ध होगा।

**—प्रकाशक**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव मृत्यु को जीतने वाले हैं, इसीलिए मृत्युंजय हैं। शिव के इस रूप की साधना, विशेषकर महामृत्युंजय मंत्र द्वारा, सर्व प्रकार के दुःखों व पीड़ाओं से मुक्त करने वाली है। वैधव्य दोष हो, अल्पायु या अकालमृत्यु योग हो, महामृत्युंजय साधना द्वारा सबकी निवृत्ति हो जाती है। जो प्रतिदिन केवल शिव का स्तुतिगान करते हैं, वे भी भगवान मृत्युंजय की कृपा पाने में सहज ही सफल हो जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# महामृत्युंजय साधना एवं उपासना

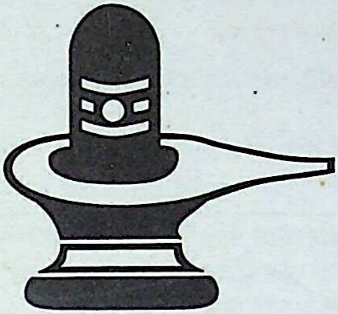

सी० एम० श्रीवास्तव

ज्ञान-विज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष, धार्मिक व रहस्यपूर्ण तथा
दुर्लभ विषय की पुस्तकों के मर्मज्ञ एवं सिद्धहस्त लेखक

मनोज पब्लिकेशन्स

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :
**मनोज पब्लिकेशन्स**
761, मेन रोड बुराड़ी,
दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349 फैक्स : 27611546
मोबाइल : 9868112194
ईमेल : manojpublication@mantraonline.com

भारतीय कॉपीराइट ऐक्ट के अंतर्गत इस पुस्तक की सामग्री तथा रेखाचित्रों के अधिकार 'मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-84' के पास सुरक्षित हैं, इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटल-डिजाइन, अंदर का मैटर व चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर एवं किसी भी भाषा में छापने व प्रकाशित करने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार वे स्वयं होंगे।
किसी भी प्रकार के वाद-विवाद का न्यायक्षेत्र दिल्ली ही रहेगा।

संस्करण :
2004

मूल्य : 60/-

मुद्रक :
**आदर्श प्रिण्टर्स**
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# भूमिका

भारतवर्ष के प्राचीनतम देवता माने जा सकते हैं शिव, क्योंकि इनकी साधना, आराधना एवं उपासना के प्रमाण वैदिक काल से भी पूर्व सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों में प्राप्त होते हैं। वैदिक काल में शिव का रुद्र रूप अधिक प्रसिद्ध रहा। उपनिषदों में रुद्र के अनेक नामों का प्रयोग किया गया है जैसे–शिव, महादेव, महेश्वर और ईशान आदि। 'अथर्ववेद' में भव, शर्व, पशुपति, उग्र और 'शतपथ ब्राह्मण' में अशनि नाम का भी प्रयोग हुआ है। *पाणिनी* ने 'मूढ़' नाम का भी उल्लेख अपने सूत्रों में किया है (अष्टा० 4/1/49)।

महाभारत में शिव के सहस्रनामों का उल्लेख हुआ है, जिनमें से कुछ नवीन हैं–शंकर, नीलकंठ, त्र्यम्बक, धूर्जटि, नंदीश्वर, शिखिन्, व्योमकेश, क्षितिकण्ठ आदि। इन विविध नामों से शिव की रक्षकता और संहारकता, सौम्यता और अघोरता, दयालुता और कठोरता आदि विरोधी या विपरीत व्यक्तित्व के सामंजस्य की सूचना मिलती है। वे भोगी व यति, राजा और रंक, सभ्य एवं नागरिक तथा असभ्य व वन्य–दोनों ही प्रकार के उपासकों के आराध्य हैं। वे रावण के भी पूज्य हैं और राम के भी।

सत्–असत्, हर्ष–विषाद, जन्म–मृत्यु, सुख–दुःख, आकर्षण–विकर्षण, अनुराग–विराग, सुंदर–असुंदर, मंगल–अमंगल तथा आत्म–अनात्म का सम्मिश्रण ही विराट् शक्ति, लोकपति एवं परमशिव का स्वरूप है। शिव आशुतोष हैं जो तनिक उपासना से ही प्रसन्न हो जाते हैं। शिव का चरित्र परम त्यागी, परोपकारी, दीनवत्सला, तपस्या और सर्वमंगलकारी गुणों से युक्त है। जहां अन्य देवताओं को वैभव संपन्नावस्था में प्रदर्शित किया गया है, वहीं शिव को सर्वत्यागी, संतोषी, आत्मालीन तथा श्मशानवासी चित्रित किया गया है। वे महाकाल होकर भी लोक कल्याणकारी शिव हैं। समुद्र–मंथन से प्राप्त उत्तम–उत्तम वस्तु अन्य देवों ने ग्रहण कीं, किन्तु शिव ने सर्वविनाशक कालकूट विष का पान करके सृष्टि की रक्षा की;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसलिए वे महादेव बन गए। अन्य देवता जहां सुवर्ण-रत्नों के आभूषण और रेशमी वस्त्र धारण करते हैं, वहीं शिव रुद्राक्ष एवं बाघम्बर से ही स्वयं को विभूषित करते हैं। दूसरे देवता पकवान, मिष्ठान्न तथा नाना प्रकार के व्यंजनों को ग्रहण करते हैं, किन्तु शिव बेलपत्र और धतूरा जैसी साधारण पूजा-सामग्री से ही संतुष्ट हो जाते हैं। इसी आदर्श चरित्र के कारण ही शिव देव-दानव दोनों की भक्ति और उपासना के आधार होकर सर्वोच्चासन के अधिकारी हैं।

अपने भक्तों पर वे शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं तथा उन्हें काल के गाल में जाने से बचाते हैं। मृत्यु को जीतने वाले हैं, इसलिए मृत्युंजय हैं। कलियुग में केवल मृत्युंजय शिव की उपासना ही फल देने वाली है। सर्व प्रकार के पापों के दु:ख-शोक आदि को हरने के लिए एवं सर्व प्रकार के रोग नाश के लिए शिवजी का पूजन और महामृत्युंजय का जप ही श्रेष्ठ है। गृह-पीड़ा, राज्य-दंड, महामारी, दैविक-दैहिक-भौतिक ताप, वैधव्य दोष, अल्पायु एवं अकालमृत्यु, घातक रोग, शोक और कलह आदि के निवारण के लिए श्री महामृत्युंजय की साधना सर्वोत्तम है। जो लोग प्रतिदिन केवल शिव का स्तुतिगान ही करते हैं, वे भी भगवान महामृत्युंजय की कृपा पाने में सहज ही सफल हो जाते हैं। हमारा विश्वास है, यह पुस्तक सभी का कल्याण करने में समर्थ होगी।

*–सी. एम. श्रीवास्तव*

*3192, ब्लॉक-के/3,*
*शास्त्री नगर, मेरठ।*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| 1. | शिव से शिक्षा | 9 |
| 2. | शिव-शक्ति रहस्य | 12 |
| 3. | उपासना का महत्त्व | 19 |
| 4. | शिव पूजन विधान | 22 |
| 5. | महामृत्युंजय प्रयोग के लाभ | 36 |
| 6. | दीर्घायु के लिए | 40 |
| 7. | श्रीमृत्युंजय स्तोत्रम् | 49 |
| 8. | मृत्युंजय साधना का प्रथम सोपान | 57 |
| 9. | महामृत्युंजय साधना और शिव | 64 |
| 10. | महामृत्युंजय मंत्रों का स्वरूप | 68 |
| 11. | जीवन-रक्षक महामृत्युंजय विधि | 76 |
| 12. | मृत्युंजय मंत्र का प्रयोगात्मक रूप | 85 |
| 13. | मृत्यु पर विजय | 91 |
| 14. | मृतसंजीवनी यंत्र और मंत्र | 109 |
| 15. | श्रीमहामृत्युंजय शरणागति | 121 |


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**करोमि त्वत्पूजां सपदि सुखदो मे भव विभो,**
**विधित्वं विष्णुत्वं दिशसि खलु तस्याः फलमिति।**
**पुनश्च त्वां द्रष्टुं दिवि भुवि वहन् पक्षिमृगता-**
**मदृष्ट्वा तत्खेदं कथमहं सहे शंकर विभो॥**

हे प्रभो! मैं अपनी पूजा का फल आपसे यही चाहता हूं कि आप मुझे अपने चरणों से पृथक् न करें। आपके चरणों से दूर रहकर, मैं ब्रह्मा और विष्णु का पद भी नहीं चाहता, क्योंकि ब्रह्मा एवं विष्णु को भी आपको ढूंढ़ने के लिए क्रमशः हंस और वराह का रूप धारण करना पड़ा था, फिर भी वे आपका पार न पा सके। ब्रह्मा और विष्णु का वह पद भी व्यर्थ ही है जिसमें रहकर आपसे विछोह हो। ऐसा बड़प्पन मुझे नहीं चाहिए। मैं तो छोटे से छोटा होकर आपके चरणों में पड़ा रहना चाहता हूं। कृपया मुझे वहीं स्थान दीजिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1

# शिव से शिक्षा

भगवान भूतभावन श्रीविश्वनाथ के चरित्र से प्राणियों को नैतिक, सामाजिक, कौटुम्बिक आदि अनेक प्रकार की शिक्षा मिलती है। समुद्र-मंथन में निकलने वाले कालकूट विष का शंकर भगवान ने पान किया और अमृत देवताओं को दिया। राष्ट्र के नेता और समाज व कुटुम्ब के स्वामी का यही कर्त्तव्य है। उत्तम वस्तु राष्ट्र के अन्यान्य लोगों को देनी चाहिए और अपने लिए परिश्रम, त्याग तथा तरह-तरह की कठिनाइयों को ही रखना चाहिए। विष का भाग राष्ट्र या बच्चों को देने से वैमनस्य उपजेगा जिससे सर्वनाश हो जाएगा। शिवजी ने विष को न हृदय (पेट) में उतारा और न उसका वमन किया, उसे कंठ में ही रोके रखा। अत: विष और कालिमा भी उनके भूषण हो गए। जो संसार के हित के लिए विषपान से भी नहीं हिचकता, वही राष्ट्र या जगत का ईश्वर हो सकता है।

समाज या राष्ट्र की कटुता को पी जाने से ही नेता राष्ट्र का कल्याण कर सकता है। किन्तु फिर उस कटुता का विष-वमन करने से फूट और उपद्रव ही होगा, साथ ही उस विष को हृदय में रखना भी बुरा है। अमृतपान के लिए सभी उत्सुक होते हैं, किन्तु विषपान के लिए शिव ही हैं। अच्छे फलभाग के लिए सभी तैयार रहते हैं, लेकिन त्याग तथा परिश्रम स्वीकारने के लिए महापुरुष ही प्रस्तुत होते हैं। जैसे अमृतपान के अनुचित लोभ से देव-दानवों का विद्वेष स्थिर हो गया, वैसे ही अनुचित फल-कामना से समाज में विद्वेष स्थिर हो जाता है।

शिवजी का कुटुम्ब भी बड़ा विचित्र है। अन्नपूर्णा का भंडार सदा भरा रहता है, पर भोलेबाबा सदा के भिखारी हैं। कार्तिकेय हमेशा युद्ध के लिए उद्यत, पर गणपति स्वभाव से शांतिप्रिय हैं। फिर कार्तिकेय का वाहन मयूर, गणपति का मूषक, पार्वती का सिंह और शिवजी का अपना नंदी तथा उस पर अर्थात् सर्पों के आभूषण । सभी एक-दूसरे के शत्रु, पर गृहपति की छत्रछाया में सभी सुख और



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शांति से रहते हैं। गृहपति में जब अहिंसा व क्षमा की प्रतिष्ठा हो, तो वहां वैर कैसे रह सकता है।

**अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः**

अर्थात् जिसमें अहिंसा की प्रतिष्ठा होती है, उसके सान्निध्य मात्र से वैर का परित्याग हो जाता है।

घर में प्रायः विचित्र स्वभाव और रुचि के लोग रहते हैं, जिसके कारण आपस में खटपट चलती ही रहती है। ऐसे में घर की शांति के आदर्श की शिक्षा भी शिव से ही मिलती है। भगवान शिव और अन्नपूर्णा अपने आप विरक्त रहकर, संसार के सभी ऐश्वर्य श्रीविष्णु एवं लक्ष्मी को अर्पण कर देते हैं। श्री लक्ष्मी और विष्णु भी संसार के सभी कार्यों को संभालने-सुधारने के लिए अपने आप ही अवतीर्ण होते हैं। गौरी-शंकर को कुछ भी परिश्रम न देकर आत्मानुसंधान के लिए उन्हें निष्प्रपंच रहने देते हैं। अतः सर्वमान्य पुरुषों को चाहिए कि वे योग्यतम कुटुम्बियों के हाथ में समाज और कुटुम्ब का सभी ऐश्वर्य दे दें। साथ ही उन योग्य अधिकारियों को चाहिए कि समाज के प्रत्येक कार्य-संपादन के लिए वे स्वयं ही अग्रसर हों, वृद्धों को निष्प्रपंच होकर आत्मानुसंधान करने दें।

महापार्थिवेश्वर हिमालय की महाशक्तिरूपा पुत्री का श्रीशिव के साथ परिणय होने से ही विश्व का कल्याण हो सकता है। किसी भी प्रकार की शक्ति क्यों न हो, जब तक वह धर्म से परिणीत-संयुक्त नहीं होती, तब तक कल्याणकारिणी नहीं होती। किन्तु आसुरी शक्ति तो तपस्या चाहती ही नहीं, फिर उसे शिव या धर्म कैसे मिलेंगे? धर्म-संबंध के बिना शक्ति आसुरी होकर अवश्य ही संहार का कारक बनेगी। प्रकृति माता की यह प्रतिज्ञा है-

**यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।**
**यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्त्ता भविष्यति।।**

अर्थात् संघर्ष में जो मुझे जीत लेगा, जो मेरे दर्प को चूर्ण कर देगा और मेरे समान या अधिक बल का होगा, वही मेरा पति होगा। इससे यह स्पष्ट है कि रक्तबीज, शुंभ-निशुंभ आदि कोई भी दैत्य-दानव प्रकृति के विजेता नहीं हुए। सब प्रकृति से पराजित तथा प्रकृति के अंश-काम, क्रोध, लोभ, मोह, दर्प आदि से पग-पग पर भग्न मनोरथ होते रहे हैं। हां, गुणातीत प्रकृतिपार भगवान शिव ही प्रकृति को जीतते हैं। तभी तो प्रकृति माता ने उन्हें ही अपना पति बनाया। यही क्यों, कंदर्प विजयी शिव की प्राप्ति के लिए तो उन्होंने घोर तपस्या भी की। आज का संसार शुंभ-निशुंभ की भांति विपरीत मार्ग से प्रकृति पर विजय चाहता है। इसलिए प्रकृति अनेक तरह से उसका संहार कर रही है। पार्थिव, आप्य, तैजस आदि विविध तत्त्वों का अन्वेषण; जल, स्थल एवं नभ पर शासन करना, समुद्र-तल के जंतुओं



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तक की शांति भंग करना, तरह-तरह के यंत्रों का आविष्कार और उनसे काम लेना ही आज का प्रकृति पर विजय है। इंद्रिय, मन, बुद्धि और उनके विकारों पर नियंत्रण करने का कोई भी मूल्य नहीं है। प्रकृति भी कोयला, लोहा, तेल आदि साधारण वस्तुओं को निमित्त बनाकर उन्हीं यंत्रों से उनका संहार करा रही है।

शिव की आराधना भूल जाने से आज राष्ट्र का भी शिव (मंगल) नहीं हो रहा है। आज के वातावरण में भगवान शंकर की पूजा-अर्चना करने से ही संकट से त्राण हो सकता है। शिवजी ही केवल ईश्वर शब्द से अलंकृत किए जाते हैं—

**ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। रोदनात् रुद।**

अर्थात् ईशान ही सर्व विद्याओं एवं भूतों के ईश्वर हैं। वही महेश्वर हैं, वही सब प्राणियों के हृदय में रहते हैं। प्रलयकाल में सबको रुलाने वाले यही रुद्र हैं।

**यस्य ब्रह्म च क्षत्रंचोभे भवत ओदनः। मृत्युर्यस्योपचनं क इत्था वेदयत्र सः।**

अर्थात् ब्रह्म क्षत्रोपलक्षित है यानी समस्त प्रपंच जिसका ओदन (भात) है, मृत्यु जिसका उपसेचन (दूध, दही, दाल या कढ़ी) है, उसे कौन, कैसे, कहां जाने? जिस प्रकार प्राणी कढ़ी-भात मिलाकर खा लेता है, उसी प्रकार विश्वसंहारक काल और समस्त प्रपंच को मिलाकर खाने वाला परमात्मा मृत्यु का भी मृत्यु है। तात्पर्य यह है कि वह महामृत्युंजय है; काल का भी काल है, अतः काल, काल या महाकालेश्वर है।

मृत्यु जिसका दाल-शाक है, उसका उग्र होना स्वाभाविक है। शिव से भिन्न जो कुछ है, वे उसके संहारक हैं; उन्हीं भयंकर-प्रलयंकर शंकर को 'यजुर्वेद' के एक मंत्र में शिवस्वरूप, कल्याणदाता और मोक्षदाता कहा गया है—

**नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।**

उन्हीं भूतभावन भगवान शिव की वैदिकों द्वारा बिल्वपत्र, पुष्प, फल, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से ही पूजा संपन्न की जाती है। मांस, मद्य आदि तामसिक पदार्थों का उपयोग नहीं होता। भगवान शंकर ऐसे औघड़दानी हैं कि आक, धतूरा, अक्षत, बिल्वदल, जल, दूध, दही, घृत, मधु, शर्करा आदि चढ़ाने तथा गला बजाने से ही प्रसन्न होकर सब कुछ देने को प्रस्तुत हो जाते हैं। अतः आज के संकटपूर्ण समय में भारतवासियों को दत्तचित्त होकर शिवाराधना करनी चाहिए।

□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2

# शिव-शक्ति रहस्य

सृष्टि के तीन आयाम हैं—उद्‌भव, विकास और समाप्ति। ब्रह्मा को सृजन का अधिपति माना गया है। वह सृष्टिकर्त्ता हैं। संसार में जो कुछ भी उत्पन्न होता है, वह सब ब्रह्मा का ही कृतित्व है, जबकि पालन-पोषण की व्यवस्था विष्णु के अधीन है। उत्पत्ति और पालन के पश्चात् तीसरा पक्ष समापन का होता है। सृष्टि के समापन की व्यवस्था करने वाली तीसरी ईश्वरीय शक्ति का नाम 'शिव' है। रोग, शोक और मृत्यु-तुल्य संकटों का निवारण करने वाले शिव हैं। समस्त देवताओं में अति शीघ्र प्रसन्न होने वाले देवता शिवजी हैं, इसलिए उनका एक नाम 'आशुतोष' भी है। अन्य देवताओं के चरित्र में कहीं-न-कहीं वैभव-विलास, सत्ता-लोभ और कूटनीति की झलक मिलती है, किन्तु शिवजी त्याग, सादगी, निस्पृहता एवं सरलता के साक्षात् स्वरूप हैं।

अन्य देवताओं ने जिसे तुच्छ अथवा असुविधाजनक मानकर अस्वीकार कर दिया, शिवजी ने उसी को परम प्रसन्न भाव से अपना लिया। जहां दूसरे देवता रम्य-पुरियों में, वैभव-विलास से युक्त भवनों एवं राजमहलों में निवास करते हैं, रक्ताम्बर धारण करते हैं, उनके आभूषण, पात्र, गृह-सज्जा, दास-दासी सब सुसज्जित, वैभव-प्रदर्शक और भौतिक सुख-सुविधा के पूरक हैं, वहीं शिवजी को इन बातों में कोई रुचि नहीं। वह भोलेनाथ हैं, औघड़दानी हैं, अवधूत हैं। वह परम विरागी, महान योगी और ईर्ष्या-द्वेष, रोग-शोक से सर्वदा असम्पृक्त रहते हुए, अपने भक्तों का कल्याण करते हैं। उन जैसा महादानी और कृपालु देवता कोई अन्य है? उदारता की सजीव प्रतिमा शिवजी त्रिकाल में, त्रिभुवन में, देवाधि-देव, सृष्टि के अंतिम आयाम (संहार) के नियामक और अखिल विश्व-ब्रह्माण्ड के प्रशासक हैं।

'गीता' में श्रीकृष्ण ने कहा है—*रुद्राणां शंकरश्चास्मि* अर्थात् परब्रह्म परमात्मा ही रुद्रों में शंकर हैं। शिव को ही शंकर कहते हैं। 'शिव' से तात्पर्य नित्य,



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञानानंदघन परमात्मा से है। शंकर का 'शं' आनंद का बोधक है और 'कर' करने वाले के लिए प्रयुक्त होता है, अर्थात् जो प्राणी को आनंद देने वाला है अथवा उसका आनंदस्वरूप है। वही शंकर अथवा शिव है।

शास्त्रों में शिव की महिमा अनंत बताई गई है, निर्गुण रूप में वही जगत के कर्त्ता, संहर्त्ता एवं पालनकर्त्ता हैं। भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए वह सगुण होते हैं। वेद, पुराण, महाभारत, रामायण तथा स्मृति आदि धर्मशास्त्रों में ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर की एकता का जगह-जगह प्रतिपादन किया गया है। इतना ही नहीं, शास्त्रों में उनको पातकी माना गया है जो इन तीनों में भेद बुद्धि रखते हैं।

**शिवद्रोही मम दास कहावा,**
**सो नर मोहिं सपनेहु न भावा।**

'मानस' की इन पंक्तियों में विष्णुजी ने शिवनिंदक को निंदनीय बताया है। वस्तुत: एक ही तत्त्व ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव के रूप में परिलक्षित होता है।

**स ब्रह्मा स विष्णु स रुद्रस्सऽशिवस्सोऽक्षरस्स यमः स्वराटम्।**

'कैवल्योपनिषद्' की इस पंक्ति से यह प्रमाणित है कि शिव सच्चिदानंदस्वरूप परब्रह्म हैं। वह सूक्ष्म-से-सूक्ष्म और स्थूल-से-स्थूल हैं। सारा जगत् उसी का रूप है। यह सृष्टि उसकी लीला है।

शंकर जन-जन के देवता हैं। उनकी भक्ति से ऋषि-मुनि, देव-दनुज, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर, मनुष्य, पितर, भूत-प्रेत, देवी, अप्सरा तथा सिद्ध आदि सभी को अभीष्ट फल की प्राप्ति हुई है। उनकी निष्काम पूजा से अंत:करण शुद्ध होकर व्यक्ति को ब्रह्मज्ञान की अनुभूति ही नहीं, उसकी प्राप्ति भी होती है।

सकाम पूजा से भक्त को भोग-ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। शिव आशुतोष हैं। वह थोड़ी-सी साधना से ही प्रसन्न होकर मुंहमांगा वरदान देते हैं। रोग निवारण तथा अकालमृत्यु से मुक्ति दिला देते हैं। ऐसे भोलेबाबा 'शिव' की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है।

'ऋग्वेद' के रुद्र, 'यजुर्वेद' के शिव (या शंकर), 'अथर्ववेद' के महादेव (या भव, शर्व), 'सामवेद' के रुद्र, 'वाल्मीकि' के महादेव, 'महाभारत' के महादेव और शंकर तथा 'शिवपुराण' के सदाशिव प्राचीनकाल से ही भक्तों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। भक्तों को अभीष्ट फल देना, उनके कष्ट दूर करना तथा उन्हें मुक्ति प्रदान करना भगवान शंकर के लिए सहज कार्य हैं। वह प्रसन्न होकर भक्त को सर्वस्व देने में भी संकोच नहीं करते।

भस्मासुर राक्षस की तपस्या से प्रसन्न होने पर शिवजी ने उसे यह वरदान दे



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया कि जिसके सिर पर तुम अपना हाथ रखोगे, वह भस्म हो जाएगा। कितनी उदारता तथा महानता का उदाहरण है, शिव भक्ति का! यह वरदान पाकर भस्मासुर शिव को ही भस्म करने के लिए दौड़ा तो उन्हें उससे छिपना पड़ा। असुर मां जगदम्बा के रूप-लावण्य पर आसक्त होकर वह इस कुमार्ग पर चला था। अतः भगवान विष्णु की सूझबूझ से, उसकी भस्म करने की शक्ति ने, उसे ही भस्मीभूत कर दिया। इस कथा में भगवान महादेव की असीम करुणा झलकती है। भक्तों के लिए उनका सर्वस्व देय होता है।

भूमंडल पर जितना शिव-पूजा का प्रचार है, उतना किसी अन्य देवता की पूजा का नहीं है। नगर-नगर, ग्राम-ग्राम, डगर-डगर में स्थापित शिव मंदिरों का यही रहस्य है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश—इन त्रिदेवों में शिव की महिमा 'देवी भागवत' में सबसे अधिक बताई गई है—

**स हि सर्वेश्वरो देवो विष्णोरपि च कारणम्।**

विश्व जब संकटग्रस्त हो जाता है, तो महादेव उसका निवारण करते हैं। सागर-मंथन के अवसर पर कालकूट विष को देखकर ब्रह्मा, विष्णु, देव, असुर तथा ऋषि-मुनि आदि सभी भयभीत हो गए। समस्त जगत् विष की गर्मी से संतप्त हो उठा। अंत में सबने आशुतोष भगवान शिव की शरण ली तथा उनकी स्तुति की। प्रसन्न होने पर उस विष को भूतभावन विश्वनाथ (महादेव) ने अपने कंठ में रख लिया, जिससे उनका कंठ नीला पड़ गया। फलतः वेद में 'नील-ग्रीव' नाम से उनकी प्रसिद्धि हो गई।

समस्त देव एवं मानव-समाज के कष्ट निवारण की इससे बड़ी मिसाल और क्या हो सकती है? वह सदा सबके कल्याण में प्रवृत्त रहते हैं। वह अमंगल ह्रास, सुख एवं मंगल का वर्धन करते हैं। इसीलिए उनका मंगलमय नाम 'शिव' लोक में कल्याण का वाचक बन गया है। अतः 'श्वेताश्वरोपनिषद्' में जन्म और मृत्यु के भय से मुक्ति पाने के लिए की गई प्रार्थना माननीय है—

**अजात् इत्येवं कश्चिद् भीरुः प्रपद्यते।**
**रुद्र यत्ते दक्षिण मुखं तेन पाहि नित्यम्॥**

अर्थात् हे रुद्र! आप अजन्मा हैं। जन्म-मरण के चक्र से मुक्त करना आपका स्वभाव है। यह समझकर जन्म-मृत्यु के भय से डरा हुआ साधक आपकी शरण लेता है। आपका जो कल्याण मुख है, उसके द्वारा जन्म-मृत्यु के भय से मेरी सर्वदा रक्षा करें।

रुद्र भगवान की महिमा का वर्णन 'रुद्रहृदयोपनिषद्' में इस प्रकार किया गया है—



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवा शिवात्मकाः।
रुद्रात्प्रवर्त्तते बीजं बीज योनिर्जनार्दनः॥
यो रुद्रः स स्वयं ब्रह्मा यो ब्रह्मा स हुताशनः।
ब्रह्मा विष्णुमयो रुद्र अग्नीषोमात्कं जगत्॥
रुद्रः सूर्य उमा छाया तस्मै तस्यै नमो नमः।
रुद्रो बह्निरुमा स्वाहा तस्मै तस्यै नमो नमः॥
रुद्रो वेदः स्मृतिश्चोमा तस्मै तस्यै नमो नमः।
रुद्रो यज्ञ उमा वेदिस्तस्मै तस्यै नमो नमः॥
रुद्रो नर उमा नारी तस्मै तस्यै नमो नमः।
श्रीरुद्र-रुद्र-रुद्रेति यस्तं ब्रूयाद् विचक्षणः॥
कीर्त्तनात्सर्वदेवस्य सर्वपापैः प्रमुच्यते।
ये रुद्रं नाभिजानन्ति ते न जानन्ति दैवतम्॥
सर्वदेवात्मकं रुद्रं नयस्कुर्यात्पृथक् पृथक्।
एभिर्मन्त्रपदैरेव नमस्यामीशपार्वतीम्॥

इन मंत्रों में भगवान शिव को ही मूल प्रकृति, पुरुषमय आदिदेव तथा साकार ब्रह्म बताया गया है। वेदविहित यज्ञपुरुष स्वयंभू महादेव हैं। वेद-स्मृति शिव-पार्वती का रूप है। यहां सर्वत्र उमाशंकर का ही दर्शन करने का उपदेश है। ऐसे द्रष्टा को सब पापों से मुक्ति मिल जाती है। अतः मां भगवती, जगदम्बा, पार्वती सहित भोलेनाथ का पूजन करने से भक्त को भुक्ति-मुक्ति दोनों ही प्राप्त होती है।

शिव-महिमा के विषय में 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' कहती है-

यदा तमस्तन्न दिवा न रात्रिर्नसन्न चासन्छिव एव केवलः।
तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा च तस्मात् प्रसृता पुराणी।

अर्थात् सृष्टि के प्रारंभ में जब केवल अंधकार ही था-न दिन था, न रात थी, न सत् (कारण) था, न असत् (कार्य) था; उस समय केवल एक निर्विकार शिव ही विद्यमान थे। वही अक्षर हैं, वही सबके जनक परमेश्वर का प्रार्थनीय रूप हैं तथा उन्हीं से शास्त्र विद्या का प्रर्वतन हुआ है। इस श्रुति में भगवान शिव को आदितत्त्व के रूप में वर्णित कर 'शिवपुराण' में प्रतिपादित सदाशिव के स्वरूप का समर्थन किया गया है। कल्याणकारी शिव प्रलय एवं संहार के भी देवता माने जाते हैं। उनके प्रलयंकारी स्वरूप का वर्णन भी शास्त्रों में मिलता है। उनका ताडंव नृत्य इसी महाविनाशलीला का अंग है। सृष्टि और प्रलय-दो अवश्यंभावी तत्त्व हैं। समस्त चराचर ब्रह्माण्ड को अपने में लीन कर वह नई सृष्टि का उपक्रम करते हैं।

वेद, पुराण, स्मृतियों तथा धर्मशास्त्रों में आशुतोष भगवान को ज्ञान, विज्ञान एवं भुक्ति-मुक्ति का देवता माना गया है। उनकी भक्ति से व्यक्ति को सब कुछ प्राप्त हो जाता है। 'शिवपुराण' के अनुसार भगवान के परिवार का अर्चन करने से



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त को सुदुर्लभ वस्तु भी प्राप्त हो जाती है। असाध्य रोगों, कष्टदायी ऋणों तथा भय-बाधा को हटाने के लिए भगवान शंकर की भक्ति सहज साध्य है। थोड़े जल-पुष्प अर्पित करने से भी वह प्रसन्न हो जाते हैं।

भगवान गणेश विघ्न-विनाशक हैं। उनका ध्यान-कार्य सिद्धिदायक है। मां जगदम्बा भगवती पार्वती, कुमार कार्तिकेय तथा नंदीगण के भजन-पूजन से अमोघ सिद्धियां भक्तजनों को मिली हैं। अतः 'शुक्लयजुर्वेद' की यह प्रार्थना *मे मनः शिवसंकल्पमस्तु* सदैव ध्यान रखने योग्य है। आज चारों ओर फैली अशांति को दूर करने के लिए शिवशरणागति में जाने का हमें संकल्प करना चाहिए।

शिव की आराधना के लिए जहां उनके विग्रह और प्रतीक की सही समझ होनी जरूरी है, वहीं यह भी आवश्यक है कि उस शिव के रहस्यमय निर्गुण स्वरूप को भी समझा जाए। इसी रहस्य से पर्दा उठाने के लिए हम यहां विचार कर रहे हैं कि शिवतत्त्व क्या है?

**शेते प्राणिनो यत्र स शिवः**

जीव अनंतानंत-पाप-ताप-संतापों से संत्रस्त होकर जहां परम विश्राम हेतु शयन करे, उस सर्वाधिष्ठान, सर्वाश्रय को ही शिव कहा गया है। इस संसार में कल्याण के लिए प्राणियों को उसी परम शिवतत्त्व की शरण में जाना चाहिए। शिवतत्त्व के दर्शन से परम शांति की प्राप्ति होती है। मनुष्य सभी प्रकार के अपने दुःख, कष्ट और रोग आदि को भूल जाता है। मृत्यु-भय का अहसास तक समाप्त हो जाता है।

श्री शिव के पूजन में कोई कठिनाई नहीं है। केवल पत्र, पुष्प, फल और जल आदि जो भी कुछ बन पड़े, उन्हें सच्चे मन से समर्पित कर अपने सभी शुभाशुभ कर्मों को, उन भूतभावन सदाशिव शंकर भोलेनाथ के चरणों में सौंप देने से प्रत्यक्ष शांति मिलती है। शिव के उपासक को समद्रष्टा होना चाहिए। ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण, दुर्गा—सबका आदर करते हुए, सब में परम शिवतत्त्व का दर्शन करना चाहिए। 'मुंडमाला तंत्र' में उल्लेख है—

**रुद्रस्य चिंतनादुद्रो विष्णुः स्याद्विष्णुचिंतनात्।**
**दुर्गायाश्चिन्तनाद्दुर्गा भवत्येव न संशयः॥**
**यथा शिवस्तथा दुर्गा या दुर्गा विष्णुरेव सः।**
**अत्र यः कुरूते भेदं स नरो मूढ दुर्मतिः॥**
**देवी विष्णु शिवादीनामेकत्वं परिचिंतयेत्।**
**मेदकृन्नरकं याति रौरवं नात्र संशयः॥**

श्रुति भी कहती हैं कि संसार में जो कुछ भी देखा, सुना और जाना जाता है, सब परम शिवतत्त्व है।

**सर्व देवात्मको रुद्रः सर्वे देवाः शिवात्मकाः।**
**रुद्रस्य दक्षिणे पार्श्वे रविर्ब्रह्मा पयोऽग्नयः॥**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**वामपार्श्वे उमादेवी विष्णुः सोमोऽपि ते त्रयः।**
**या उमा सा स्वयं विष्णुर्यो विष्णुः स हि चंद्रमा॥**
**ये नमस्यन्ति गोविन्दं ते नमस्यन्ति शंकरम्।**
**येऽर्चयन्ति हरि भक्त्या तेऽर्चयन्ति वृषध्वजम्॥**

वह परम शिवतत्त्व ही सर्वत्र समाया है। वही भजनीय तत्त्व है, वही माननीय शक्ति है, वही पूजनीय तत्त्व है, वही सगुण है, वही निर्गुण है, वही विश्वरूप है, वही पूर्ण चैतन्यस्वरूप और परम आत्मा है। भगवत्पाद भगवान आद्य *शंकराचार्यजी* महाराज कहते हैं–

**आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सदृचरा प्राणाः शरीरं गृहं।**
**पूजा ते विषयोपभोग रचना निद्रा समाधि स्थितिः॥**
**संचार, पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो।**
**यद्ययत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥**

भगवान शिव का पूजन करते-करते जीव शिव हो जाता है। वह राग, द्वेष, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुण्य, पाप, सुख, दुःख, बंधु, मित्र आदि की तेरे-मेरे की भावना से ऊपर उठकर स्वयं इनका साक्षी भूत बन जाता है; इस दृश्यमान जगत् का स्रष्टा बन जाता है। उस समय वह केवल सत्-चित्, आनंद रूप, स्वयं शिव रूप हो जाता है। किन्तु इस स्थिति के लिए बड़े धैर्य, अडिग विश्वास एवं दृढ़ श्रद्धा की आवश्यकता है। बिना श्रद्धा के उस परम शिवतत्त्व की प्राप्ति असंभव है। 'गीता' में कहा गया है–

**श्रद्धावांल्लभतेज्ञानम्** और **अज्ञश्चाश्रद्धाधानश्च संशयात्मा विनश्यति।**

अर्थात् अज्ञ, श्रद्धाविहीन और संशययुक्त व्यक्ति अविचल निष्ठा एवं दृढ़ विश्वास के अभाव में नाश को प्राप्त होता है। अतः शास्त्र वचनों में अखंड विश्वास रखते हुए जरा भी इधर-उधर विचलित हुए बिना अपना पिता, माता, बंधु, गुरु–सब कुछ उन्हीं को मानकर, उन्हीं की शरण में जाना चाहिए।

भगवती श्रुति कहती हैं–**तस्मै तस्यै नमो नमः** अर्थात् जो हृदय में परम शिवतत्त्व का सर्वत्र दर्शन करते हुए 'नमो नमः' कर सकते हैं, वे धन्य हैं। नमः का अर्थ है–न मम। जो लोग 'मेरा कुछ नहीं है, सब तुम्हारा है' कहते रहते हैं, वे ही उस परमतत्त्व शिव पद की प्राप्ति कर सकते हैं।

## ज्ञान के सृष्टिदाता

जगजननी भगवती शिवा और शिव ही समस्त सृष्टि के स्रष्टा हैं। इनकी कृपा से ब्रह्मादि देव आविर्भूत होकर आदेशानुसार सृष्टि, स्थिति और संहृति में प्रवृत्त होते हैं। अखिल ब्रह्मांडनायिका भगवती एवं अखिल ब्रह्मांडनायक भगवान शिव एक



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप होते हुए भी लोकानुग्रह के लिए द्विधा रूप ग्रहण करते हैं और दिव्य-दंपति के रूप में शब्दार्थमयी सृष्टि को भी विकसित करते हैं। यही ब्रह्मस्वरूप हैं, अतः निगम और आगम की सृष्टि भी इनके द्वारा ही हुई है।

ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव में कोई भेद नहीं है। लोक-बोध के लिए इनका पृथक्-पृथक् निरूपण किया गया है, किन्तु तत्त्वतः इनकी पृथकता नहीं है। वैसे यह भी स्पष्ट है कि इनके मूल में शक्ति ही आदितत्त्व है, जिसके द्वारा स्वेच्छा-विलास के लिए देवसृष्टि हुई है।

शास्त्रों के अनुसार ये आदिदम्पति लोक-कल्याण की उदार भावना से परस्पर संवाद रूप में, प्रश्नोत्तर रूप में कर्त्तव्य-कर्मों का चिंतन प्रस्तुत करते रहते हैं। इनकी अनंतरूपता के अनुसार ही अनंतशास्त्रों का उद्‌भव होता रहा है। यह आवश्यक भी है, क्योंकि यदि माता-पिता बालकों की शिक्षा-व्यवस्था न करें तो और कौन करेगा।

जब स्वयं ब्रह्मादि देव भी प्रादुर्भूत होने के पश्चात् अबोध की भांति *कोऽहं कुतः आयातः, का मे जननी को मे तातः* इत्यादि नहीं जान पाए तो उन्हें इन्होंने ही कृपापूर्वक ज्ञान दिया था।

**ते जन्मभाजः खलु जीवलोके ये वै सदा ध्यायन्ति विश्वनाथं।**
**वाणी गुणान् स्तौति कथां श्रृणोति श्रोत्रद्वयं ते भवमुत्तरन्ति।।**

अर्थात् जो सदा भगवान शिव का ध्यान करते हैं, जिनकी वाणी शिव के गुणों की स्तुति करती है और जिसके दोनों कान उनकी कथा सुनते हैं, इस जीव-जगत् में उन्हीं का जन्म लेना सफल है। वे निश्चय ही संसार-सागर से पार हो जाते हैं।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

3

# उपासना का महत्त्व

जन्म-मृत्यु का प्रश्न मनुष्य-जीवन में सबसे बड़ा है। इस बात को अच्छी तरह समझे बिना जीवन-यापन करना अंधेरे में चलने के समान है। प्रायः सुख, वैभव एवं विलास में जीने वाले लोग मृत्यु को भूल जाते हैं। उन्हें इस बात का ध्यान ही नहीं रहता कि एक दिन मृत्यु भी आनी है। मृत्यु के पास रहम नाम का कोई शब्द नहीं है। वह सभी को अपना ग्रास बना लेती है। अर्थात् जिसने इस संसार में जन्म लिया है, उसे एक-न-एक दिन मृत्यु का ग्रास अवश्य बनना है। यही जीवन-मृत्यु के प्रश्न का उत्तर है।

मृत्यु भी दो प्रकार की होती है—कालमृत्यु, अकालमृत्यु।

काल के महाकाल यमराज हैं। जीवन-मृत्यु का लेखा-जोखा रखने वाले चित्रगुप्त जैसे ही किसी मनुष्य का आयु-समय समाप्त होने के बारे में बताते हैं, यमराज उसे तत्काल अपने पाश में जकड़ लेते हैं। यह कालमृत्यु है। किन्तु रोग, दुर्घटना आदि के कारण जो मृत्यु होती है, वह अकालमृत्यु है। इसका लेखा-जोखा तुरत-फुरत चित्रगुप्त को करना होता है—

**सुप्तं व्याघ्रं महौघो वा मृत्युरादाय गच्छति।**
**संचिन्वानकमेवैनं कामानासवितृप्तकम्।।**

अर्थात् जैसे जल का वेग सोते हुए बाघ को बहाकर ले जाता है, वैसे ही काल नाना प्रकार के मनोरथ बांधते हुए कामनाओं से अतृप्त मनुष्य को घसीट ले जाता है।

किन्तु श्री शिवशंकर भोलेनाथ महाकाल धर्मराज (यमराज) के पाश से किसी भी व्यक्ति का जीवन छुड़ाने में पूर्णतया समर्थ हैं। वे अपने भक्तों को काल के गाल में जाने से बचाते हैं। दुर्गति से बचाकर सुगति प्रदान करते हैं तथा अल्पायु को दीर्घायु बनाते हैं। इतना ही नहीं, वे अमरता प्रदान करने में भी समर्थ हैं। फिर



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोटे-मोटे रोगों से बचाने की तो बात ही क्या है? इसलिए वे मृत्युंजय हैं, अमृतेश्वर हैं। श्री शिव की जटा में जो चंद्रकला है, वही अमृतकला है। वे अपने भक्त को उसी के द्वारा अजर-अमर बनाते हैं। महामृत्युंजय शिव षट्भुज हैं और उन भुजाओं में से चार में अमृत-कलश लिए हुए हैं। इससे प्रतीत होता है कि वे अमृत से ही स्नान करते हैं, अमृत का ही पान करते हैं और अमृत ही भक्तों को पिलाकर उन्हें अमर बनाते हैं।

आयुर्वेदाचार्यों के अनुसार, पंचतत्वों—पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश में से किसी एक के कुपित हो जाने पर अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति हो जाती है। इन पंचतत्त्वों के कोप से उत्पन्न होने वाले विकारों का उल्लेख चरक तथा *सुश्रुत* ने बहुत ही विस्तार से किया है। साथ ही उन्होंने औषधिरूप लौकिक उपायों के अतिरिक्त रोगों के निवारणार्थ देवताओं की उपासना का भी मुख्य रूप से निर्देश किया है।

किस रोग की निवृत्ति के लिए किस देवता की उपासना की जाए?

यह विषय बहुत गंभीर है तथा विभिन्न ग्रंथों में आचार्यों ने इन बातों का काफी विस्तार से उल्लेख किया है। पुराणों में ऐसे सैकड़ों दृष्टांत (उदाहरण) भी प्राप्त होते हैं कि किस रोग की निवृत्ति के लिए किसने कौन-सी उपासना की।

जैसे वायु-प्रकोप की शांति के लिए सूर्य देवता की आराधना, कुष्ठ रोग की निवृत्ति के लिए सूर्य-वायुतत्त्वाधिपति की साधना एवं जल-संबंधी प्रकोप से बचाव के लिए गणपति की उपासना की जाती है। यह स्मरणीय है कि आकाशतत्त्व के स्वामी विष्णु हैं, अग्नि-तेजस् तत्त्व की स्वामिनी भगवती दुर्गा हैं, वायुतत्त्व के स्वामी सूर्य हैं, पृथ्वीतत्त्व के अधिपति शिव हैं तथा जलतत्त्व के स्वामी गणपति हैं। इसी आधार पर पंच-तत्त्वों के कोप से उत्पन्न रोगों की शांति के लिए तत्त्वाधिपति की उपासना का आदेश दिया गया है।

मनुष्यों की प्रकृति पांच प्रकार की है, जिससे पंचभूतात्मक सृष्टि का निरूपण होता है। प्रकृति के वशीभूत होने से, यद्यपि प्राणियों की प्रकृति भिन्न-भिन्न हैं, तथापि पंचतत्त्वों के अनुसार प्रत्येक तत्त्व का विचार करके विधिपूर्वक उपासना-आराधना के अधिकार का वर्णन तत्त्वज्ञों ने किया है। इस दृष्टि से भी सभी प्रकार के रोगों की शांति के लिए देवोपासना का विधान स्पष्ट है। तभी तो कुष्ठ रोग की निवृत्ति के लिए कवि *मयूर* ने 'सूर्यशतक' का निर्माण कर, सूर्योपासना से अपने रोग की निवृत्ति की।

*वाणभट्ट* ने 'चंडीशतक' की रचना करके भगवती चंडिका की उपासना से अपने शाप का निवर्तन किया। *गोस्वामी तुलसीदास* ने 'हनुमान-बाहुक' की रचना



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से हनुमद् उपासना करके बाहु में उत्पन्न रोग की निवृत्ति की। इन्हीं का 'हनुमान चालीसा'–*नासै रोग मिटै सब पीरा* की घोषणा, उपासना के लिए सभी को प्रेरित करता है।

वेदों से लेकर आधुनिक साहित्य तक के विशाल वाग्ङ्मय में विभिन्न रोगों से निवृत्ति पाने के लिए तंत्र-मंत्र-यंत्र, अभिषेक, भस्म, औषधि, तप और जपादि के विधान दिए गए हैं। इन सब में उपासना का महत्त्व ही सर्वोपरि है। उपासना से मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार की चिकित्सा हो जाती है।

जिस प्रकार शारीरिक रोगों की निवृत्ति के लिए उपासना आवश्यक है, उसी प्रकार मानसिक रोग का निवारण महामृत्युंजय मंत्र की साधना से शीघ्र हो जाता है। साथ ही सर्व प्रकार के सांसारिक कष्टों से मुक्ति मिल जाती है। महामृत्युंजय मंत्र की महिमा के बारे में आचार्यों का कहना है कि इस मंत्र का प्रतिदिन जप करने वाले मनुष्य के सभी प्रकार के रोग बिना औषधि के ही नष्ट हो जाते हैं तथा वह दीर्घायु प्राप्त करता है।

□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# 4

# शिव पूजन विधान [?]

अकालमृत्यु निवारणार्थ सर्वोत्तम साधन 'महामृत्युंजय [?] विधान' है। दुर्घटना, रोग, अपघात, मानसिक चिंताओं [?] से मुक्त होने एवं पूर्णायु प्राप्त करने के लिए महामृत्युंजय [?] मंत्र के विधान की संपूर्णता को पहुंचना बहुत आवश्यक [?] है। किन्तु इस विधान से पहले श्री शिव की दशोपचार [?] और पंचोपचार पूजा की जानी आवश्यक है। यह पूजा [?] महामृत्युंजय मंत्र–जप क्रिया का प्रथम सोपान है।

## दशोपचार और पंचोपचार पूजा

भगवान शिव की पूजा–आराधना में सोलह संस्कार किए जाते हैं, जिनका एक [?] निश्चित क्रम और विधान है। पंचोपचार का अभिप्राय है, पांच प्रकार से पूजा करना [?] और दशोपचार का अर्थ है, दस चरणों में पूर्ण की जाने वाली पूजा।

पंचोपचार पूजा में भगवान शंकर के प्रतीक शिवलिंग पर जल चढ़ाने के बाद [?] उन्हें चंदन का तिलक और भस्म लगाने का कार्य किया जाता है। इसके बाद [?] भगवान को पुष्प माला और पुष्प अर्पित किए जाते हैं तथा धूप–दीप जलाकर [?] आरती उतारने की प्रक्रिया की जाती है। आरती के बाद भगवान को फलों आदि का [?] नैवेद्य भी अर्पित किया जाता है। अन्य देवों के विपरीत शिवलिंग पर अर्पित इस [?] नैवेद्य को प्रसाद के रूप में बांटा या खाया नहीं जाता। उसे मंदिर में ही छोड़ दिया [?] जाता है अथवा किसी नदी या सरोवर में विसर्जित कर दिया जाता है।

पंचोपचार पूजा का अगला चरण है, दशोपचार पूजा। इसमें उपरोक्त पांच कृत्यों के पूर्व भगवान शिव के चरण पखारने, उन्हें अर्घ्य समर्पित करने तथा आचमन हेतु जल प्रदान करने के भी कार्य किए जाते हैं। इसके साथ ही भगवान को स्नान कराने के पश्चात् वस्त्र अथवा कलावा (मौली) का टुकड़ा अर्पित किया जाता है।

यहां ध्यान देने की मुख्य बात यह है कि भगवान को उक्त वस्तुएं समर्पित



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करते समय कुछ निश्चित मंत्रों का भी विधान है। उपासना और आराधना के सोलह उपचार अर्थात् चरणबद्ध रूप से सोलह प्रक्रियाएं हैं। उनमें से जब हम दस क्रियाएं पूर्ण करते हैं तो वह दशोपचार पूजा कहलाती है जबकि पंचोपचार पूजा केवल पांच प्रक्रियाओं से पूर्ण कर ली जाती है। इन प्रक्रियाओं में भी उन्हीं मंत्रों का स्तवन किया जाता है, जिनका षोडशोपचार आराधना और मानसिक उपासना में होता है।

मंत्रों को कंठस्थ करने के बाद भाव सहित अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रत्येक वस्तु के समर्पण के समय मन–ही–मन अथवा अत्यंत मंद स्वर में लयबद्ध रूप से उन मंत्रों को पढ़ना चाहिए। मंत्रों का विवरण आगे दिया जाएगा। पहले हम यहां षोडशोपचार पूजा के बारे में बताते हैं।

## षोडशोपचार पूजा पद्धति

षोडशोपचार पूजा/आराधना में सभी लौकिक उपादानों और भगवान शिव के विग्रह का उपयोग किया जाता है किन्तु सीधे ही मूर्ति, लिंग अथवा विग्रहादि की पूजा प्रारम्भ नहीं कर दी जाती। सर्वप्रथम उपास्यदेव भगवान शिव का ध्यान किया जाता है। इस समय शिवजी का आह्वान करके उन्हें आसन तो समर्पित किया ही जाता है, स्नान में पंचामृत–दूध, दही, शहद, चीनी, घृत तथा गंगाजल आदि का प्रयोग भी किया जाता है। स्नान कराने और वस्त्र समर्पण के पश्चात् उन्हें यज्ञोपवीत एवं आभूषण समर्पित किए जाते हैं। तिलक में भस्म और चंदन के साथ–साथ केशर–कुंकुम आदि का भी प्रयोग होता है।

धूप, दीप और नैवेद्य के बाद तांबूल, पुंगीफल, पान–सुपारी तथा दक्षिणा भी समर्पित की जाती है। साथ ही आरती एवं प्रदक्षिणा भी की जाती है। प्रदक्षिणा के पश्चात् शिव को पुष्पांजलि तो अर्पित की ही जाती है; नमस्कार, स्तुति, राजोपचार, क्षमापन और समर्पण के मंत्रों का स्तवन भी किया जाता है।

पूजा के अंत में कुछ साधक (भक्त) शिवजी के भजनों, विनतियों और आरतियों का गायन करते हैं, जबकि अधिकांश भक्त शिव सहस्रनाम, शिव अष्टोत्तर शतनाम अथवा किसी अष्टक या कवच का पाठ एवं शिवजी के किसी मंत्र का जप करते हैं। इन सभी कार्यों का क्रम इस प्रकार है–

1. ध्यान एवं आह्वान
2. आसन
3. पाद्य
4. अर्घ्य
5. आचमन



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6. स्नान (दूध, दही, घृत, मधु, शक्कर आदि से) एवं जल-अभिषेक
7. वस्त्र
8. यज्ञोपवीत व आभूषण
9. गंध (चंदन, केशर, कुंकुमादि व अक्षत)
10. पुष्प समर्पण, अंग-पूजा और अर्चना
11. धूप
12. दीप
13. नैवेद्य, फल
14. तांबूल, दक्षिणा, नीरांजन, जल-आरती आदि
15. प्रदक्षिणा
16. पुष्पांजलि, नमस्कार, स्तुति, राजोपचार, जप, क्षमापन, विशेषार्घ्य और समर्पण

## उपासना की प्रक्रिया

शिव उपासना करते समय कोई लौकिक वस्तु तो क्या मूर्ति अथवा विग्रह क प्रयोग भी अनिवार्य नहीं है। वस्तुतः पूजा में मुख्य महत्त्व मूर्ति की सेवा-पूजा ए उसे विविध वस्तुओं के अर्पण का होता है, जबकि आराधना में मंत्रों और वस्तुअ को समान महत्त्व प्राप्त है। किन्तु उपासना करते समय न तो हम मूर्ति अथवा विग्र का प्रयोग करते हैं और न ही किसी अन्य उपादान का। इसमें केवल संबंधित मंत्र का स्तवन किया जाता है और वह भी मन-ही-मन।

उपासना मंदिर अथवा सार्वजनिक स्थान पर बैठकर नहीं की जा सकती औ न ही यह सामूहिक रूप में संभव है। तपस्या के समान मन को एक स्थान प एकाग्र करके एकांत व शांत स्थान में की जाने वाली क्रिया ही उपासना है। सच्चे मन से की गई उपासना शीघ्र फलदायी तथा सभी रोग-कष्टों को दूर करने वाल होती है।

पूजा, आराधना और उपासना के उपर्युक्त चारों रूप एक-दूसरे के पूरक हैं प्रायः जब हम दूसरे चरण में प्रवेश कर जाते हैं, तो पहले चरण को छोड़ देते हैं किन्तु जप, तप और स्तुति आदि की प्रक्रियाएं उपासना में सहायक तत्त्वों का का करती हैं। जहां तक तप अर्थात् तपस्या का प्रश्न है, वह पूर्णतः कायाकष्ट प आधारित अत्यंत कठिन मार्ग है, जिस पर साधारण घर-गृहस्थी वाले का चल पान नितांत असंभव है।

तपस्या अथवा तप का सरल और सूक्ष्म रूप जप है। अर्थात् किसी मंत्र अथव



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान के किसी नाम का मन-ही-मन सतत् स्तवन जप कहलाता है। वैसे जब किसी मंत्र का हजारों की संख्या में नित्य जप किया जाता है अथवा भगवान के नाम का मन-ही-मन एक स्थान पर बैठकर घंटों तक स्मरण किया जाता है, तो वह जप कहलाता है। जप प्रभु-चरणों में मन को एकाग्र करके की जाने वाली क्रिया है। जप के समय प्रतिमा, विग्रह या चित्र की कोई आवश्यकता नहीं होती। प्राय: आंखों को मूंदकर जप-क्रिया की जाती है। एक विशेष बात यह है कि भगवान शिव के निमित्त कोई हवन नहीं किया जाता तथा यज्ञादि में भी उनके नाम की आहुति नहीं दी जाती।

जप-तप, भजन-कीर्तन, मूर्ति-पूजा, तीर्थाटन और दान आदि क्रियाएं ईश्वर-भक्ति में सहायक तो हैं, किन्तु ये ईश्वर-प्राप्ति का पूर्ण मार्ग नहीं हैं। शिव के चरणों में तभी स्थान पा सकते हैं, जब हम सच्चे हृदय से उनकी उपासना-आराधना करें।

यह संपूर्ण ब्रह्मांड आशुतोष भगवान शिव की कृपा से उत्पन्न है। कण-कण में भोले बाबा का ही वास है। जल, थल, नभ में वह कौन-सा स्थान है, जहां भगवान शिव अपने अंश रूप में विराजमान न हों। यही कारण है कि एक सिद्ध साधक और सच्चा उपासक अपने आराध्यदेव के दर्शन एवं सान्निध्य हेतु किसी प्रतिमा अथवा चित्र का मोहताज नहीं होता। किन्तु पर्याप्त साधना के पश्चात् शिवजी की विशेष कृपा के रूप में ही दिव्य शक्ति मिल जाती है। भगवान शिव को प्रतिपल अपने निकट महसूस करना, अपने सभी कार्यों को आशुतोष की आज्ञा मानकर पूर्ण करना और उनसे प्राप्त सभी प्रकार के शुभाशुभ फलों को प्रसाद के समान ग्रहण करना उपासना का वास्तविक रूप है।

एक-एक सीढ़ी चढ़कर ही हम अंतिम सीढ़ी तक पहुंच सकते हैं, जबकि छलांग लगाकर अंतिम सीढ़ी तक पहुंचने की चेष्टा करने वाला व्यक्ति गिर पड़ता है। ठीक यही स्थिति मानसिक उपासना, यंत्र-मंत्र सिद्धि, तंत्र साधना और निराकार ब्रह्म के चिंतन-मनन की है। साधना की उच्च स्तरीय प्रक्रियाएं हैं, मानसिक उपासना और तंत्र साधना । मानसिक उपासना के उस स्तर तक पहुंचने के लिए हमें इस कार्य का प्रारंभ शिवालय में जाकर शिवलिंग पर जल चढ़ाने से ही करना होगा। निरंतर शिवालय में जाने, शिवलिंग अथवा शिवमूर्ति दर्शन-पूजन से धर्म के प्रति आस्था और निष्ठा बढ़ती है। यही उपासना की मंजिल तक पहुंचने के मार्ग हैं।

उपासना शब्द संस्कृत भाषा के तीन शब्दों-उप+अस+नम के योग से बना है। महर्षियों एवं विद्वानों ने इस शब्द की परिभाषा देते हुए कहा है-*उपगम्य असनम्-इति उपासना* अर्थात् समीप जाकर बैठने को 'उपासना' कहा जाता है। यहां समीप बैठना



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैध इष्ट होने से यह शब्द परिचर्या व पूजा के अर्थ में पर्यवसित हो जाता है। भाषा-विज्ञान के प्रमुख प्राचीन ग्रंथ 'अमरकोष' में उपासना शब्द की व्याख्या निम्न प्रकार की गई है–

पूजा नमस्या पचितिः सपर्याचर्हणाः समाः।
वरिवस्या तु शुश्रुषा परिचर्याप्युपासना॥

'ऋग्वेद' में उपासना शब्द का प्रयोग पूजा, सेवा, उपस्थित होना, सामने प्रस्तुत रहना आदि अर्थों में हुआ है। 'आपस्तंबधर्म सूत्र' में उपासना का अर्थ सेवा है तो 'गौतमधर्म सूत्र' में इसका अभिप्राय प्रणाम करना है। कुछ अन्य ग्रंथों में उपासना शब्द 'सहवासार्थक' अर्थात् साथ रहना के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के समय 'गीता' में अर्जुन को उपासना का तात्पर्य आराध्य देवता की सेवा और भक्ति बतलाया है, जबकि महर्षि वाल्मीकि ने अपनी 'रामायण' में ईश्वर के ध्यान और हर समय समीप समझने की भावना को उपासना का नाम दिया है। 'श्रीमद्भागवत' में उपासना का विवेचन करते हुए स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पूर्ण भक्ति-भाव से अपने इष्ट की सेवा करना और निरंतर ध्यान द्वारा हर समय इष्टदेव को अपने निकट समझना ही उपासना है। संभवतः उपासना की यही सबसे अधिक सटीक परिभाषा है।

वैसे उपरोक्त सभी परिभाषाएं एक ही अभिप्राय प्रकट करती हैं। वह यह कि जिस किसी भी विधि से अपने इष्टदेव की प्रसन्नता के लिए जो भी किया जाए, वही उपासना है। इस प्रकार इष्टदेव का ध्यान, प्रणाम, नमस्कार, पूजा, जप, होम, भक्ति, दास्य, साख्य, सामीप्य, सेवा-शूश्रुषा, परिचर्या, आराधना, चिंतन, मनन आदि सभी क्रियाएं उपासना के अंतर्गत आती हैं। जो व्यक्ति अपने सभी कार्य ईश्वर को अर्पण कर, निष्काम भाव से कर्म करता है और अपना मन परमात्मा में लगाए रखता है, उसकी सभी क्रियाएं उपासना ही हैं। संसार-व्यवहार में प्रवण होने के कारण जिस व्यक्ति का मन अत्यंत चंचल अथवा विषय-प्रवृत्त से अशांत हो, उसे उपासना अवश्य करनी चाहिए।

## स्वस्तिवाचन

भगवान शिव थोड़ी-सी आराधना-उपासना से प्रसन्न हो जाने वाले देव हैं। उपासक की सभी लौकिक कामनाओं की आपूर्ति करने और अंत में मोक्ष प्रदान करने वाले औघड़दानी महादेव ही हैं। श्री शिव की उपासना शुद्ध एवं पवित्र स्थान पर बैठकर करनी चाहिए। उससे पहले सभी देवताओं को नमस्कार कर उनकी कृपाओं एवं शांति के लिए निम्नलिखित प्रार्थना करनी चाहिए–



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु॥ 1॥
ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ 2॥
ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि।
विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि वैष्णवेत्वा॥ 3॥
ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चंद्रमा देवता वसवो
देवता रुद्रो देवताऽऽदित्यो देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता
वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥ 4॥
ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्षं शांतिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शांतिः
वनस्पतयः शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्व ॐ शांतिः
शांतिरेवशांतिः सामा शांतिरेधि॥ 5॥
ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव॥ 6॥
शांतिः शांतिः शांतिर्भवतु॥

स्वस्तिवाचन के रूप में उपरोक्त पांच मंत्रों का स्तवन आराधना, उपासना एवं तंत्र साधना का प्रथम चरण तो है ही, सबसे महत्त्वपूर्ण क्रिया भी है। इस स्वस्तिवाचन में सभी देवताओं की आराधना आ जाती है। इसके बाद निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए जल से आचमन करें तथा अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़कें। तत्पश्चात् दोनों हाथों को शुद्ध जल से धो लें।

ॐ केशवाय नमः स्वाहा।
ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।
ॐ माधवाय नमः स्वाहा।

## पवित्रीकरण एवं भूतशुद्धि

स्नानादि से निवृत्त होकर और स्वच्छ वस्त्र पहनकर, पवित्रीकरण के लिए निम्न मंत्र का जप करें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार जल छिड़कें और आचमन करें। हाथ धोने के उपरांत निम्न मंत्र का जप करते हुए भूतशुद्धि करें–

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

आराध्यदेव भगवान शिव की मूर्ति अथवा शिवलिंग सम्मुख रखकर, आराधना



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करते समय ही पूजन–सामग्री का प्रयोग किया जाता है। लेकिन मानसिक उपासना के दौरान कोई लौकिक वस्तु पास नहीं होती। अतः भूतशुद्धि के बाद श्री गणेशजी का ध्यान करते समय केवल मंत्रों का उच्चारण करना चाहिए।

## श्रीगणेश का ध्यान मंत्र

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥

## संकल्प करना

यह आराध्यदेव को दिया जाने वाला स्वयं का परिचय है। निम्न वाक्यों द्वारा संकल्प लिया जाता है–

हरिः ॐ तत्सत्। ॐ नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जंबूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे सृष्टिसंवत्सराणां मध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' वासरे, 'अमुक' राशिस्थे, सूर्ये, चंद्रे, भौमे, बुध, वृहस्पतौ, शुक्रे, शनौ, राहो, केतौ एवं गुण विशिष्टायां तिथौ, 'अमुक' गोत्रोत्पन्न, 'अमुक' नाम्नि ( शर्मा–वर्मा आदि ) ऽहं धर्मार्थकाममोक्षहेतवे श्रीगणपत्यादि सह भगवान शिव पूजनं करिष्ये।

उपरोक्त संकल्प में जहां–जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां क्रमशः विद्यमान संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिए। ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', वैश्य को 'गुप्तोऽहं' तथा शूद्र को 'दासोऽहं' शब्द का उच्चारण नाम के साथ करना चाहिए।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गणेश भगवान शंकर के पुत्र हैं तो मातेश्वरी पार्वती उनकी भार्या हैं। नंदी वाहन और वीरभद्र प्रमुख गण हैं। यही कारण है कि श्री शिव की पूजा-आराधना से पहले इनका ध्यान किया जाता है। निम्न मंत्र से श्री गणेशजी का पूजन करना चाहिए–

**आवाह्यामि पूर्जार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।**
**इहागत्य गृहाण त्वं पूजायागं च रक्ष मे।।**

पूजन के पश्चात् निम्न मंत्र से प्रार्थना की जानी चाहिए–

**लंबोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।**
**निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।**

इसके बाद पार्वतीजी का ध्यान करके, निम्न मंत्र से उनका पूजन करें–

**हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।**
**लंबोदरस्य जननीं गौरीमावाह्याम्यहम्।।**

अब देवी की प्रार्थना करें–

**ॐ अंबे अंबिके अंबालिके न मा नयति कश्चन।**
**ससस्त्शवकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम्।।**

भगवान शिव का प्रिय वाहन नादिया (नंदी 'नंदीश्वर') मात्र उनका वाहन ही नहीं, उनका प्रिय सेवक और प्रमुख गण भी है। शिवजी को नंदी इतना प्रिय है कि उनके पूजा-स्थल के समीप नंदी भी उपस्थित रहते हैं। इसी कारण शिव-पार्वती के पूजन के बाद नंदी का पूजन अनिवार्य है। निम्न मंत्र से नंदीश्वर का पूजन करना चाहिए–

**आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।**
**पितरं च प्रयन्त्स्वः।।**

नंदी-पूजन के बाद उनसे यह प्रार्थना करनी चाहिए–

**प्रैतु वाजी कनिकदन्नानदद्रासभः पत्वा।**
**भरन्नरिम्पुरीष्यं मा पाद्ययुषः पुरा।।**

नंदीश्वर-पूजन के पश्चात् शिवजी के प्रमुख गण वीरभद्र का पूजन निम्न मंत्र के साथ किया जाता है–

**भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।**
**स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु।।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूजन के पश्चात् निम्नलिखित प्रार्थना करें–

**भद्रो नो अग्निराहुतो भद्राः**
**सुभग भद्रो अध्वरः।**
**भद्रा उत प्रशस्तयाः॥**

मयूर की सवारी करने वाले भगवान कार्तिकेयजी मातेश्वरी पार्वती और शिवजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। अतः यह नहीं हो सकता कि शास्त्रोक्त विधि–विधानपूर्वक शिवजी की आराधना–उपासना करते समय कार्तिकेयजी का ध्यान–पूजन न किया जाए। इसके साथ ही धन–धान्य के स्वामी कुबेर और कीर्तिमुख देवों का पूजन भी शिवाराधना का एक अविभाज्य अंग है। कार्तिकेय का पूजन निम्न मंत्र के जप के साथ करना चाहिए–

**यदक्रंदः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।**
**श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहु उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥**

तत्पश्चात् कीर्तिकेयजी की प्रार्थना करें–

**यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिका इव।**
**तत्र इंद्रो वृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु विश्वाहा शर्मयच्छतु॥**

अब निम्नलिखित मंत्र से कुबेर का ध्यान–पूजन करें–

**कुविदंग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनुपूर्व वियूय।**
**इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं भजंति॥**

प्रार्थना का मंत्र निम्नांकित है–

**वयम् सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः।**
**प्रजावन्तः सचेमहि॥**

कुबेर के पश्चात् कीर्तिमुख का पूजन किया जाता है। इसका कारण यह है कि शिवजी की आराधना में उनके परिवार के सदस्यों और गणों का पूजन सम्मिलित है। तत्पश्चात् शिवाराधना का प्रारंभ होता है। उपरोक्त प्रक्रिया में, अंतिम पूजन कीर्तिमुख का होता है। इसमें सभी देवों के नाम के साथ 'स्वाहा' शब्द जोड़कर, उन्हें भावनात्मक रूप से आहुतियां प्रदान की जाती हैं–

**असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणिश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा विमुखे स्वाहा अधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स ग्वं सर्पाय स्वाहा चंद्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतये स्वाहा।**

उपरोक्त स्तवन के पश्चात् निम्नलिखित प्रार्थना करें–

**ओजश्च मे सहश्च मे आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽगांनि**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**च मेऽस्थीनि च मे परुग्वंषि च मे शरीराणि च मे आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।**

अब शिवजी के किसी भी रूप को मन में बसाकर, निम्न मंत्रों के स्तवन द्वारा उनका ध्यान करें–

**ध्यायेन्नित्यं सुरेशंगतिमतिदं योगकाधारमेक-**
**माद्यंतादिप्रभावं निगमजनिजुषां ध्यानधारावगम्यम्।**
**सोमं सोढारमीशंधरणिसुरवर यांचया शंकररतं-**
**भवत्युद्रेकाय वर्ग कलयति विदुषां यत्कृपा तंहिशंभुम्।। 1।।**
**वंधूकसन्निभन्देवम् त्रिनेत्रम् चंद्रशेखरम्।**
**त्रिशूलधारिणन्देव चारुहासं सुनिर्मलम्।। 2।।**
**कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम्।**
**उमयासहितं शंभुन्ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा।। 3।।**
**सानन्द मानन्दवनेवसंत मानन्दकन्दंतपपापवृन्दम्।**
**वाराणसीनाथमनाथनाथं श्री विश्वनाथं शरण प्रपद्ये।। 4।।**
**ॐ नमः शंभवायच मयोभवाय च नमः,**
**शंकराय च नमः मयस्कराय च नमः।**
**शिवाय च शिवतराय च शिवाय नमः।। 5।।**

ध्यान मंत्र के उच्चारण के बाद निम्न आह्वान मंत्र का जप करें–

**आयाहि भगवन् शंभो शर्व्वत्वं गिरिजापते।**
**प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं हि शंकर।।**

आह्वान के पश्चात् शिवजी को आसन प्रदान करने के लिए निम्न मंत्र का जप करें–

**विश्वेश्वरमहादेव राजराजेश्वरप्रिय।**
**आसनन्दिव्यमीशान दास्येऽहन्तुभ्यमीश्वरम्।।**

शिव पूजा का कृत्य प्रत्यक्ष अर्थात् वास्तविकता से परिपूर्ण होता है जबकि उपासना का कृत्य भावनात्मक है, जिसे कल्पना में करना होता है। उदाहरण के लिए, यदि आप जल द्वारा भगवान के चरण पखार रहे हैं, तो यह कृत्य प्रत्यक्ष है। यदि कल्पना कर रहे हैं कि आपके हाथ में शीतल जल का पात्र है, जिससे आप भगवान के चरण पखार रहे हैं, तो यह कृत्य भावनात्मक कहलाता है। निम्न श्लोक का जप करते हुए यह कल्पना करें कि आप भगवान के चरण पखार रहे हैं–

**महादेव महेशान महादेव परात्पर।**
**पाद्यं गृहाणमद्दत्तं पार्वतिसहितेश्वर।।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब कल्पना करें कि आप शिवजी को अर्घ्य दे रहे हैं। शिवजी दोनों हाथों की अंजली से अर्घ्य ग्रहण कर रहे हैं। अर्घ्य अर्पण का मंत्र निम्न है–

त्र्यम्बकेश सदाचार जगदादिविधायक।
अर्घ्यं गृहाण देवेश साम्बसर्वार्थदायक।।

आगे के सभी कार्य कल्पनाओं में करते हुए मंत्र का जप मन–ही–मन करते रहें। आचमन हेतु जल प्रदान करने का मंत्र यह है–

त्रिपुरान्तक दीनार्तिहर श्रीकण्ठ शाश्वत।
गृहाणाचमनीयं च पवित्रोदक कल्पितम्।।

भगवान शिव को क्रमशः गोदुग्ध, दही, घी, शहद, शर्बत और गंगाजल आदि से स्नान कराने का विधान है। यह विधान मंत्र का जप करते हुए, कल्पनाओं में करना चाहिए। सर्वप्रथम दूध से स्नान कराया जाता है, जिसका मंत्र निम्नलिखित है–

मधुरं गोपयः पुण्यं पटपूतं पुरस्कृतम्।
स्नानार्थं देवदेवेश गृहाण प्रतिगृह्यताम्।।

अब दही से स्नान कराएं। इसका मंत्र है–

दुर्लभन्दिविसुस्वादु दधिसर्वप्रियम्परम्।
तुष्टिदम्पार्वतीनाथ स्नानाय प्रतिगृह्यताम्।।

घी से स्नान कराने का मंत्र इस प्रकार है–

घृतं गव्यं शुचिस्निग्धं सुसेव्यं पुष्टिदायकम्।
गृहाण गिरिजानाथ स्नानाय चंद्रशेखर।।

तत्पश्चात् मधु (शहद) से स्नान कराएं, जिसका मंत्र निम्न है–

मधुर मृदु मोहघ्नं स्वरभंग विनाशनम्।
महादेवे दुमुत्सृष्टं तवस्नानाय शंकर।।

अब निम्न मंत्र द्वारा शर्करा से स्नान कराएं–

तापशांतिकारी शीरा मधुरास्वाद संयुता।
स्नानार्थं देवदेवेश शर्करेयं प्रदीयते।।

शुद्धजल से स्नान कराने का मंत्र यह है–

गंगा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।
सरस्वत्यादि तीर्थानि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

वस्त्राभूषण समर्पित करने का मंत्र निम्नलिखित है–

वस्त्राणि पट्टकूलानि विचित्राणि नवानि च।
मयानीतानि देवेश प्रसन्नोभव शंकर।।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानसिक उपासना के दौरान आप देवताओं द्वारा लाए हुए दिव्य वस्त्र और आभूषण आदि भगवान को कल्पना में समर्पित करते हैं। किन्तु आराधना करते समय प्रतिमा पर लौकिक वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है। यदि प्रतिमा के स्थान पर शिवलिंग हो तो उस पर केवल कलावा चढ़ा दिया जाता है। इसी प्रकार जनेऊ (यज्ञोपवीत) के स्थान पर भी कलावा का प्रयोग किया जाता है, इस मंत्र के जप के साथ–

**सौवर्णं राजतं ताम्रं कार्पासस्य तथैव च।**
**उपवीतम्मया दत्तं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।**

गंध समर्पण का मंत्र इस प्रकार है–

**सर्वेश्वर जगद्वन्द्य दिव्यासन समास्थित।**
**गंधं गृहाण देवेश चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।**

तीनों लोक के पालनकर्त्ता और संपूर्ण शक्तियों व सिद्धियों के स्वामी होने के बावजूद शिवजी आभूषणों के रूप में नाग तथा वस्त्र के रूप में बाघांबर धारण करते हैं। यही कारण है कि जहां अन्य देवी–देवताओं को अनेक बहुमूल्य वस्त्राभूषण अर्पित किए जाते हैं, वहीं भोले बाबा को भस्मादि अर्पित किया जाता है। निम्न मंत्र द्वारा भावलोक में भस्म का अर्पण करें–

**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।**
**यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।।**

अक्षत अर्पण करने का मंत्र है–

**अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ शुभ्राधूनाश्च निर्मलाः।**
**मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।**

निम्न मंत्र से पुष्प व पुष्पमाला अर्पण करें–

**माल्यादीनि सुगंधीनि माल्त्यादीनि वै प्रभो।**
**मयाऽहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्।।**

बिल्वपत्र अर्पित करने का मंत्र निम्न है–

**बिल्वपत्रं सुवर्णेन त्रिशूलाकारमेव च।**
**मयार्पितं महादेव बिल्वपत्रं गृहाण मे।।**
**त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम्।**
**त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवाप्रणम्।।**

शिव भोलेनाथ को कल्पना लोक में पुष्प, माला और बिल्वपत्रादि समर्पित करने के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का जप करते हुए, धूप प्रज्वलित करके, भगवान के आसपास का वातावरण सुगंधित करना चाहिए–



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः।**
**आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥**

धूपादि के पश्चात् दीपक प्रज्वलित करने का मंत्र निम्न है—

**साज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितंमया।**
**दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह॥**

नैवेद्य स्वीकार कराने का प्रार्थना-मंत्र निम्न है—

**अपूपानि च पक्वानि मण्डकावटकानि च।**
**पायसं सूपमन्नंच नैवेद्यम्प्रतिगृह्यताम्॥**

जल-अर्पण निम्न मंत्र से करें—

**पानीयं शीतलं शुद्ध गांगेयमहदुत्तमम्।**
**गृहाण पार्वतीनाथ तवप्रीत्या प्रकल्पितम्॥**

भगवान शिव को आचमन कराने अर्थात् जल पिलाने के पश्चात् उनके हाथ-नि धुलाए जाते हैं। करोद्वर्तन नामक इस प्रक्रिया का मंत्र यह है—

**कर्पूरादीनि-द्रव्याणि सुगंधानि महेश्वर।**
**गृहाण जगन्नाथ करोद्वर्तन हेतवे॥**

फलादि अर्पण करने का मंत्र इस प्रकार है—

**कूष्माण्डं मातुलिंगन्च नारिकेल फलानि च।**
**गृहाण पार्वतीकान्त सोमशेखर शंकर॥**

तांबूल तथा पुंगीफल निम्न मंत्र से समर्पित करें—

**पुंगीफलम्महद्दिव्यं नागबल्लीदलैर्युतम्।**
**गृहाण देवदेवेश द्राक्षादीनि सुरेश्वरः॥**

द्रव्य-समर्पण का मंत्र इस प्रकार है—

**हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीज समन्वितम्।**
**पंचरत्नं मयादत्तं गृह्यतवृषभध्वज॥**

उपरोक्त प्रक्रियाओं के पश्चात् आप मन की आंखों से देख रहे हैं कि शिव ने कृपा करके आपकी सभी सेवाओं को स्वीकार कर लिया है। उन्हें आपके सम पधारे पर्याप्त समय हो गया है, अतः अब वह अपने लोक प्रस्थान करना चाहते हैं इस अवसर पर निम्न मंत्र पढ़कर आप शिवजी महाराज की आरती की प्रक्रिया प्र करें—

**अग्निर्ज्योतीरविर्ज्योतिर्नारायणोविभुः।**
**नीराजयानि देवेश पंचदीपे सुरेश्वर॥**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुष्पांजलि अर्पित करने का मंत्र है–

हर विश्वाखिलाधार निराधार निराश्रय।
पुष्पांजलि गृहाणेश सोमेश्वर नमोऽस्तुते॥

अब निम्न मंत्र के साथ भोलेनाथ को नमस्कार और प्रणाम करें–

हेतवे जगतामेव संसारार्णव सेतवे।
प्रभवे सर्व विद्यानां शंभवे गुरवे नमः॥

शिवजी की प्रदक्षिणा का मंत्र है–

यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे॥

यदि उपासना में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए भोलेनाथ शिवजी से निम्न प्रार्थना करनी चाहिए–

प्रसन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात्।
ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्॥
पूजां चैव न जानामि क्षमस्स्व परमेश्वर।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम॥
तस्माक् कारुण्भावेन रक्ष मां परमेश्वर।
अनेन पूजनेन श्रीसाम्भ-सदाशिव प्रीयताम्॥

इस प्रकार शिवजी की मानसिक उपासना पूर्ण हो जाती है।

□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

5

# महामृत्युंजय प्रयोग के लाभ

*गोस्वामी तुलसीदासजी* ने लिखा है *भगवान शंकर की कृपा से भाग्य के लिखे हुए कुअंक भी मिट जाते हैं, फिर इस संसार के कर्मों का क्या कहना है।* 'नारद पुराण' के अनुसार, इस संसार में सारयुक्त केवल चार ही पदार्थ हैं– 1. काशीवास, 2. सत्संग, 3. गंगास्नान और 4. शिवजी की पूजा।

**असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम्।**
**काश्यां वासः सतांसंगो गंगाभ्यां शंभु सेवनम्॥**

कलियुग में केवल शिवजी की पूजा ही फल देने वाली है। सर्व प्रकार के पापों के दुःख, शोकादि हरने के लिए तथा समस्त रोग नाश के लिए महामृत्युंजय का विधान ही श्रेष्ठ है–

**कलौकलिमलध्वंस सर्वपाप हरं शिवम्।**
**येऽर्चयन्ति नरा नित्यं तेपिवन्द्या यथा शिवम्॥ 1॥**
**स्वयं यजन्ति चद्देव मुत्तमा स्त्दरात्मजैः।**
**मध्यमा ये भवेद्मृत्यैरधमा साधन क्रिया॥ 2॥**
**देव पूजा विहीनो यः स नरो नरकं व्रजेत्।**
**यथा कथंचिद्देवार्चा विधेया श्रद्धयान्वितः॥ 3॥**
**जन्मतारात्रयौ रगोन्मृत्युंच्चैव विनाशयेत्॥ मंत्र महोदधी॥**

शिवलिंग की अर्चना करनी चाहिए, क्योंकि शास्त्रों में शिव की अर्चना का ही विधान है–

**एकं पाशुपत लिंग मृच्छिलादि विनिर्मितम्।**
**शालिग्राम शिलामेकां गृहस्थश्चैव पूजयेत्॥ 1॥**
**स्कंदे अग्निहोत्रं त्रिवेदाश्च बहुदक्षिणा।**
**शिवलिंगार्चनं स्यैते कोट्य शेनानि नो सभा॥ 2॥**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हित्वाभित्वा च भत्तानि हत्वा सर्वमिदं जगत्।
यजेद्देवं विरूपाक्षं न स पातेन लिप्यते॥ 3॥
अनेक जन्म साहस्त्रं भ्राम्यमाणास्तु योनिषु।
कः समाप्नोति व मुक्ति सिंगाचमृते नरः॥ 4॥
प्रातरुत्थाय यो लिंगं भक्त्या संपूजयेत्सकृत्।
कपिलाऽसंख्य दानस्य यत्फलं तदवाप्नुयात्॥ 5॥
मध्यं दिनकरे प्राप्ते यो लिंगं परिपूजयेत्।
संपूर्णो पृथिवी दत्त्वा यत्फलं तदवाप्नुयात्॥ 6॥
वारुमाश्रिते सूर्य शिव सम्यक् समर्थयेत्।
ग्वां शत सहस्त्रस्य दत्तस्य फलमाप्नुयात्॥ 7॥
आकाशं लिंगमित्वाहुः पृथिवी तस्य च पीठिका।
प्रलये सर्व देवानां लयनालिंग मुच्यते॥ 8॥

गृहपीड़ा, राज्यदंड, महामारी, दैहिक-भौतिक ताप, वैधव्य-दोष, अल्पायु, धनादि की हानि तथा सर्वप्रकार के कलह की शांति के लिए महामृत्युंजय साधना सर्वोपरि है।

महामृत्युंजय का प्रयोग निम्नलिखित कार्यों में प्रयोजनीय है—

- यदि जन्म, मास, गोचराष्टक और दशा-विदशा आदि में ग्रहजन्य पीड़ा होने का योग हो।
- किसी महारोग से कोई व्यक्ति पीड़ित हो।
- भाई आदि का वियोग हो रहा हो।
- नगर में महामारी आदि से लोग मर रहे हों।
- राज्य हाथ से जा रहा हो।
- धन की भारी हानि हो रही हो।
- अकालमृत्यु का भय हो।
- मेलापक में नाड़ी-दोष आता हो।
- राजदंड के रूप में मृत्यु का भय हो।
- मन के धर्म का विपर्यय हो गया हो।
- घर-परिवार के लोगों के बीच घोर क्लेश उत्पन्न हो गया हो।
- मृत्यु तुल्य रोग की उत्पत्ति हुई हो।

उपरोक्त किसी भी दशा में महामृत्युंजय विधान का पालन करना चाहिए।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## समय और स्थान का महत्त्व

महामृत्युंजय का कोई भी प्रयोग किसी कार्य के निमित्त किया जाए, उसक शास्त्रोक्त विधि के अनुसार यथासमय ही करना चाहिए। आपत्ति से ग्रसित हो जा पर, मनमाने ढंग से, ऊटपटांग कार्य करना अच्छा नहीं होता। यदि किसी का विशेष के कारण विवश होकर महामृत्युंजय प्रयोग का प्रयोजन आवश्यक हो, उसे उचित बेला में तत्काल कराना चाहिए।

किसी महान् प्रयोजन अथवा विशेष कार्य सिद्धि के लिए महामृत्युंजय जप कराने से पूर्व ज्योतिषी से शुभ मुहूर्त्त निकलवा लेना चाहिए। चंद्र, तारा आ बल-संयुक्त अच्छे मुहूर्त्त का दिन निश्चित करवाकर शिवालय (मंदिर), सौ देवालय अथवा किसी सिद्ध स्थान पर इस कृत्य को कराना लाभदायक होता है।

शुभ मुहूर्त्त वाले दिन प्रातःकाल स्नान-संध्या, देव पूजा आदि नित्य कृत्यों निपटकर, प्रयोग किए जाने वाले स्थान में, आसन पर पूर्वाभिमुख बैठें। फि आचमन, प्राणायाम, शांति-पाठ और देंव-प्रणामादि करके, स्थिरचित्त एवं एका होकर जप-क्रिया करें। सर्वप्रथम गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि पार्थिव पूजापूर्वक जप करना हो, तो मिट्टी का शिवलिंग बनाक उसकी पूजा करके, उसी के सान्निध्य संकल्प कर, जप करें। यदि मूर्ति उपलब्ध तो उसकी पूजा करके जप शुरू करना चाहिए।

जप करने वाला व्यक्ति ब्राह्मण, शुद्धचेता, प्रयोगविधि ज्ञाता, निर्वैर, दया उदार, परोपकारी, अनुष्ठानी, देवाराधक और स्वार्थ-शून्य होना चाहिए। यदि ब्राह्म की संख्या एक से अधिक हो, तो वे सभी उपर्युक्त गुण-सम्पन्न, गुण-संयुक्त त विषम संख्या वाले होने चाहिए।

महामृत्युंजय प्रयोग के जपों की संख्या तथा स्थान, आसन, अशन औ समय-सभी समान रहने चाहिए। यदि प्रयोग पुरश्चरणात्मक हो तो समाप्ति समय जप संख्या का दशांश हवन, हवन संख्या का दशांश तर्पण, तर्पण संख्या क दशांश मार्जन और मार्जन संख्या का दशांश ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए।

यदि प्रयोग एक ही दिन का हो और हवन आदि न हो सके, तो उस प्रमाण के ज अधिक कर लेने चाहिए। ऐसा करने से अवश्य ही कार्यसिद्धि होती है।

## हवन-विधि

शास्त्रों के अनुसार हवन-विधि निम्नलिखित है-



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❑ जप की समाप्ति पर पहले से बने वेदी पर कुशकंडी के क्रमानुसार अग्नि स्थापन करके यथा परिमित यथोचित द्रव्य का होम करना चाहिए। इसके लिए सामान्यत: तिल, यव, घृत, दूर्वा, वट, पलाश और खैर की समिधा (लकड़ी) को मधु में डुबोकर, यथाक्रम हवन उपयोग में लाया जाता है।

❑ अगर किसी भी प्रकार की रोग-व्याधि दूर करनी हो, शत्रु पर विजय प्राप्त करनी हो अथवा धन-संपत्ति और पुत्र-पौत्रादि सहित दीर्घायुष्य होने की कामना हो तो सुधावल्ली (गिलोय) की बेल के चार-चार अंगुल के टुकड़ों से हवन करें।

❑ लक्ष्मी-प्राप्ति की कामना हो, तो बिल्वफल से हवन करें।

❑ ब्रह्मत्व सिद्ध करना हो तो पलाश की समिधाओं से हवन करें।

❑ धन-प्राप्ति की इच्छा हो तो वटवृक्ष की समिधा से, कांति बढ़ानी हो तो खैर की समिधा से, पाप का नाश करना हो तो तिलों से तथा शत्रु का नाश करना हो तो सरसों से हवन करें।

❑ यश और कीर्ति की इच्छा हो तो खीर से, मृत्यु का क्षय करना हो तो दही से और रोगक्षय करना हो तो तीन-तीन दूर्वाओं से हवन किया जाना चाहिए।

❑ यदि प्रबल ज्वर को दूर करना हो, तो अपामार्ग की समिधाओं द्वारा पकाई गई खीर से, किसी को वश में करना हो तो गाय के दूध और घृत से हवन करना चाहिए।

❑ यदि सभी प्रकार के रोगों का शमन करना हो तो कश्मीरी समिधा, दूध व अन्न से हवन करें।

हवन की प्रत्येक आहुति में 'स्वाहा' कहें। होम के पीछे कांसे के एक पात्र में जल और दूध मिलाकर रखें। उसमें से अंजली में जल लेकर *महामृत्युंजयं तर्पयामि* अथवा *अमुकं तर्पयामि* का उच्चारण करते हुए तर्पण करना चाहिए।

❑❑



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6

# दीर्घायु के लि

भगवान शंकर के 'रुद्राध्याय' तथा 'मृत्युंजय' महामंत्र भारत के कोने-कोने में अभिषेक किया जाता है। श्राव में तो इसकी बहार देखने योग्य होती है। हम यहां उ महामंत्र 'मृत्युंजय' की अर्थ-गंभीरता पर विचार कर हैं जो निश्चय ही परम पुण्यप्रद है। नीचे दी गयी-अर्च पद्धति को दीर्घायु के लिए भी अपनाया जाता है।

**ॐ हौं जूं सः। ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजाम सुगंधि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। स्वः भुव ॐ। सः जूं हौं ॐ।**

यह सम्पुट युक्त मंत्र है।

ओंकार का प्रतीक शिवलिंग है। उसके ऊपर अविच्छिन्न-अनवरत जलधा के प्रवाहवत् अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक मृत्युंजय महाम का जप करने से विलक्षण आनंद की अनुभूति होती है। किन्तु इससे पहले शिवलि की पूजा करना अनिवार्य है। शिवलिंग का पूजा-विधान निम्नलिखित है-

सबसे पहले किसी स्वच्छ और पवित्र स्थान में आसन पर, पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठकर आचमन, प्राणायाम, गणपति स्मरण, तथा पवित्रीकरण आदि करके यह संकल्प करें-

**ॐ *(अन्य आवश्यक अंश बोलकर)* अमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुकनामाहं श्रीमन्महामृत्युंजय प्रीत्यर्थं पार्थिकेश्वर शिवलिंग पूजनमहं करिष्ये।**

तत्पश्चात् भस्म और रुद्राक्षमाला धारण करें। फिर किसी पवित्र स्थान से ला स्वच्छ-चिकनी मिट्टी लेने से पहले **ॐ नमः शिवायः** मंत्र का जप करें तथ भूमि की प्रार्थना हेतु यह मंत्र बोलें-



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**सर्वाधारे धरे देवि ! त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम्।**
**ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिंगायै भव सुप्रमे।।**

इन मंत्रों से आवाहित कर यथाविधि पूजा करें। तत्पश्चात्, **ॐ ह्रीं मृत्तिकायै नमः** मंत्र से मृत्तिका को अभिमंत्रित करें। इसके बाद 'वं' बीज का उच्चारण करते हुए मिट्टी में जल डालकर **ॐ वामदेवाय नमः** मंत्र बोलें। फिर **ॐ हराय नमः, ॐ मृडाय नमः, ॐ महेश्वराय नमः** कहते हुए उसे मिलाएं।

फिर शिवलिंग तथा ग्यारह रुद्र की आकृतियां बनाएं। उसे अपने समक्ष काष्ठ या पाषाण के पीठ पर सोने, चांदी अथवा तांबे के पात्र में **ॐ शूलपाणये नमः** कहते हुए स्थापित करें। फिर प्रणव से तीन प्राणायाम कर न्यास करें।

## न्यास-विधि

*विनियोग–* **ॐ अस्य श्री शिवपंचाक्षर मंत्रस्य वामदेव ऋषिर्नुष्टुप् छंदः श्रीसदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं, मम् साम्बसदाशिव प्रीत्यर्थं न्यासे विनियोगः।**

*ऋष्यादिन्यास–* **ॐ वामदेवऋषये नमः** *(शिरसि)*, **ॐ अनुष्टुप् छंदसे नमः** *(मुखे)*, **ॐ साम्बसदाशिव देवतायै नमः** *(हृदि)*, **ॐ बीजाय नमः** *(गुह्ये)*, **ॐ शक्तये नमः** *(पादयो)*, **ॐ शिवाय कीलकाय नमः** *(नाभौ)*, **ॐ विनियोगाय नमः** *(सर्वांगे)*।

*शिवपंचमुखन्यास–* **ॐ नं तत्पुरुषाय नमः** *(हृदि)*, **ॐ मम् अघोराय नमः** *(पादयो)*, **ॐ शिं सद्योजाताय नमः** *(गुह्ये)*, **ॐ वां वामदेवाय नमः** *(मस्तके)*, **ॐ यम् ईशानाय नमः** *(मुखे)*।

*कर-हृदयादिन्यास–* **ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः** *(हृदयाय नमः)*, **ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः** *(शिरसे स्वाहा)*, **ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः** *(शिखायै वषट्)*, **ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः** *(कवचाय हुम्)*, **ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः** *(नेत्रत्रयाय वौषट्)*, **ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः** *(अस्त्राय फट्)*।

*ध्यान–*

**ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिभं चारुचन्द्रावतंसं,**
**रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।**
**पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं,**
**विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।**

*विनियोग–* **ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराऋषयः, ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि प्राणाख्या देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कीलकं देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

*ऋष्यादिन्यास*—ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः (*शिरसि*), ॐ ऋग्यजुःसामच्छन्दोभ्यो नमः (*मुखे*), ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः (*हृदये*), ॐ आं बीजाय नमः (*गुह्ये*), ॐ ह्रीं शक्तये नमः (*पादयोः*), ॐ क्रौं कीलकाय नमः (*नाभौ*), विनियोगाय नमः (*सर्वांगे*)।

इस प्रकार न्यास करके पुष्पादि से शिवलिंग का स्पर्श करते हुए बोलें—

**ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि, वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राण-पाणिपाद-पायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।**

इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके **ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिव-मावाहयामि, ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिव-मावाहयामि, ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिव मावाहयामि** इत्यादि बोलकर निम्न रूप से पूजा करें—

दोनों हाथों की अंजली में पुष्प लेकर सूर्यमंडल अथवा अपने हृदय में ध्यान करें—

**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बंधनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।**
**सद्योजातं प्रपद्यामि। भगवन्तं मृत्युंजयशिवम् आवाह्यामि।।**

इतना बोलकर सूर्यमंडल अथवा अपने हृदय में स्थित इष्टदेव को अपने हाथों में लिए पुष्पों में दाहिनी नासिका से श्वास के रूप में आया हुआ मानकर वे पुष्प मूर्ति पर चढ़ा दें। तदनन्तर अन्य उपचारों से पूजा करें। पूजा-सामग्री के अभाव में मूर्ति (शिवलिंग) पर केवल पुष्प और अक्षत चढ़ाएं।

**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। सद्योजाताय वै नमो नमः।।**

(आसनं समर्पयामि)

**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। भवे भवे नातिभवे भवस्व माम्।।**

(पाद्यं समर्पयामि)

**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। भवोद्भवाय नमः।।**

(अर्घ्यं समर्पयामि)

**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। वामदेवाय नमः।।**

(स्नानं समर्पयामि)



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं तर्पयामि।
ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि।
ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
ॐ भीमं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि।
ॐ मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजराव्याधि पीडितं कर्मबंधनैः॥
श्रीमहामृत्युंजय स्वरूपिणं साम्बशिवं तर्पयामि।

(तर्पणात्मकं विशिष्ट स्नानं समर्पयामि)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। ज्येष्ठाय नमः।

(आचमनीयं समर्पयामि)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः।

(मधुपर्कं समर्पयामि)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। कालाय नमः।

(गंधं समर्पयामि)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः।

(अक्षतान् पुष्पाणि च समर्पयामि)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। सर्वभूतदमनाय नमः।

(धूपं समर्पयामि)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। मनोन्मनाय नमः।

(दीपं समर्पयामि)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। भवोद्भवाय नमः।

(नैवेद्यम्–आचमनीयं समर्पयामि)

तत् अरार्तिक्यं, पुष्पांजलिं, नमस्कारं, पुष्पांजलिं।

(च समर्प्य क्षमाप्रार्थनां कुर्यात्)

तदुपरान्त *अनेन मृत्युंजय–शिवपूजनेन भगवान् साम्बसदाशिवः प्रीयताम्* कहकर शिवलिंग पर जल छोड़ें और ग्यारह बार *ॐ नमः शिवाय* बोलकर निम्न रूप से क्षमा–प्रार्थना करें–

मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजराव्याधिपीडितं कर्मबन्धनैः॥



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।**
**तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।**
**अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम्।**
**तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष महेश्वर।।**

इस प्रकार ओंकार-प्रतीक शिवलिंग की पूजा होती है। अब हम दीर्घायु की प्राप्ति के लिए महामृत्युंजय विधान को आगे बढ़ाते हैं—

सृष्टि के आदि, मध्य एवं अंत इन तीनों को 'हौं' और 'जूं' से अपने समक्ष उपस्थित करते हुए महामृत्युंजय का जप करने वाला व्यक्ति मानो श्री त्र्यम्बकेश्वर के प्रति स्वयं का समर्पण कर रहा है। उसके चारों ओर त्र्यम्बकेश्वर की कृपारूपी सुगंध फैल रही है, जिससे उपासक के रोम-रोम में स्फूर्ति होने लगती है। इससे उसमें स्पंदित हुआ आध्यात्मिक प्रभाव नहीं छिप पाता।

जिस प्रकार इन्द्रायण (तूंबे) की बेल सूख जाने पर फल-बंधन से मुक्त होकर आसपास की अनन्तता में छिप जाती है, उसी प्रकार जप करके उपासक अपनी मोक्ष की अवस्था को प्रत्यक्ष उपलब्ध कर सकता है।

**एकोऽहं बहु स्याम्**—परब्रह्म की यह इच्छा होती है और महाप्राण की अलौकिक गति प्रस्तुत होती है। उसका सूचन महाप्राण अक्षर 'ह' से होता है। प्रकृति विकृत होने लगे, पंच तन्मात्रा उद्भूत हो, शब्द-गुण आकाश-सृष्टि को झेलने के लिए तत्पर हो जाए, उस दृश्य का आभास 'औ' की ध्वनि कराती है।

जू=जन्म, ऊ=उद्भव=विकास, विस्तार=शून्य, प्रलय। इस प्रकार 'जूं' सृष्टि की तीनों अवस्थाओं का दिग्दर्शन कराता है। सः=पुरुष अर्थात् विराट्—यह प्रलय के समय अवशिष्ट रहता है। ***पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्*** के साथ ***यदथापूर्वमकल्पयत्*** वाक्यों का स्मरण ऐसे समय क्यों नहीं होगा? ऐसी सृष्टि 'भूर्भुवः स्वः' की त्रिलोकी है। उस त्रिलोकी का निवासी उपासक त्र्यम्बकेश्वर के सामने जप-यज्ञ करेगा, तो वह सहज ही अपुनरावृत्ति वाली मुक्ति को प्राप्त करने में सफल हो जाएगा।

**महामृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजयः**—भगवान मृत्युंजय के जप-स्थान से मार्कण्डेयजी, श्वेत राजा आदि के काल-भय निवारण की कथा 'शिवपुराण', 'स्कंदपुराण'-'काशी खण्ड', 'पद्म पुराण'-'उत्तर खण्ड', 'माघमाहात्म्य' आदि में आती है। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी मृत्युंजय योग मिलते हैं। मृत्यु को जीत लेने के



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारण ही इन मंत्र योगों को 'मृत्युंजय' कहा जाता है–

**मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजयः स्मृतः**

*(रसे. सारसंग्रह, अ. 2 ज्वरि 9)*

मंत्रशास्त्र में वेदोक्त 'त्र्यम्बकं यजामहे' (ऋक्. 7/15/12, यजु. 3/60, अथर्व. 14/1/17, तैत्ति. स. 1/8/6/2, निरुक्त 14/35) इत्यादि को ही 'मृत्युंजय' नाम प्राप्त है। यों पुराणों, विविध निबंधग्रंथों तथा मृत्युंजय तंत्र, मृत्युंजय कल्प, मृत्युंजय पंचांग आदि में इस मंत्र का भाष्य, विधान, पटलपद्धति, स्तोत्र आदि सब कुछ मिलते हैं। 'शिवपुराण, सती खण्ड 38/21/42' में इसका विस्तृत भाष्य है। वहां इसको शुक्राचार्य की 'मृत संजीवनी विद्या' कहा गया है तथा स्वयं शुक्राचार्य ने ही दधीचि को इसका उपदेश किया है। 'विष्णु धर्मोत्तर' में इसके हवन आदि के भेद से अनेक अर्थ–कामसाधक आदि दूसरे भी काम्य प्रयोग बताए गए हैं। यथा–

**कन्या नाम गृहीत्वा च कन्या नामकरः स्मृतः।**
**त्र्यम्बकं यजा महेति होमः सर्वार्थसाधकः।।**
**धत्तूर पुष्पं सघृतं तथा हुत्वा चतुष्पथे।**
**शून्ये शिवालये वापि शिवात्कामान वाप्नुयात्।।**
**हुत्वा व गुग्गुल राम स्वयं पश्यति शंकरम्।**

*(विष्णुधर्म. 02/125/23–25)*

'ऋग्विधानादि' में भी ऐसा ही बताया गया है। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण–प्रकृति खण्ड' के 59वें अध्याय में कहा गया है कि भगवान श्री कृष्ण ने अंगिरा की पत्नी को मृत्युंजय ज्ञान दिया था। यहां संक्षेप में उसके जप की विधि दी जा रही है। यद्यपि 'तंत्रसार', 'शारदा तिलक' आदि एवं 'महार्णव' आदि में एक साथ त्र्यक्षर, पंचाक्षर आदि कई मृत्युंजय मंत्र बताए गए हैं, तथापि सर्वाधिक प्रचलित त्र्यम्बक मंत्र के ही विनियोग, ध्यान आदि का उल्लेख किया जा रहा है। इससे घातक रोग, भय, दुःख, दारिद्रय आदि का नाश तथा सभी कामनाओं की सिद्धि होती है। साधक को चाहिए कि किसी पवित्र स्थान में स्नान, आचमन, प्राणायाम, गणेश स्मरण, पूजन–वंदना के बाद तिथि, वार आदि का कीर्तन करते हुए इस प्रकार संकल्प करें–

**अमुकोऽहं अमुकवासरादौ स्वस्य ( यजमानस्य वा ) निखिलारिष्टनिवृत्तये महामृत्युंजय मंत्र जपमहं करिष्ये।**

तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर इस प्रकार न्यासादि करें–

**ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठा ऋषयः पंक्ति**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गायत्र्युष्णिगनुष्टु भश्छदांसिः, सदाशिव महामृत्युंजय रुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, श्री बीजं, महामृत्युंजय प्रीतये ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

यह कहकर हाथ का जल छोड़ दें।

फिर वामदेव कहोल वशिष्ठा ऋषिभ्यो नमः *(मूर्ध्नि)* पंक्ति गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः *(वक्त्रे)* सदा शिवमहामृत्युंजय रुद्र देवतायै नमः *(हृदि)* ह्रीं शक्त्ये नमः *(लिंगे)* श्रीं बीजाय नमः *(पादयो)*

मंत्रों से सिर, मुख, हृदय, लिंग तथा चरण का स्पर्श करना चाहिए। तत्पश्चात् निम्न मंत्रों से पहले अंगूठे आदि का स्पर्श करते हुए करन्यास करें, फिर उन्हीं मंत्रों से हृदयादि को स्पर्श करते हुए हृदयादिन्यास करना चाहिए—

**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा।**

**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय।**

**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधि पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चंद्रशिरसे जटिने स्वाहा।**

**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बंधनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रौं।**

**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साम मंत्राय।**

**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः माऽमृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नि याय उज्ज्वलज्वाल मां रक्ष ॐ अघोरास्त्राय।**

इस मंत्र के जप में ध्यान परमावश्यक है। 'शिव पुराण' सतीखंड (38/24) में यह ध्यान इस प्रकार बताया गया है—

**हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भ युगला-दुद्धत्य तोयं शिरा**
**सिंचन्तं करयोर्युगेन दधतंस्वांके सकुम्भौ करौ।**
**अक्षस्त्रङ् मृगस्त मम्बुजगतं मूर्द्धस्थ चन्द्रस्रवत्-**
**पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युंजयम्।**

भगवान मृत्युंजय के आठ हाथ हैं। वे अपने ऊपर के दोनों कर-कमलों से दो घड़ों को उठाकर उसके नीचे के दो हाथों से जल को अपने सिर पर उड़ेल रहे हैं। सबसे नीचे के दो हाथों में भी दो घड़े लेकर उन्हें अपनी गोद में रख लिया है। शेष दो हाथों में वे रुद्राक्ष तथा मृग धारण किए हुए हैं।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे कमल के आसन पर बैठे हैं। उनके शिरःस्थ चंद्र से निरंतर अमृतवृष्टि के कारण उनका शरीर भीगा हुआ है। उनके तीन नेत्र हैं तथा उन्होंने मृत्यु को सर्वथा जीत लिया है। उनके वाम भाग में गिरिराज नंदिनी एवं भगवती उमा विराजमान हैं। इस प्रकार ध्यान करके रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र का जप करना चाहिए–

**ॐ हौं, जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।**

यह सम्पुटयुक्त मंत्र है। इसका प्रायः सवा लाख जप सर्वार्थ साधक माना गया है। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए–

**गुह्याति गुह्यगोप्ता त्वं गृह्याणास्मत्कृतं जपम्।**
**सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥**
**मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।**
**जन्म मृत्यु जरारोगैः पीड़ित कर्म बंधनै॥**

जप के अंत में दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण को भोजन आदि कराना चाहिए।

*शुक्राचार्य* द्वारा महामृत्युंजय महिमा का वर्णन इस प्रकार किया गया है–

**त्र्यम्बकं यजामहे च, त्रैलोक्यपितरं प्रभुम्।**
**त्रिमण्डलस्य पितरं, त्रिगुणस्य महेश्वरम्॥**
**त्रितत्त्वस्य त्रिवह्नेश्च, त्रिधाभूतस्य सर्वतः।**
**त्रिदिवस्य त्रिबाहोश्च, त्रिधाभूतस्य सर्वतः॥**
**त्रिदेवस्य महादेवः, सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।**
**सर्वभूतेषु सर्वत्र, त्रिगुणेषु कृतो यथा॥**
**इन्द्रियेषु तथान्यत्र, देवेषु च गणेषु च।**
**पुष्पे सुगंधिवत्सूरः, सुगंधिरमेश्वरः॥**
**पुष्टिश्च प्रकृतेर्यस्मात्, पुरुषाद् वै द्विजोत्तम।**
**महदादिविशेषाणां विकल्पश्चापि सुव्रत॥**
**विष्णोः पितामहस्यापि, मुनीनां च महामुने।**
**इन्द्रियश्चैव देवानां, तस्माद् वै पुष्टिवर्धनः॥**
**तं देवममृतं रुरुं, कर्मणा तपसाऽपि वा।**
**स्वाध्यायेन च योगेन, ध्यानेन च प्रजायते॥**
**सत्येनान्येन सू मायान्मृत्युपाशाद् भव स्वयम्।**
**बन्धमोक्षकरो यस्मादुर्वारुकमिव प्रभुः॥**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**मृतसंजीवनीमंत्रो, मम सर्वोत्तमः स्मृतः।**
**एवं जपपरः प्रीत्या, नियमेन शिवं स्मरन्॥**
**जप्त्वा हुत्वाऽभिमंत्र्यैवं, जलं पिब दिवानिशम्।**
**शिवस्य संनिधौ ध्यात्वा नास्ति मृत्युभयं क्वचित्॥**

*(शिवपुराण, रुद्रसंहिता, सतीखंड, आ. 68)*

उपरोक्त पद्यों द्वारा शुक्राचार्य ने महर्षि दधीचि को यह बताने का प्रयास किया कि भगवान त्र्यम्बक तीनों लोकों के स्वामी, तीन मंडलों के पिता, त्रिगुणी, तीन तत्त्व; अग्नि, भूत, स्वर्ग तथा देवों में महान् हैं। वे सुगंधि से सर्वत्र व्याप्त हैं। प्रकृति और पुरुष से महदादि तत्त्वों के समान पुष्टिवर्धक हैं; अमृतमय हैं। स्वाध्याय, योग, ध्यान, सत्य एवं अन्य उपासनाओं से प्रसन्न होकर वे मृत्युपाश से मुक्त करते हैं। अतः 'हे दधीचि, तुम इस मृतसंजीवनी मंत्र का जप करके निर्भय बनो।' इस उपदेश को सुनकर महर्षि दधीचि ने उपासना की, जिसके कारण उनकी देह वज्र के समान हो गई।

□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

7

# श्रीमृत्युंजय स्तोत्रम्

सृष्टि के निर्माण के साथ ही सृष्टिकर्त्ता श्री ब्रह्मा ने इस बात का प्रबंध भी किया कि सृष्टि का यह चक्र चलता रहे। इसके लिए पृथ्वी पर नए-नए जीवों के आगमन और उनके भरण-पोषण के समान ही महत्त्वपूर्ण है– समय समाप्त हो जाने पर उनका इस संसार से चले जाना। व्यक्ति का जितना महत्त्व इस संसार में आने का है, उससे अधिक महत्त्वपूर्ण है, उसका इस संसार से चले जाना–अर्थात् काल कवलित हो जाना। जीवन के बाद मृत्यु रूपी संहार की यह क्रिया भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जितनी सृष्टि-निर्माण और उसके पालन की। वैसे तो मृत्यु का अपना एक निश्चित समय होता है, किन्तु अकालमृत्यु का कोई निश्चित समय नहीं होता। ऐसी मृत्यु मरने वाले को कोई पीड़ा पहुंचाती हो या नहीं, किन्तु उसके परिजनों को पीड़ा अवश्य होती है।

इस प्रकार की अकालमृत्यु से बचाव के लिए हमारे धर्मशास्त्रों में शिवजी से विशेष प्रार्थना करने का विधान है। इसके अंतर्गत भगवान शिव को समर्पित मृत्युंजय स्तोत्र का नियमित पाठ किया जाता है जबकि भयंकर रोग होने पर विशेष विधि-विधानपूर्वक बड़ी संख्या में इसका जप करना चाहिए। मृत्युंजय स्तोत्र इस प्रकार है–

**रत्सानु शरासनं रजताद्रिश्रृंगनिकेतनं**
**शिञ्जिनीकृतपन्नगेश्वर मच्युतानलसायकत्।**
**क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं**
**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥**

कैलाश के शिखर पर जिनका निवासगृह है, जिन्होंने मेरुगिरि का धनुष, नागराज वासुकि की प्रत्यंचा और भगवान विष्णु को अग्निमय बाण बनाकर तत्काल ही दैत्यों के तीनों पुरों को दग्ध कर डाला था, संपूर्ण देवता जिनके चरणों



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की वंदना करते हैं, उन भगवान चंद्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

**पंचपादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वय शोभितं**
**भाललोचनजातपावकदग्ध मन्मथविग्रहम्।**
**भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं**
**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।**

मदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन—इन पांच दिव्य वृक्षों के पुष्पों से सुगंधित युगल चरणकमल जिनकी शोभा बढ़ाते हैं, जिन्होंने अपने ललाटवर्ती नेत्र से प्रकट हुई अग्नि की ज्वाला में कामदेव का शरीर भस्म कर डाला था, जिनका श्री विग्रह सदा भस्म से विभूषित रहता है, जो सबकी उत्पत्ति के कारण होते हुए भी भव-संसार के नाशक हैं तथा जिनका कभी विनाश नहीं होता, उन भगवान चंद्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

**मत्तवारणमुख्यचर्म कृतोत्तरी यमनोहरं**
**पंकजासन पद्मलोचन पूजितांघ्रिसरोरुहम्।**
**देवसिद्ध तरंगिणी करसिक्तशीतजटाधरं**
**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।**

जो मतवाले गजराज के चर्म की चादर ओढ़े परम मनोहर जान पड़ते हैं, ब्रह्मा और विष्णु भी जिनके चरणकमलों की पूजा करते हैं तथा जो देवताओं एवं सिद्धों की नदी गंगा की तरंगों से भीगी हुई शीतल जटा धारण करते हैं, उन भगवान चंद्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

**कुण्डलीकृतकुण्डलीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं**
**नारदादिमुनीश्वर स्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।**
**अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं**
**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।**

कुण्डली मारे हुए सर्पराज जिनके वैभव की स्तुति करते हैं, जो समस्त भुवनों के स्वामी, अंधकासुर का नाश करने वाले, आश्रितजनों के लिए कल्पवृक्ष के समान और यमराज को भी शांत करने वाले हैं, उन भगवान चंद्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

**यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजंगविभूषणं**
**शैलराजसुता पपरिष्कृतचारुवाम कलेवरम्।**
**क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं**
**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो यक्षराज कुबेर के सखा, भग देवता की आंख फोड़ने वाले और सर्पों के आभूषण धारण करने वाले हैं, जिनके श्री विग्रह के सुंदर वामभाग को गिरिराजकिशोरी उमा ने सुशोभित कर रखा है, कालकूट विष पीने के कारण जिनका कंठभाग नीले रंग का दिखाई देता है, जो एक हाथ में फरसा और दूसरे में मृग लिए रहते हैं, उन भगवान चंद्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

भेषजं भवरोगिणामखिला पदामपहारिणं
दक्षयज्ञविनाशिनं तुगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंघ निबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥

जो जन्म-मरण के रोग से ग्रस्त पुरुषों के लिए औषधरूप हैं, समस्त आपत्तियों का निवारण और दक्ष-यज्ञ का विनाश करने वाले हैं, सत्त्व आदि तीनों गुण जिनके स्वरूप हैं; जो तीन नेत्र धारण करते, भोग और मोक्षरूप फल देते तथा संपूर्ण पापराशि का संहार करते हैं, उन भगवान चंद्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

भक्तवत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम्।
भूमिवारिनभो हुताशनसो मपालितस्वाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥

जो भक्तों पर दया करने वाले हैं, जो अपनी पूजा करने वाले मनुष्यों के लिए अक्षय निधि होते हुए भी स्वयं दिगंबर रहते हैं, जो सब भूतों के स्वामी, परात्पर, अप्रमेय और उपमारहित हैं; पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और चंद्रमा के द्वारा जिनका श्री विग्रह सुरक्षित है, उन भगवान चंद्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
संहरन्तमथ प्रपंचमशेषलोकनिवासिनम्।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥

जो ब्रह्मारूप से संपूर्ण विश्व की सृष्टि करते हैं, फिर विष्णुरूप से सबके पालन में संलग्न रहते और अंत में सारे प्रपंच का संहार करते हैं, संपूर्ण लोकों में जिनका निवास है तथा जो गणेशजी के पार्षदों से घिरकर दिन-रात भांति-भांति के खेल किया करते हैं, उन भगवान चंद्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**रुद्रं पशुपतिं स्थाणु नीलकण्ठमुमापितम्।**
**नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥**

'रु' अर्थात् दुःख को दूर करने के कारण जिन्हें रुद्र कहते हैं, जो जीव पशुओं का पालन करने से पशुपति, स्थिर होने से स्थाणु, गले में नीला चिह्न धारण करने से नीलकंठ और भगवती उमा के स्वामी होने से उमापति नाम धारण करते हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

**कालकण्ठं कलामूर्ति कालाग्निं कालनाशनम्।**
**नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥**

जिनके गले में काला दाग है जो कलामूर्ति, कालाग्निस्वरूप और काल नाशक हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

**नीलकण्ठं विरूपाक्ष निर्मलं निरुपद्रवम्।**
**नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥**

जिनका कण्ठ नील और नेत्र विकराल होते हुए भी जो अत्यंत निर्मल और उपद्रव रहित हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

**वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्।**
**नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥**

जो वामदेव, महादेव, विश्वनाथ और जगद्गुरु नाम धारण करते हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

**देवदेवं जगन्नाथं देवेशवृषभध्वजम्।**
**नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥**

जो देवताओं के भी आराध्यदेव, जगत् के स्वामी और देवताओं पर भी शासन करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा पर वृषभ का चिह्न बना हुआ है, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

**अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधारं हरम्।**
**नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥**

जो अनन्त, अविकारी, शांत, रुद्राक्षमालाधारी और सबके दुःखों का हरण करने वाले हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपद कारणम्।**
**नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥**

जो परमानंदस्वरूप, नित्य एवं कैवल्यपद–मोक्ष की प्राप्ति के कारण हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

**स्वर्गापवर्ग दातारं सृष्टिस्त्यिन्त कारिणम्।**
**नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥**

जो स्वर्ग और मोक्ष के दाता तथा सृष्टि, पालन एवं संहार के कर्त्ता हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

## स्तोत्र का महत्त्व

श्री शिव की उपासना में स्तोत्र का बहुत अधिक महत्त्व है। वस्तुतः स्तोत्र उपासना का प्रमुख अंग है। हमारे वेद, उपनिषद्, पुराण तथा तांत्रिक साहित्य में स्तोत्रों की विपुलता प्राप्त होती है। स्तोत्र में इष्टदेव के गुणों का स्मरण तथा अपनी आशा–आकांक्षा, सुख–दुःख, याचना–प्रार्थना–सभी के निवेदन आदि पर्याप्त रूप से प्रकट किए जाते हैं। श्रद्धा–जागरण का अमोघ उपाय स्तोत्र–पाठ ही है। आत्मविश्वास में दृढ़ता लाने के लिए तन्मयता से स्तोत्र–पाठ करना आवश्यक है। इससे मानसिक शक्ति का विकास तो होता ही है, साथ ही देव–कृपा का प्रसाद मिलने में भी सरलता होती है।

**स्तोकस्तोकेन मनस परमप्रीतिकारणात्।**
**स्तोत्रसन्तरणाद् देवि, स्तोत्रमित्यभिधीयते॥**

स्तोत्र से मन धीरे–धीरे निर्मल होता है और इष्टदेव के प्रति प्रीति (आकर्षण) उत्पन्न होती है, जिससे स्तोत्र–स्रोत सांसारिक प्रवाह से निस्तार होकर उसी इष्ट में विलय हो जाता है।

भगवान मृत्युंजय स्तोत्र की एक कथा का वृत्तांत 'पद्मपुराण' में इस प्रकार मिलता है–एक बार मुनिप्रवर मृकण्डु के पुत्र मार्कण्डेय मुनि ने अपने पिता को अत्यंत चिन्तितावस्था में देखा। जब उनसे नहीं रहा गया, तो उन्होंने पिता से उनके चिन्तित होने का कारण पूछा। इस पर पिता ने अपने पुत्र को बताया कि तुम्हारी माता (मरुद्वती) के कोई संतान न होने पर हम दोनों ने बड़ी कठिन तपस्या करके शिवजी को प्रसन्न किया था। उन्होंने गुणज्ञ, सर्वज्ञ, अद्भुत एवं सोलह वर्ष की आयु वाला पुत्र अथवा गुणहीन दीर्घजीवी पुत्र से किसी एक की प्राप्ति के लिए वर मांगने को कहा। मैंने मूर्ख पुत्र की अपेक्षा गुणी पुत्र को उत्तम मानकर अल्पायु वाला पुत्र (तुम्हें) मांग लिया। अब मैं यह सोचकर चिन्तित हो रहा हूं कि तुम्हारा



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आयुष्य पूर्ण होने को आया है।

पिता की बात सुनकर पुत्र मार्कण्डेय ने पूछा कि क्या आयु बढ़ाने वाला के उपाय नहीं है ? उनकी बात पर मृकण्डु ने कहा कि यदि तुम 'महामृत्युंजय उपासना' कर लो, तो अवश्य ही दीर्घायु प्राप्त कर सकते हो। पिता द्वारा मार्गद मिलते ही मार्कण्डेय ने कठोर तप किया और भगवान महामृत्युंजय की आरा की।

जिस दिन आयु पूर्ण हुई, यमराज मार्कण्डेय को लेने आए और उनके गले यमपाश डालकर ले जाने लगे। इस पर मार्कण्डेय ने कहा कि मुझे अपने इष्ट की पूजा कर लेने दो, कुछ समय बाद चलूंगा। मार्कण्डेय की बात सुन यमराज क्रोधित होकर कहा कि काल किसी की प्रतीक्षा नहीं करता तथा पाश खींचने ल उसी समय शिवजी ने प्रकट होकर यमराज के वक्ष पर त्रिशूल से प्रहार क चाहा। यह देख यमराज ने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी और मार्कण्डेय के अल्पायु पूर्ति होने की बात कही। तब भगवान शिव ने यमराज को आदेश दिया कि उ मेरी शरण प्राप्त कर ली है, इसलिए उसे ले जाने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं चाहे वह अत्यंत अल्पायु वाला हो अथवा उसके अन्य कोई कारण हों। अतः अ और भविष्य में ऐसी त्रुटि न हो, इसका ध्यान रखना।

इस प्रकार मृत्यु-भय से ग्रसित मृकण्डु पुत्र मार्कण्डेय को महामृत्युंजय के पाठ से दीर्घायु की प्राप्ति हुई। जो व्यक्ति शिव के समक्ष अथवा कहीं भी स्तोत्र का पाठ करता है, उसको मृत्यु का भय नहीं रहता और भगवान उसे सर से मुक्ति प्रदान करते हैं। यहां हम एक अन्य स्तोत्र का वर्णन कर रहे हैं, 'विष्णुमृत्युंजय' के नाम से जाना जाता है तथा अकालमृत्यु का हरण करने व है–

**ॐ अस्य श्री विष्णुमंत्रस्य साध्य नारायण ऋषिः, देवी गायत्रीछं विष्णु देवता, सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

इसके बाद **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** या **ॐ नमो नारायणाय** मंत्र करन्यास तथा अंगन्यास करके विष्णु भगवान का ध्यान करें–

**उद्यत्कोटि दिवाकराभयनिशं, शंख गदां पंचकम्।**
**चक्रम् विभ्रत मिन्दिरा वसुमती संशोभि पार्श्वद्वयम्॥**
**कोटिरांगद हार कुण्डलधरं पीतांबर कौस्तुभौ।**
**दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षति लसत् श्रीवत्स चिह्नं भजे॥**

ध्यान के पश्चात् मृत्युंजय स्तोत्र का पाठ करें–



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारायणं सहस्राक्षं पद्मनाभं पुरातनम्।
प्रणतोऽस्मि हृषिकेशं किं मे मृत्युः करिष्यति॥
गोविन्दम् पुण्डरीकाक्षमनन्त मजमव्ययम्।
केशवं च प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥
वराहं वामनं विष्णुं नारसिंहं जनार्दनम्।
माधवं च प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥
पुरुषं पुष्करं पुण्यं क्षेमबीजं जगत्पतिम्।
लोकनाथं प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥
भूतात्मानं महात्मानं जगद्योनिमयोनिजम्।
विश्वरूपं प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥
सहस्रशिरसं देवं व्यक्ताव्यक्तं सनातनम्।
महायोगं प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति॥

इस स्तोत्र के पाठ का फल बताते हुए लिखा है—

मार्कण्डेयो ह्युवाचैवं स्तोत्रं तस्य महात्मनः।
अपयातस्ततो मृत्युर्विष्णुदूतैश्च पीड़ित॥
इति तेन जितो मृत्युमर्किण्डेयेन धीमता।
प्रसन्ने पुण्डरीकाक्षे नृसिंहे नास्ति दुर्लभम्॥
मार्कण्डेय-हितार्थाय स्वयं विष्णुरुवाच ह।
इदं मृत्युंजयस्तोत्रं मृत्युव्याधि-विनाशनम्॥
यं इदं पठते भक्त्या त्रिकालं प्रयतः शुचि।
नाकाले तस्य मृत्युः स्याद् नरस्याच्युतचेतसः॥

'नृसिंहपुराण' में मार्कण्डेय द्वारा भगवान विष्णु को मृत्युंजय स्वरूप मानकर मृत्यु से मुक्ति प्राप्त करने की स्तुति की गई है। इसके बारे में उल्लेख मिलता है कि जब मुनि मार्कण्डेय मृत्यु-भय से बहुत त्रस्त हो गए और कोई उपाय नहीं सूझा तो भगवान विष्णु ने स्वयं उनके कान में उपरोक्त स्तोत्र कहकर, इसके पाठ की प्रेरणा दी थी।

भगवान विष्णु के 28 नामों का निम्नलिखित स्तोत्र बहुत ही सरल और आशुप्रभावी है। किसी भी स्थिति में इसका जप करते रहने से विष्णु-कृपा की निश्चित ही अनुभूति होती है। यह स्तोत्र मृत्यु-भय मिटाने वाला है। इसमें एक बड़ी महत्त्व की बात है। स्तोत्र का पाठ करते समय स्तोत्रक के मन में यह दृढ़ विश्वास बन जाता है कि मैंने भगवान विष्णु का आश्रय ले लिया है। अब मृत्युदाता यमराज



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

मत्स्यं कूर्म वराहं च वामनं च जनार्दनं,
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम्।
पद्मनाभं सहस्राक्षं वनमालिं हलायुधं,
गोवर्द्धनं हृषिकेषं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्।
विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम्,
दामोदरं श्रीधरं च वेदांगं गरुडंध्वजम्।
अनन्तं कृष्णगोपालं जपतो नास्ति पातकम्।।

इसी प्रकार निम्नांकित श्लोक भी विष्णु–स्तवन के लिए बहुत ही उपयो माने गए हैं–

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोप-शांतये।।
व्यासं वसिष्ठनप्तारं सक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पाराशरात्मजं वंदे शुकतातं तपोनिधिम्।।
व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मधिये वासिष्ठाय नमो नमः।।
अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः।
अभाललोचनः शंभुर्भगवान् बादरायणः।।

अधिक संकट आने पर पवित्रतापूर्वक उपरोक्त स्तोत्र का सौ बार पाठ क से सर्व प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

8

# मृत्युंजय साधना का प्रथम सोपान

देवता के चरणों में स्वयं को अर्पित कर देना, उसके गुणगान और रूप-चिंतन में तन्मय हो जाना, उसके प्रति अनन्य निष्ठा-भक्ति रखना, यही सबसे बड़ी तथा फलदायी साधना है। साधना की सफलता साधक की निष्ठा, सामर्थ्य और देवता के प्रति समर्पण-भाव पर आधारित होती है।

भगवान शिव त्रिभुवन के स्वामी हैं। सूर्य, चन्द्र और अग्निरूप तीन नेत्रों के कारण उन्हें 'त्र्यम्बक' नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। अनेक पौराणिक शास्त्रों में शिव-स्वरूप के साथ ही उनके रुद्ररूप का भी पर्याप्त वर्णन मिलता है। वे समय-समय पर अवतार लेकर देवताओं के संकट दूर करने के लिए राक्षसों का संहार भी करते हैं। शिव की तांडवलीला ही संहारलीला की प्रतीक है। वह रुद्र होकर क्रोध करते हैं, उग्र बनकर गजासुर, अंधकासुर, त्रिपुरासुर एवं कामदेव आदि का संहार करते हैं। त्रिशूल, खण्ड-परशु, खटवांग आदि उनके अस्त्र हैं। अपनी इसी उग्रता के कारण वे यमराज तक का काल बन जाने को उद्यत हो उठते हैं।

भगवान शिव रुद्ररूप धारण करके काल बन जाते हैं तो मृत्युंजय बनकर मृत्यु का हरण भी कर लेते हैं। ऐसे मृत्युंजय की अपार महिमा का वृत्तांत अनेक तंत्रशास्त्रों में मिलता है। किन्तु प्रायः सभी शास्त्रों में यह निर्देश रहता है कि सर्वप्रथम श्री गणेश को प्रसन्न करने का प्रयास किया जाना चाहिए। गणेशजी एकमात्र ऐसे देवता हैं जो सर्वप्रथम पूजे जाते हैं। वे श्री शिव-पार्वती के पुत्र तथा मृत्युंजय-साधना के प्रथम सोपान हैं। उन्हें गणपति, गणनायक, आदिदेव और विनायक कहा जाता है। अध्यात्म के विभिन्न क्षेत्रों में गणेशजी पूज्य और अतिशय प्रभाव-संपन्न देवता स्वीकृत हैं।

उन्हें विद्या-बुद्धि का प्रदाता, विघ्न-विनाशक, मंगलकारी, रक्षात्मक और



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धिदायक माना जाता है। किसी भी कार्य के प्रारंभ में सर्वप्रथम गणेशजी की पूजा इसलिए की जाती है, कि यदि आगे चलकर कोई विघ्न-व्यवधान आए, तो गणेशजी के प्रभाव से उसकी प्रतिक्रिया समाप्त की जा सके। विघ्न-निवारण के साथ ही गणेशजी विद्या, बुद्धि, वैभव, समृद्धि, शक्ति, निरोगावस्था, स्वास्थ्य, जीवन और सम्मान भी प्रदान करते हैं। उनकी शक्ति का आकलन नहीं किया जा सकता। स्वयं शिव को भी उनकी शक्ति देखकर चमत्कृत रह जाना पड़ा था।

ऋद्धि-सिद्धि गणेशजी की अनुचरी हैं। विद्या, व्यवसाय, कृषि, भवन-निर्माण, पूजा-पाठ, पारिवारिक समारोह तथा जप-तप, यज्ञ-हवन, तंत्र-मंत्र आदि में सर्वप्रथम गणेशजी का ही स्मरण किया जाता है। यहां हम गणेशजी से संबंधित मंत्र, यंत्र एवं तंत्र का उल्लेख कर रहे हैं। आस्था और भक्तिपूर्वक किसी भी प्रकार की साधना करके गणेशजी की कृपा प्राप्त की जा सकती है। यह निश्चित है कि जिस पर गणेशजी की कृपा-दृष्टि हो जाएगी, वह समस्त आपदाओं से मुक्त होकर सुखमय जीवन का अधिकारी बनेगा।

आर्ष-ग्रंथों में गणेशजी का पूजन-विधान विस्तारपूर्वक और अनेक प्रतिबंधों एवं नियमों से संयुक्त करके लिखा गया है। किन्तु देश, काल और सामाजिक परिवेश की दृष्टि से वैसी उपासना आज सर्व सुलभ एवं सहज-साध्य नहीं रह गई है। ऐसी स्थिति में यदि साधक श्रद्धा-भक्ति के साथ, भावना को वरीयता देकर मध्यम मार्ग का अनुसरण करे, तो सहज पूजा-आराधना के द्वारा भी वह गणेशजी की कृपा एवं उनका सान्निध्य प्राप्त कर सकता है।

किसी भी साधना की सफलता छद्म और आडंबर में नहीं, भक्ति-भावना में है। यदि किसी नियम का पालन न हो सके, किन्तु भावना अडिग रहे, तो भी साधना निश्चितरूपेण फलदायिनी होती है—यह विद्वानों का मत है।

**न काष्ठे विद्यते देवो, न पाषाणे न मृण्मये।**
**भावे हि विद्यते देवो, तस्मात् भावो हि कारणम्।।**

थोड़ी-बहुत सरल या जटिल जो भी साधना की जाए, वह भक्ति-भावना से युक्त हो—यही साधना का अनिवार्य प्रतिबंध है। जब तक साधक अपने आराधक के प्रति परम तन्मयता से स्वयं को समर्पित नहीं कर देता, अहं का निरसन करके प्रभु की सत्ता में अपने को लीन नहीं करता, उसकी व्यवस्था में संतुष्ट नहीं होता, तब तक साधना फलवती नहीं होती।

महामृत्युंजय मंत्र-जप की साधना से पहले किसी शुभ दिन या शुभ मुहूर्त में गणेशजी की उपासना करें। ऐसा करने से विघ्नों की आशंका नहीं रहती। क्योंकि यह कठोर सत्य है कि जब भगवान मृत्युंजय शिव आदि देवताओं की अर्चना-वंदना



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए हम कृत-संकल्प होते हैं, तो वायुमंडल में विचरण कर रही दुरात्माएं (आसुरी प्रवृत्तियां) हमारे शुभ संकल्प को खंडित करने के लिए सक्रिय हो उठती हैं। इस दशा में गणेशजी का ध्यान-साधना रक्षात्मक कवच का कार्य करता है। अतः कोई शुभ दिन निश्चित करके किसी एकांत, शांत और सामान्य रूप से वायु-प्रकाश युक्त स्थान को लीप-पोतकर स्वच्छ-पवित्र कर लेना चाहिए।

चंदन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, आसन, माला, नैवेद्य आदि सब पहले से संजोकर रख लेने चाहिए, ताकि पूजा या जपादि के बीच में न उठना पड़े। साधक का मुख पूर्व दिशा की ओर रहना चाहिए। बैठने के लिए ऊनी या कुश का आसन उपयुक्त है। बांस, घास-फूस और पत्तों से बना आसन भूलकर भी प्रयुक्त नहीं करना चाहिए। नग्न भूमि अथवा लकड़ी का आसन भी वर्जित है।

गणेशजी की पूजा करने के पश्चात् विनियोग व न्यासादि इस प्रकार करना चाहिए—

*विनियोग*— **ॐ अस्य श्रीमहागणपतिमंत्रस्य गणकऋषिः, निचृद् गायत्रीछंदः, महागणपतिर्देवता, गं बीजं, स्वाहाः शक्तिः, ग्लौं कीलकं, मम श्रीमहागणपतिप्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

*ऋष्यादिन्यास*— **ॐ गणकऋषये नमः** *(शिरसि)*, **ॐ निचृद् गायत्रीच्छंदसे नमः** *(मुखे)*, **ॐ महागणपतिदेवतायै नमः** *(हृदि)*, **गं बीजाय नमः** *(गुह्ये)*, **स्वाहा शक्तये नमः** *(पादयो)*, **ग्लौं कीलकाय नमः** *(नाभौ)*, **महागणपतिप्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः** *(सर्वांगे)*।

*करन्यास*— **ॐ गां** *(अंगुष्ठाभ्यांनमः)*, **ॐ गीं** *(तर्जनीभ्यां नमः)*, **ॐ गूं** *(मध्यमाभ्यां नमः)*, **ॐ गें** *(अनामिकाभ्यांनमः)*, **ॐ गौं** *(कनिष्ठिकाभ्यां नमः)*, **ॐ गः** *(करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः)*।

*हृदयादिन्यास*— **ॐ गां** *(हृदयाय नमः)*, **ॐ गीं** *(शिरसे स्वाहा)*, **ॐ गूं** *(शिखायै वषट्)*, **ॐ गैं** *(कवचाय हुम्)*, **ॐ श्रीं गौं** *(नेत्रत्रयाय वौषट्)*, **ॐ गः** *(अस्त्राय फट्)*।

*ध्यान*—

**बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पला**
**व्रीह्यग्रस्वबिषाणरत्न कलश प्रोद्यत्मकराम्भोरुहः।**
**ध्येयो वल्लभा सपद्मकरयाश्लिष्टो ज्वलद्भूपया,**
**विश्वोत्पत्ति-विपत्ति-संस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः॥**

गणेशजी ध्यान के पश्चात् मानसोपचार पूजा निम्न मंत्रों द्वारा करें—

**लं पृथिव्यात्मकं महागणपतये गन्धं कल्पयामि नमः।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हं आकाशात्मकं महागणपतये पुष्पं कल्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं महागणपतये धूपं कल्पयामि नमः।
रं वह्नयात्मकं महागणपतये दीपं कल्पयामि नमः।
वं अमृतात्मकं महागणपतये नैवेद्यं कल्पयामि नमः।
सं सर्वात्मकं महागणपतये तांबूलादि सर्वोपचारान् कल्पयामि नमः।

तत्पश्चात् रुद्राक्ष की माला मस्तक से लगाकर निम्नलिखित मंत्र 108 बार जप करें–

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लीं गं गणपतये
वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

जप पूर्ण हो जाने पर गणेशजी निम्न स्तुति का पाठ करें–

प्रणम्य शिरसा देवं, गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थ सिद्धये।।
प्रथम वक्रतुण्डं च एकदन्त द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्ष, गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।
लम्बोदरं पंचमं च, षष्ठ विकट मेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्र, धूम्रवर्ण तथाष्टकम्।।
नवमं भालचन्द्रं च, दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं च, द्वादशं तु गजाननम्।।

अथवा–

ध्याये हृदब्जे शोणांगं वामोत्संग विभूषया।
सिद्धलक्ष्म्या समाश्लिष्ट पार्श्व मर्धेन्दुशेखरम्।।
वामाधः करतो दक्षाधः करान्तेषु पुष्करै।
परिष्कृत मातुलुंगम गदा पुंड्रेक्ष कार्मुकै।।
मूलेन शंख चक्राभ्यां पाशोत्पल युगेन च।
शालिमंजरिका स्वीय दन्तोजल मणिघटैः।।
स्त्रवन्मदं च सानन्दं श्री पत्यादि संवृतं।
अशेष विघ्न विध्वंस विघ्नं विघ्नेश्वरं भजे।।

स्तुति के पश्चात् गणेशजी के स्तोत्र का पाठ भी अवश्य कर लेना चाहिए। यह अत्यंत प्रभावी तथा संकटों को दूर करने वाला है। स्तोत्र का संक्षिप्त रूप निम्न है–



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ नमो विघ्नराजाय, सर्व सौख्य प्रदायिने।
दुष्टारिष्ट विनाशाय, पराय परमात्मने॥
लम्बोदरं महावीर्यं नागयज्ञाप शोभितम्।
अर्द्धचन्द्र धरं देवं विघ्नव्यूह विनाशनम्॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हें ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः।
सर्वसिद्धि प्रदोऽसि त्वं सिद्धिप्रदो भव॥
चिन्ततार्थ प्रदस्त्वं हि सतत मोदक प्रिय।
सिन्दूरारुण वक्त्रेश्च पूजितो वरदायकः॥

फिर दोनों हाथ जोड़कर गणेशजी से प्रार्थना करें–

नमो नमः सुरवरपूजितांघ्रये,
नमो नमो निरुपममंगलात्मने।
नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये,
नमो नमः करिकलभाननाय ते॥

1. ॐ गणंजयाय नमः
2. ॐ गणपतये नमः
3. ॐ हेरम्बाय नमः
4. ॐ धरणीधराय नमः
5. ॐ महागणपतये नमः
6. ॐ लक्षप्रदाय नमः
7. ॐ क्षिप्रप्रसादनाय नमः
8. ॐ अमोघसिद्धये नमः
9. ॐ अमिताय नमः
10. ॐ मंत्राय नमः
11. ॐ चिंतामणये नमः
12. ॐ निधये नमः
13. ॐ सुमंगलाय नमः
14. ॐ बीजाय नमः
15. ॐ आशापूरकाय नमः
16. ॐ वरदाय नमः
17. ॐ शिवाय नमः
18. ॐ काश्यपाय नमः
19. ॐ नन्दनाय नमः
20. ॐ वाचासिद्धाय नमः
21. ॐ श्रीढुंढिराजाय नमः

अब 21 मोदक बनाएं तथा उपरोक्त नाम-मंत्रों से गणपति को अर्पित करें। इससे गणपति प्रसन्न होते हैं। साधक की सभी कामनाएं सिद्ध हो जाती हैं।

## गणपति की तांत्रिक मंत्र साधना

गणपति मूल रूप से तंत्र के ही देवता हैं; ऐसा कुछ विद्वानों का मत है। इसकी संपुष्टि के लिए वे 'भूतगणाधिसेवितम्' श्लोकांश को उद्धृत करते हैं। यहां इसी संदर्भ में गणपति के तंत्र सम्मत मंत्र का ही जिक्र किया जा रहा है–

हस्ति पिशाचिलिखे स्वाहा।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रत्येक देवता की उपासना वैदिक, तांत्रिक और पौराणिक पद्धतियों से की जाती है। जिस प्रकार वेदों–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के मंत्रों में भारी अंतर है तथा अर्चकगण अपने–अपने वेद के मंत्रों के अनुसार पूजा करते हैं, उसी प्रकार तंत्रों में भी दीक्षाक्रम एवं समुदाय–विशेष के आधार पर अर्चना–साधना होती है।

उपरोक्त मंत्र गणपति–मंत्रों में बहुत महत्त्वपूर्ण माना गया है। विशेष रूप से मृत्युंजय साधना में सफलता के लिए यह मंत्र अति प्रभावशाली सिद्ध होता है। इसका विधान इस प्रकार है–

*विनियोग*– **ॐ अस्य श्रीउच्छिष्ट महागणपति नवार्ण मंत्रस्य कंकोलऋषिः, विराट्छंदः, उच्छिष्ट महागणपतिर्देवता मम मनोऽभिलषित सिद्धये जपे विनियोगः।**

*ऋष्यादिन्यास*– **ॐ कंकोलऋषये नमः** *(शिरसि)*, **ॐ विराटछंदसे नमः** *(मुखे)*, **ॐ उच्छिष्ट महागणपतये नमः** *(हृदि)*, **ॐ विनियोगाय नमः** *(सर्वांगे)*।

*करन्यास*– **ॐ हस्ति** *(अंगुष्ठाभ्यां नमः)*, **ॐ पिशाचि** *(तर्जनीभ्यां नमः)*, **ॐ लिखे** *(मध्यमाभ्यां नमः)*, **ॐ स्वाहा** *(अनामिकाभ्यां नमः)*, **ॐ हस्तिपिशाचि लिखे** *(कनिष्ठिकाभ्यां नमः)*, **ॐ हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा** *(करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)*।

*हृदयादिन्यास*– **ॐ हस्ति** *(हृदयाय नमः)*, **ॐ पिशाचि** *(शिरसे स्वाहा)*, **ॐ लिखे** *(शिखायै वषट्)*, **ॐ स्वाहा** *(कवचाय हुम्)*, **ॐ हस्ति–पिशाचि लिखे** *(नेत्रत्रयाय वौषट्)*, **ॐ हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा** *(अस्त्राय फट्)*।

*ध्यान*–

**चतुर्भुज रक्ततनुं त्रिनेत्रं पाशांकुशौ मोदकपात्रदंतौ।**
**करैर्दधानं सरसीरुह स्थमुन्मत्तमुच्छिष्ट गणेशमीडे।।**

यदि आगे तांत्रिक उपासना की जानी हो, तो निम्नलिखित कवच का पाठ करने से लाभ होता है। कवच इस प्रकार है–

**ॐ आमोदश्च शिरः पातु प्रमोदश्च शिखोपरि।**
**सम्मोदो भ्रूयुगे पातु भ्रूमध्ये च गणाधिपः।।**
**गणक्रीडश्चक्षुर्युगं नासायां गणनायकः।**
**जिह्वायां सुमुखः पातु ग्रीवायां दुर्मुखः सदा।।**
**विघ्नेशो हृदये पातु बाहुयुग्मे सदा मम्।**
**विघ्नकर्त्ता च उदरे विघ्नहर्त्ता च लिंगके।।**
**गजवक्त्रः कटीदेशे एकदन्तो नितम्बके।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लम्बोदरः सदा पातु गुह्यदेशे ममारुणः।।
व्यालयज्ञोपवीती मां पातु पादयुगे सदा।
जापकः सर्वदा पातु जानुजंघे गणाधिपः।।
हारिद्रः सर्वदा पातु सर्वांगे गणनायकः।।

वैसे तो कवच का पाठ कभी भी किया जा सकता है, किन्तु विद्वानों का मत है कि मंत्र के जप से पहले इसका पाठ किया जाना चाहिए। विद्वानों का मत सर्वोपरि है, अतः उनका आदेश अवश्य मानना चाहिए।

□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८

# महामृत्युंजय साधना और शिव

**जातस्य हि ध्रुवोर्मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च।**

'श्रीमद्भगवद् गीता' में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है।

श्रीकृष्ण के इस कथन का आशय है कि जन्म एवं मृत्यु का चक्र निरंतर घूमता रहता है यानी प्राणी बार-बार जन्म लेता और मरता है। जो व्यक्ति अपनी पूर्णायु भोगकर मरता है, उसकी मृत्यु विशेष शोकप्रद नहीं होती। किन्तु अल्पायु में रोगादि के कारण अथवा अकालमृत्यु धीर-गंभीर, संयमी तथा ज्ञानी लोगों को भी विचलित कर देती है। जो पूर्णायु में मरता है, वह दूसरी योनि में प्रवेश कर जाता है, लेकिन जो अल्पायु में किसी दुर्घटना आदि का शिकार होकर मरता है, उसकी आत्मा वायुमंडल में विचरती रहती है। ऐसी मृत्यु से निवारण का सबसे सरलतम उपाय है, महामृत्युंजय भगवान महादेव की भक्ति। यही साधना है, जिसे साधकर जानलेवा रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है तथा अल्पायु की संभावित मृत्यु को टाला जा सकता है। जो व्यक्ति महामृत्युंजय भगवान की साधना करेगा, उसे जीवन में अंधेरा नहीं, बल्कि प्रकाश मिलेगा।

मनुष्य की सबसे बड़ी चिन्ता शरीर की स्वस्थता, मानसिक प्रसन्नता, दीर्घजीवन एवं मृत्यु से रक्षा की होती है। इस चिंता का निवारण महामृत्युंजय भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र के जपादि से सहज ही हो जाता है। इसके संबंध में एक पौराणिक कथा विख्यात है—एक समय मथुरा नगर में यादव वंश में दाशान्ह नामक राजा हुए। वे सद्गुणी और मन के उदार थे। उनमें संसार का कोई भी दुर्गुण नहीं था। महाराज बड़े महान थे तथा सभी लोगों से बराबरी का व्यवहार करते थे।

दाशान्ह अपने समय के चक्रवर्ती राजा थे। उनके राज्य में कोई दुःखी नहीं था। वे प्रजा को अपनी संतान के समान प्रेम और न्याय देते थे। उनका मन सदा प्रजा की भलाई में लगा रहता था। महाराज का विवाह काशी नरेश की पुत्री कलावती के साथ हुआ था। वह बहुत सुंदर, सुशील तथा पतिव्रता स्त्री थीं। एक दिन महाराज ने



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीव्र कामेच्छा होने के कारण रानी कलावती को अपने पास बुलाया। रानी उस समय व्रत धारण किए थीं। इस कारण उन्होंने महाराज से व्रत–समय के बीत जाने तक अपने शरीर का स्पर्श न करने की प्रार्थना की। मगर महाराज की कामेच्छा उस समय प्रबल हो गई थी, इस कारण वे अपने मन पर अंकुश न लगा सके।

उन्होंने रानी के लाख निवेदन करने पर भी उनकी एक न सुनी तथा कामेच्छा पूर्ण करने के लिए रानी का आलिंगन किया। फलतः महाराज का शरीर जल गया। उनके पूरे शरीर में फफोले पड़ गए। इससे महाराज को बहुत पीड़ा हुई। उनकी यह अवस्था देख, रानी ने भरे कंठ से कहा, "स्वामी! मैं अपने गुरु दुर्वासा के निर्देशानुसार श्री शिव पंचाक्षरी मंत्र का अनुष्ठान कर रही हूं और आज व्रती हूं। मेरा तन–मन श्री शिव के पूजन–भजन में रमा है। आप सदा मांस–मदिरा का सेवन करते हैं, इस कारण यह घटना घटी है। गुरुदेव की कृपा के कारण मुझे तीनों काल का ज्ञान है। आप जप, तप, अर्चना, वंदना तथा पूजन आदि उत्तम कार्य नहीं करते। ऐसी अवस्था में आपको भविष्य में बहुत दुःख भोगने पड़ेंगे।"

रानी की बात सुनकर महाराज को अपने किए पर बहुत पछतावा हुआ। वह बोले, "प्रिय! जिस पंचाक्षरी मंत्र के जप का तुम अनुष्ठान कर रही हो, वह पवित्र मंत्र मुझे भी बताओ, जिससे मैं स्वयं को पापों से मुक्त कर सकूं।"

"महाराज ! मैं आपकी पत्नी हूं, इसलिए मुझे आपको यह मंत्र देने का कोई अधिकार नहीं है। इस मंत्र की दीक्षा लेने के लिए आप महर्षि वशिष्ठ, मुनि वामदेव या महर्षि गर्ग आदि की शरण में जाइए और उनसे शिव पंचाक्षरी मंत्र की दीक्षा लीजिए।"

अपनी रानी के इन वचनों को सुनकर महाराज उनके साथ महर्षि गर्ग के पास गए। उन्होंने महर्षि के चरणों में प्रणाम किए और दोनों हाथ जोड़कर विनती की, "मुनिवर ! मैंने जीवन में आज तक कोई पुण्य नहीं किया और न ईश्वर की सेवा ही की। अब मैं अपने पापों से परेशान होकर आपकी शरण में आया हूं। हे गुरुवर! कृपा करके आप मुझे अपना सेवक बना लीजिए और मुझे श्री शिव पंचाक्षरी मंत्र की दीक्षा प्रदान कीजिए।"

महाराज की करुणामय विनती सुनकर महर्षि गर्ग उन दोनों को साथ लेकर नदी तट पर गए और महाराज से संकल्प आदि कराकर, श्री शिव पंचाक्षरी मंत्र 'ॐ नमः शिवाय:' की विधि से उन्हें अवगत कराकर पूजन कराया।

यह पूजन मंत्र इस प्रकार है–

**मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारूपद्मासनस्थं,**
**वामांकारूढगौरी निबिड कुचभराभोगगाढोपगूढम्।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वालिंकारकान्तं वरपरशु मृगाभीति हस्तं त्रिनेत्रं,
वंदे बालेन्दुमौलि गजवदनगुहाश्लिष्टपाशर्वं महेशम्॥
साम्ब परमेश्वरं ध्यायामि
आवाहयामि परमेश्वराय नमः

आसनं समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि, अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, मधुपर्कं समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि, वस्त्रालंकारान् समर्पयामि, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, गंधं धारयामि, ॐ भवाय देवाय नमः, ॐ शर्वाय देवाय नमः, ॐ ईशानाय देवाय नमः, ॐ पशुपतये देवाय नमः, ॐ रुद्राय देवाय नमः, ॐ उग्राय देवाय नमः, ॐ भीमाय देवाय नमः, ॐ महते देवाय नमः, पंचाक्षरी साम्ब परमेश्वर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, परमेश्वराय नमः, धूपमाघ्रापयामिति, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं समर्पयामि, मध्ये मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, तांबूलं च समर्पयामि, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
परमेश्वराय नमः मंत्रपुष्पं समर्पयामि। *(मंत्रपुष्प)*
प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि। *(परिक्रमा–नमस्कार)*
समस्त राजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि।

अनया पूजया भगवान सर्वदेवात्मकः साम्बपरमेश्वरः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुरायतनार्चनम॥

*(इति सामान्याध्योदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्पयेत्)*

महाराज दाशान्ह एवं उनकी रानी ने मन, वचन और कर्म से महामृत्युंजय शिव की पूजा की तथा गुरुदक्षिणा में बहुत–सा धन, रत्न आदि का संकल्प किया। उनकी भावना देखकर महर्षि गर्ग ने महाराज के सिर पर अपना हाथ रख विधिवत् श्री शिव पंचाक्षरी मंत्र का उपदेश देकर उन्हें आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त कर, मंत्र का जप और अनुष्ठान करने के पश्चात् महाराज दाशान्ह का शरीर पुष्ट एवं तेजोमय हो गया। उनके मन को दिव्य ज्ञान की प्राप्ति भी हुई। तब महाराज के शरीर से सैकड़ों कौए बाहर निकले और देखते–देखते खाक हो गए। काकपक्षियों को इस प्रकार भस्म होते देख महाराज ने महर्षि गर्ग से पूछा, ''गुरुदेव! यह सब क्या लीला है?''



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब महर्षि गर्ग ने राजा से कहा, "राजन्! तुम्हारे अनेक जन्मों के पाप तुम्हारे शरीर में घुसे थे, वे भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र के पवित्र प्रभाव से बाहर निकलकर भस्म हो गए। ये गोहत्या, ब्रह्महत्या, बालहत्या आदि के अनेक जन्मों के तुम्हारे पाप थे जो अब समाप्त हो गए हैं।"

गर्ग के ये वचन सुनकर, महाराज ने उन्हें प्रणाम किया और उनकी आज्ञा लेकर अपने पूर्ववत् स्थान को लौट आए। इस प्रकार वे विधि-विधान से 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप करने लगे। यही नहीं, उन्होंने अपने राज्य की समस्त प्रजा को श्रीशिव की पूजा करने की प्रेरणा दी और शिवभक्ति का खूब प्रचार किया।

समस्त प्रजाजनों को द्वंद्वगुणों से छुड़ाकर महाराज ने उन्हें भगवान शिव की आराधना में लगाया। फिर एक दिन, उत्तम समय में जब महाराज ने अपनी पत्नी का स्पर्श किया, तो यह स्पर्श उन्हें चंद्रमा की तरह शीतल प्रतीत हुआ।

❑❑



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

10

# महामृत्युंजय मंत्रों का स्वरूप

भगवान महामृत्युंजय के चरणों में स्वयं को अर्पित कर देना, उनके गुणगान एवं ध्यान-चिंतन में तन्मय हो जाना तथा उनके प्रति अनन्य निष्ठा-भक्ति रखना, यही सबसे बड़ी और फलदायी साधना है। अस्तु: निम्नलिखित मंत्रों का चाहे विनियोग, ध्यान, प्राणायाम, मुद्रा आदि के साथ जप किया जाए अथवा अटल भक्तिभाव से केवल मंत्र-जप हो, दोनों ही फलदायी हैं। सफलता तो साधक की निष्ठा, सामर्थ्य और देवता के प्रति समर्पण भाव पर आधारित है। जो लोग असमर्थतावश केवल मंत्र जपते हैं, वे सदा सफल होते हैं। किन्तु जो साधक समर्थ रहते हुए भी केवल सुविधा के लोभ से चातुर्यवश नाममात्र के जप से ही लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, वे कभी सफल नहीं होते। उनका जप करना निरर्थक होता है। इसका कारण यह है कि भगवान महामृत्युंजय अंतर्यामी हैं, वे साधक के मनोभावों को अच्छी तरह समझ लेते हैं।

आस्तिक समाज में रोग-निवृत्ति के लिए भगवान शिव की उपासना प्रसिद्ध है। ब्राह्मणों द्वारा रोग शांति के लिए महामृत्युंजय जप का निर्देश है। ज्योतिषशास्त्र में अनिष्ट ग्रह की शांति के लिए भी इसी प्रकार का सर्वत्र उल्लेख प्राप्त होता है।

## महामृत्युंजय मंत्र के रूप

महामृत्युंजय मंत्र के कुछ रूप यहां दिए जा रहे हैं, इनमें से किसी का भी जप करना अथवा करवाना अत्यंत श्रेयस्कर है। मारकेश की दशा आदि ग्रह पीड़ा से भी ये मंत्र निश्चित ही मुक्ति दिलाते हैं।

❑ *एकाक्षरी मृत्युंजय मंत्र–*

**हौं।**

इसे 2 लाख की संख्या में जप करके पुरश्चरण करें।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

□ *त्र्यक्षरी मृत्युंजय मंत्र–*

**ॐ जूं सः।**

इस मंत्र को 3 लाख जप द्वारा पुरश्चरण करें। यह रोग द्वारा मृत्यु की संभावना को समाप्त कर देता है। कुछ विद्वानों का मत है कि इस मंत्र के एक लाख जप के पश्चात् हवन (घी–मधु से) करने से इसका दिव्य प्रभाव परिलक्षित होता है। यह मंत्र रोग, अशांति, मृत्यु, दुर्घटना तथा वायव्य दोषों को शांत करके व्यक्ति को सौभाग्य, संपदा, मोक्ष और अनेक प्रकार की उपलब्धि प्रदान करता है। यदि दैनिक पूजा में इस मंत्र की नित्य एक माला फेर ली जाए, तो बहुत शुभ फल प्राप्त होता है। नीचे मंत्र का विनियोग एवं ध्यान दिया जा रहा है–

*विनियोग–* **ॐ अस्य त्र्यक्षरात्मक मृत्युंजयमंत्रस्य कहोलऋषिः, गायत्री छंदः, मृत्युंजयो महादेवो देवता, जूं बीजं, सः शक्तिः, सर्वेष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

*ध्यान–* **चन्द्रार्काग्नि विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितम्।**
**मुद्रापाश मृगाक्ष सूत्र विलसत्पाणिं हिमांशु प्रभम्।।**
**कोटिरेन्दु गलत्सुधा प्लुततनुं हारादि भूषोज्ज्वलम्।**
**कान्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजयं भावयेत्।।**

□ *चतुक्षरी अमृतमृत्युंजय मंत्र–*

**ॐ हौं जूं सः।**

यह चार अक्षरों का मंत्र है। इसका जप करने से ज्वर आदि के कारण शरीर में बढ़े हुए ताप की शीघ्र शांति हो जाती है। इसका पुरश्चरण चार लाख जप के द्वारा किया जाता है।

□ *अष्टाक्षरी मृत्युंजय मंत्र–*

**ह्रीं ॐ नमः शिवायः ह्रीं।**

आठ अक्षरों वाले इस मंत्र का विनियोग एवं ध्यान इस प्रकार है–

*विनियोग–* **ॐ अस्य श्री शिवाष्टाक्षरमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छंदः, उमापतिदेवता, सर्वेष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

*ध्यान–* **बंधूक सन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्,**
**त्रिशूलधारिणं वंदे चारु हासं सुनिर्मलम्।**
**कपालधारिणं देव वरदाभय हस्तकम्,**
**उमासहितं शंभुं ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा।।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❑ *नवाक्षरी मृत्युंजय मंत्र–*

**ॐ जूं सः पालय पालय।**

125 हजार जप द्वारा इस मंत्र का पुरश्चरण करें। यह जीवनदाता तथा रोगों का निवारण करने वाला बहुउपयोगी मंत्र है।

❑ *दशाक्षरी अमृतमृत्युंजय मंत्र–*

**ॐ जूं सः मां पालय पालय।**

यदि किसी दूसरे व्यक्ति के लिए मंत्र जप करना हो, तो 'मां' के स्थान पर रोगी व्यक्ति का नाम बोलना चाहिए। यह मंत्र सभी प्रकार के रोगों से रक्षा करने वाला है।

❑ *पंचदशाक्षरी मृत्युंजय मंत्र–*

**ॐ जूं सः मां पालय पालय सः जूं ॐ जूं सः।**

इस मंत्र के जप सें सभी प्रकार के मानसिक, शारीरिक और भौतिक कष्ट दूर हो जाते हैं। इसका जप किसी पुरोहित आदि से कराना चाहिए।

❑ *त्र्यम्बक वैदिक महामृत्युंजय मंत्र–*

**त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।**

अकालमृत्यु, अल्पायु, शत्रुभय, रोगभय, दुर्घटना, आक्रमण और युद्धभय आदि संकटों के निवारण हेतु इस मंत्र का जप परम कल्याणकारी सिद्ध होता है। अनुष्ठान रूप में इसका एक लाख की संख्या में जप तथा हवन करना चाहिए। जप के पूर्व प्रतिदिन शिव–प्रतिमा की पूजा करना आवश्यक है। प्रतिमा (शिवलिंग) पर बेलपत्र अवश्य चढ़ाना चाहिए।

मंत्र का विनियोग एवं ध्यान इस प्रकार है–

*विनियोग*–**ॐ अस्य त्र्यम्बक मंत्रस्य वशिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुपछंदः त्र्यम्बक पार्वती पतिर्देवता, त्र्यं बीजं, वं शक्तिः, कं कीलकं, सर्वेष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

*ध्यान*– **हस्ताभ्यां कलश द्वयामृत रसैराप्लावयन्तं शिरौ,**
**द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्ष वलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।**
**अंकन्तस्त करद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवम्,**
**स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दु मुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।**

❑ *तैंतीसाक्षरी मृत्युंजय मंत्र–*

उपरोक्त मंत्र में पहले 'ॐ' लगाने से 33 अक्षरी यह मंत्र बनता है। 'शांतिरत्न' नामक ग्रंथ में इसके बारे में कहा गया है–



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**त्र्यम्बकस्य विधानं तु कीर्तयिष्ये मुनीश्वराः।**
**यथोक्तविधिना युक्तं संस्मृतं ब्रह्मणा पुरा॥**

मंत्र का उद्धार–पद्य इस प्रकार है–

**मृत्युंजयस्त्रिधा प्रोक्त आद्यो मृत्युंजयः स्मृतः।**
**मृतसंजीवनी चैव महामृत्युंजयस्तथा॥**
**मृत्युंजयः केवलः स्यात् पुटितो व्याहृतित्रयैः।**
**तारं त्रिबीजं व्याहृत्य पुटितो मृतजीवनी॥**
**तारं त्रिबीजं व्याहृत्य पुटितैस्तैस्त्रियम्बकः।**
**महामृत्युंजयः प्रोक्तः सर्वमंत्रविशारदैः॥**

## त्र्यम्बक मंत्रों का स्वरूप

ब्रह्माजी द्वारा शास्त्रोक्त विधान के अनुसार त्र्यम्बक मंत्र तीन प्रकार का होता है–मृत्युंजय, मृतसंजीवनी और महामृत्युंजय।

इनमें पहला मंत्र व्याहृतित्रय 'भूर्भुवः स्वः' से संपुटित होता है। इसे 'मृत्युंजय' भी कहते हैं। दूसरे मंत्र में 'ॐ, त्रिबीज–हौं जूं सः' और 'व्याहृतित्रय' का संपुट होता है। इसे 'मृतसंजीवनी' कहते हैं।

उपर्युक्त द्वितीय मंत्र में जोड़े गए त्रिबीज और व्याहृतित्रय के प्रत्येक अक्षर के पहले 'ॐ' लगाया जाता है। यह तीसरा मंत्र 'शुक्राचार्य द्वारा आधारित है। त्र्यम्बक मंत्रों के स्वरूप इस प्रकार हैं–

❑ *मृत्युंजय*–**ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। ॐ स्वर्भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ॥**

❑ *मृतसंजीवनी*–**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ॥**

❑ *महामृत्युंजय*–**ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ॥**

## शुक्र विद्या

महामृत्युंजय मंत्र के बारे में कहा गया है–



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**आदौ प्रासादबीजं तदनु भृतिहरं तारकं व्याहृतीश्च,**
**प्रोच्चार्य त्र्यम्बकं यो जपति भृतिहरं भूय एवैतदाद्यम्।**
**कृत्वा न्यासं षडंग स्त्रवदमृतकरं मण्डलान्तः प्रविष्टं,**
**ध्यात्वा योगीशरुद्रं स जयति मरणं शुक्रविद्याप्रसादात्।।**

अर्थात् उपरोक्त महामृत्युंजय मंत्र का षडंगन्यास एवं योगीश्वर शिव का ध्यान करके जो व्यक्ति जप करता है, वह शुक्र विद्या की कृपा से मृत्यु को जीत लेता है। अतएव इस मंत्र को 'शुक्र विद्या' भी कहते हैं।

## मृतसंजीवनी विद्या

कहा जाता है कि महर्षि शुक्राचार्य को अमृतसिद्धि थी। वे असुरों के गुरु थे। जब देवताओं एवं असुरों में युद्ध होता था और देवताओं के शस्त्रास्त्र से असुर घायल होते या मृत्युमुख में चले जाते थे, तो शुक्राचार्य अपनी अमृतसिद्धि के द्वारा उन्हें पुनः जीवित कर देते थे। तंत्रशास्त्र में यह विद्या मृत्युंजय मंत्र और गायत्री मंत्र के योग से बनी है। मंत्र का स्वरूप इस प्रकार है—

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् धियो यो नः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।।**

अन्य कल्पों में यह मंत्र इस प्रकार बताया गया है—

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे तत्सवितुर्वरेण्यं सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् भर्गो देवस्य धीमहि उर्वारुकमिव बंधनान् धियो यो नः प्रचोदयात् तृम्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।।**

असाध्य रोग से निवृत्ति पाने के लिए इस मंत्र का जप करने तथा शिवलिंग पर मट्ठे से अभिषेक करने पर शीघ्र आराम मिलता है। मंत्र का विनियोग एवं न्यासादि इस प्रकार है—

*विनियोग*—**अस्य श्रीलघुमृत्युंजयमंत्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठा ऋषयो, गायत्र्युष्णिगनुष्टुपछंदासि, श्रीसदाशिव महामृत्युंजयरुद्रो देवता, मम सर्वरोगनिवारणार्थे जपे विनियोगः।**

*ऋष्यादिन्यास*—**वामदेवकहोलवशिष्टेभ्यो ऋषिभ्यै नमः** *(शिरसि)*, **गायत्र्युष्णिगनुष्टुपछंदोभ्यो नमः** *(मुखे)*, **श्रीसदाशिव मृत्युंजयरुद्रदेवतायै नमः** *(हृदि)*, **ॐ बीजाय नमः** *(गुह्ये)*, **सः शक्तये नमः** *(पादयो)*, **जूं कीलकाय नमः** *(नाभौ)*, **विनियोगाय नमः** *(सर्वांगे)*।

*करन्यास*—**ॐ** *(अंगुष्ठाभ्यां नमः)*, **जूं** *(तर्जनीभ्यां नमः)*, **सः** *(मध्यमाभ्यां*



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमः), ॐ (अनामिकाभ्यां नमः), जूं (कनिष्ठिकाभ्यां नमः), सः (करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)।

षडंगन्यास–ॐ (हृदयाय नमः), जूं (शिरसे स्वाहा), सः (शिखायै वषट्), ॐ (कवचाय हुम्), जूं (नेत्रत्रयाय वौषट्), सः (अस्त्राय फट्)।

ध्यान– हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः,
सिंचन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सुकुम्भौ करौ।
अक्षस्त्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्द्रस्त्रवत-
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युंजयं शंकरम्॥

## मृत्युंजय मंत्र के अन्य स्वरूप

'वामदेव संहिता' के अनुसार–'ॐ जूं सः' बीज से युक्त वैदिक मंत्र, ऊर्ध्वाम्नाय का मंत्र केवल त्र्यम्बक मंत्र और 'मेरुतंत्र' के अनुसार एवं उभ्याम्नाय का मंत्र आदि में 'ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः' से युक्त और अंत में यही बीज विपरीत रहने पर तथा मध्य में त्र्यम्बक मंत्र रहने से बनता है। 'शुक्ल यजुर्वेद संहिता' में दो त्र्यम्बक मंत्रों का एक मंत्र दिया गया है।

कुछ विद्वानों और आचार्यों के मतानुसार–दोनों मंत्रों का जप साथ-साथ होना चाहिए, क्योंकि एक मंत्र पुष्टिकारक है तथा दूसरा रक्षाकारक। यह पूरा मंत्र इस प्रकार बनता है–

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बंधनादितो मुक्षीय मामुतः॥

इस मंत्र के आरम्भ और अंत में बीजमंत्र भी लगाए जा सकते हैं।

तंत्रों में एक मंत्र को अन्य अपेक्षित मंत्रों के साथ मिलाकर जप करने के भी निर्देश मिलते हैं। 'शताक्षरी गायत्री' में मृत्युंजय मंत्र का स्वरूप इस प्रकार दिया गया है–

(1)

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो न प्रचोदयात्॥

(2)

ॐ जातवेदसेसुनवाम सोममरातीयतोनिदहाति वेदः।
स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेवसिंधु दुरितात्यग्निः॥



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## (3)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

'प्रपंचसार' संग्रह में कहा गया है कि उपरोक्त मंत्र के शुरू में 'ॐ भूर्भुवः स्वः' तथा अंत में 'स्वः भुवः भूः ॐ' लगाकर जप करने से इहलोक और परलोक दोनों में सुख-शांति प्राप्त होती है। 'वैरिंचकल्प' में तीन अनुष्टुप् मंत्रों का प्रयोग किया गया है, जिसमें ब्रह्मा, नृसिंहविष्णु और त्र्यम्बकरुद्र तीनों के वैदिक मंत्र आते हैं। यथा–

ॐ हंसात्मको यो अपामग्नेस्तेजसा दीप्यमानः।
स नो मृत्योस्त्रायतां नमो ब्रह्मणे विश्वनाभिः।।
ॐ उग्रं वीरं महाविष्णु ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्यु नमाम्यहम्।।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

निम्न मंत्र विभिन्न मंत्रों और बीजमंत्रों के योग से बना है। यह भी मृत्यु पर विजय दिलाने वाला तथा सर्वरोग नाशक है। क्योंकि यह एक बड़ा मंत्र है, अतः इसका जप स्वयं नहीं करना चाहिए, बल्कि किसी विद्वान या योग्य ज्योतिषाचार्य से कराना चाहिए। शब्दों व उच्चारण की त्रुटियों से मंत्र का कोई भी लाभकारी प्रभाव नहीं होता। मंत्र इस प्रकार है–

ॐ भूः।
ॐ भुवः।
ॐ स्वः।
ॐ महः।
ॐ जनः।
ॐ तपः।
ॐ सत्यं।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं।
ॐ घृणिः सूर्य आदित्य।
ॐ तत्सत्।
ॐ हंसात्मको यो अपामग्नेस्तेजसा दीप्यमानः स नो मृत्योस्त्रायतां नमो ब्रह्मणे विश्वनाभिः हाहि हाहि हाहि हावु हावु हावु।
ॐ ह्री हसः सोऽहं स्वाहा।
ॐ भुवः भर्गो देवस्य धीमहि।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ नमो नारायणाय।

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युंमृत्युं नमाम्यहं भ्राजा भ्रजा वव्रे ववायवों आधातोरण्याय वर्यो सहस्त्रज्वालिनी मृत्युनाशिनी स्वाहा।

ॐ सुवः धियो यो नः प्रचोदयात् आमद्य।

ॐ ह्रीं।

ॐ नमः शिवाय त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ववावं ववावं ववं वेवं ववं व स जझदौं ह्रीं अरे ववं मेवरयु धावया दं ज ॐ जुं सः स्वौं हंसः मां पालय पालय ह्लादय ह्लादय मृत्योर्मोचय मोचय सोऽहं स्वौं ईं हंसः जुं।

ॐ ईं स्वौं हंसः मां पालय पालय ह्लादय ह्लादय मृत्योर्मोचय मोचय सोऽहं स्वौं ईं सः जुं।

ॐ परो रजसे सावदों आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

## विलोमाक्षरी त्र्यम्बक मंत्र

तांत्रिक विधानों में मंत्र-जप के लिए तथा उसमें विशेष चैतन्य लाने के लिए कई नए-नए विधान बताए गए हैं। इसी दृष्टि से विलोमाक्षरों द्वारा त्र्यम्बक मंत्र जपने की प्रक्रिया का उल्लेख तंत्रग्रंथों में मिलता है। मंत्र का स्वरूप इस प्रकार है–

ॐ त् ता मृ मा य क्षी र्मु त्यो मृ न् ना न्ध ब व मि क रु र्वा उ।
म् न र्ध व ष्टि पु न्धिं ग सु हे म जा य कं म्ब त्र्य।।

इसके आसपास श्रीओंकार, व्याहृति आदि बीजों को लोम-विलोम रूप से लगाया जा सकता है।

## संक्षिप्त मृत्युंजय मंत्र

सरलता की दृष्टि से यहां एक पौराणिक एवं संक्षिप्त मृत्युंजय मंत्र दिया जा रहा है, जिसे जपना सरल है। यह पूर्वोक्त मंत्रों की तरह प्रभावी भी है–

ॐ मृत्युंजय महारुद्रत्राहि मां शरणागतं।
जन्ममृत्युजराव्याधिपीडितं कर्मबन्धनैः।।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

11

# जीवन-रक्षक महामृत्युंजय विधि

'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' के अनुसार–जो पैदा हुआ है, उसकी मृत्यु ध्रुव (सत्य) है। किन्तु यदि मृत्यु असमय ही आ जाए, तो वह किसी को इष्ट नहीं है। पूर्वकाल में ऋषि-मुनि सिद्धि प्राप्त कर, योग के बल पर दीर्घायु प्राप्त करने में सफल हो जाते थे। 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत' अर्थात् देवताओं ने ब्रह्मचर्य और तप से ही मृत्यु को दूर किया था।

किन्तु रोगादि से ग्रस्त रहने पर इहलोक और परलोक की कोई साधना नहीं की जा सकती। स्वस्थ तन तथा स्वस्थ मन ही जीवन के वास्तविक धन हैं। मृत्यु एवं उसके सहयोगी रोगों से बचे रहने के लिए 'अथर्ववेद' में निम्न बात कही गई है–

**अन्तकाय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम्।**
**इहाममस्तु पुरुषः सहासुना सूर्यस्त भागे अमृतस्य लोके॥**
**उत्क्रामातः पुरुष माव पत्या मृत्योः पड्वीशमवमुंचमानः।**
**माच्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य संदृशः॥**
**उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।**
**आ हि रोहेमममृतं सुखं रथमथजीविर्विदथमा वदासि॥**

समस्त विश्व-संहारक ईश्वर को प्रणाम है। हे मनुष्य ! तेरे प्राण और अपान तेरे शरीर में सुख से चिरकाल तक रहें। तेरा जीवनीय प्रकाशमय सूर्य अमृतमय दीर्घकाल तक विचरता रहे। हे मनुष्य ! तू मृत्यु से ऊपर उठ, अधःपतन की ओर मत जा। इन मृत्युबंधनों से स्वयं को मुक्त कर। दीर्घजीवन प्राप्त कर और मर्त्यलोक से अपने आपको दूर मत कर। हे मनुष्य ! उन्नति कर, अवनति मत कर। इसी के लिए तुझे जीवन और बल प्रदान करता हूं। तेरा यह उत्तम शरीररूपी रथ अजरत्व-अमरत्व प्रदायक है। इसमें रहते हुए ही अमरत्व प्राप्त कर तथा अभ्युदय



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का अनुभव हो जाने पर दूसरों को भी योग्य मार्ग दिखा।

ऐसे मंत्रों से स्पष्ट है कि समस्त मनुष्यों को स्वयं मृत्यु पर विजय पाकर आत्मकल्याण तथा लोककल्याण के लिए अग्रसर होना चाहिए।

एक पौराणिक कथा के अनुसार—विष्णुजी ने भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने के लिए सहस्रकमलों से उनकी पूजा की, किन्तु अंतिम समय पर एक कमलपुष्प कम पड़ गया। विष्णुजी अपने स्थान से उस समय उठ भी नहीं सकते थे, जब तक पूजा संपूर्ण न हो जाए। इसके समाधान हेतु उन्होंने एक तीखे बाण की नोक से अपना एक नेत्र निकालकर शिवजी को कमलपुष्प रूप में अर्पित कर दिया।

विष्णुजी द्वारा की गई पूजा संपूर्ण हुई।

शिवजी प्रसन्न हुए। उन्होंने विष्णु को नेत्रदान दिया, चक्रदान दिया तथा असुरों के प्रहारों से बचने एवं अमृतत्त्व प्राप्त करने के लिए महामृत्युंजय मंत्र भी प्रदान किया। बाद में यही मंत्र विष्णु ने देवताओं को बताया, जिससे वे अजर-अमर बन गए।

## महामृत्युंजय मंत्र-जप के नियम

मंत्र-जप के लिए सबसे पहले संकल्प किया जाता है कि किस कार्य हेतु कितनी संख्या में जप करना है। फिर उतनी संख्या में जप अवश्य किया जाना चाहिए, जितने का संकल्प लिया गया हो। इसके साथ ही जप के लिए पहले से स्थान भी निश्चित कर लें। जिस स्थान पर जप का शुभारंभ किया जाए, अंत भी वहीं होना चाहिए। उस निश्चित स्थान पर जितनी अधिक शुद्धता और पवित्रता रहेगी, जप में मन भी उतना ही अधिक लगेगा।

जप-स्थान का वातावरण अत्यंत शांतिपूर्ण हो। इसके लिए प्रातःकाल चार से छह बजे तक का समय उत्तम है। जप-नियम में समय की नियमितता भी अनिवार्य है।

नित्य प्रातःकाल शौच-स्नानादि से निवृत्त होकर, स्वच्छ एवं पवित्र वस्त्र पहनें। कम्बल या ऊन का आसन बिछा लें। सामने श्री शिव का चित्र रखें। इसके अभाव में अपने इष्टदेव का चित्र भी रखा जा सकता है। जप के प्रारम्भ में ध्यान और मानसिक प्रार्थना कर लेनी चाहिए। स्वयं को अनुशासनबद्ध रखकर मंत्र-जप करने से आत्मानुशासन बढ़ता है और विघ्नों को सहन करने की शक्ति आती है। जप-संख्या ज्ञात करने के लिए रुद्राक्ष की माला प्रयोग करनी चाहिए। महामृत्युंजय के जितने भी मंत्र बताए गए हैं (आगे भी बताए जाएंगे), उनमें से किसी भी एक



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंत्र और उसकी उपासना का चुनाव पहले से कर लेना चाहिए। उपासनाकाल में मंत्रों को नहीं बदलना चाहिए। जब तक मंत्र कंठस्थ याद न हो, उसका उच्चारण शुद्ध न हो, तब तक कागज पर लिखकर या पुस्तक सामने रखकर मंत्र बोलें। बाद में मन में स्मरण करें।

गुप्त रूप से मंत्र का जप करना लाभप्रद है। जप के समय मन को स्थिर बनाने का प्रयत्न करना चाहिए तथा व्यर्थ के विचारों का त्याग कर देना चाहिए। इसके लिए भगवान शिव के स्वरूप और मंत्र के अर्थ का चिंतन करना ही उत्तम है।

मंत्र का जप मन-ही-मन करना चाहिए। न तो मुख से कोई आवाज निकले और न ही किसी को होंठ हिलते दिखाई दें। माला फिऱाने में भी कोई आवाज नहीं होनी चाहिए। जप पूर्ण हो जाने पर पुनः भगवान का ध्यान करके 'श्रीमहामृत्युंजय देवतार्पणमस्तु' कहकर जल-अर्पण करना चाहिए।

तंत्रशास्त्रों में मंत्र-जप के साथ ही हवन, अभिषेक, कवच, न्यास एवं मुद्रादि का विशेष उल्लेख रहता है। इनमें हवन विधि के अंतर्गत हवनीय द्रव्यों का प्रयोग ही प्रमुख है। शास्त्रों में इसका उल्लेख इस प्रकार है—

**दुग्धयुक्तैः सुधाखण्डैर्मन्त्री मासं सहस्त्रकम्।**
**आराधितेऽग्नौ जुहुयाद् विधिवद्विजितेंद्रियः।।**
**सन्तुष्टः शंकरस्तेन सुधाप्लावितविग्रहः।**
**आयुरारोग्य संपत्तियशः पुत्रान् विवर्धयेत्।।**

अर्थात् यदि मनुष्य जितेन्द्रिय होकर मंत्र द्वारा प्रतिदिन कच्चे दूध के साथ गिलोय के टुकड़ों की एक हजार आहुतियां अग्नि को समर्पित करे तो शिवजी प्रसन्न होकर उसे सुस्नात शरीर, आयु, आरोग्य, सम्पत्ति, यश और कई पुत्र प्रदान करते हैं।

## जीवन-रक्षा के उपाय

महामृत्युंजय मंत्र द्वारा विभिन्न उपादानों से हवन करने पर मनुष्य के अनेक कष्ट दूर हो जाते हैं। इन्हें प्रतिदिन क्रमवार रूप में नीचे दिया जा रहा है—

- रविवार को किसी भी महामृत्युंजय मंत्र का 10 हजार जप करके घी, जौ, धतूरे के बीज व पुष्पादि से दशांश हवन करने पर स्तंभन होता है।
- सोमवार को 10 हजार जप करके घी, जौ, लाजा और पत्ते वाले शाक से दशांश हवन करने पर मोहन होता है।
- मंगलवार को जप के उपरांत घी, श्रीपर्णी, मधु, श्रीफल और इमली से हवन करने पर शत्रु द्वारा पहुंचाई जाने वाली पीड़ा समाप्त हो जाती है।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

□ बुधवार को मृत्युंजय मंत्र का 10 हजार जप करके घी, शतावरी, त्रिकंटक और बिल्वप्रत्र द्वारा हवन करने से आकर्षण होता है।

□ गुरुवार को पूर्वोक्त संख्या में मंत्र का जप करके घी, कमलगट्टे और चंदन आदि से हवन करने पर वशीकरण होता है।

□ शुक्रवार को इतनी ही संख्या में जप करके, श्मशान में जाकर हवन करने से उच्चाटन होता है।

□ शनिवार को 10 हजार मंत्र जपकर घी, दूध, बैंगन और धतूरे के पुष्पादि से हवन करने पर परम शांति प्राप्त होती है।

□ शनिवार अथवा मंगलवार के दिन पीपल-वृक्ष के नीचे बैठकर, उसका स्पर्श करते हुए मृत्युंजय मंत्र का एक हजार जप करें। तत्पश्चात् दूब, बरगद के पत्ते अथवा जटा, जवापुष्प, कनेर के पुष्प, बिल्वपत्र, ढाक की समिधा और काली अपराजिता के पुष्प के साथ घी मिलाकर दशांश हवन करें। इस क्रिया से शीघ्र ही रोग से मुक्ति मिलती है, मृत्यु का निवारण होता है तथा जीवन की रक्षा होती है।

□ महामृत्युंजय मंत्र का एक हजार जप करके नीम के पत्ते सरसों के तेल में मिलाकर हवन करने पर शत्रु द्वारा किए गए कुकृत्य मिटकर, जीवन की सुरक्षा हो जाती है।

□ सभी प्रकार के अभिचार दूर करने के लिए महामृत्युंजय मंत्र के जप के बाद पंचगव्य से हवन करना चाहिए। इससे मन को शांति भी प्राप्त होती है।

□ किसी भी बड़ी विपत्ति से मुक्ति हेतु, मृत्युंजय मंत्र के 10 हजार जप के पश्चात् जवापुष्प और विष्णुकांता के पुष्पों से हवन करना चाहिए।

□ महामृत्युंजय मंत्र की सिद्धि के लिए जायफल से हवन करना उत्तम है।

वैसे तो इस प्रकार के बहुत से उपाय हैं जो रोगों के निवारण तथा दीर्घ जीवन के लिए प्रयोग किए जाते हैं। मगर उन सभी का विस्तार यहां पर देना संभव नहीं है, क्योंकि महामृत्युंजय मंत्र के जप और उनका विधान यही हमारी पुस्तक का मुख्य विषय है। अत: इस विधान के अंतर्गत आने वाले कुछ विशेष उपायों की जानकारी देना अत्यंत आवश्यक है। महामृत्युंजय साधना करने वाले प्रत्येक साधक को इसकी जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

## मंत्र-जप और रुद्राभिषेक

जब रोगी बहुत कठिन स्थिति में होता है, तो आत्मीयजन और परिवार के लोग बड़ी बैचेनी का अनुभव करते हैं। सभी अपनी-अपनी बुद्धि और योग्यता के अनुसार रोगी को इस पीड़ादायक अवस्था से बाहर निकालने का उपाय खोजने में लग जाते हैं।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस समय सभी का ध्यान अनायास भगवान महामृत्युंजय की ओर चला जाता है, क्योंकि वे कष्टों का निवारण करने और जीवन प्रदान करने वाले हैं। भगवान मृत्युंजय साक्षात् शिव हैं। तरह-तरह के जो भी उपाय होते हैं, वो सभी शिवजी को प्रसन्न करने और अपने अनुकूल बनाने के लिए होते हैं। इन उपायों में दो उपाय प्रमुख हैं–

1. महामृत्युंजय मंत्र का जप
2. रुद्राभिषेक

हम पिछले पृष्ठों में महामृत्युंजय मंत्रों के बारे में काफी कुछ बता चुके हैं (इनका संक्षिप्त वर्णन आगे भी करेंगे) और अब पाठकों के ज्ञानवर्धन के लिए 'रुद्राभिषेक' पर कुछ प्रकाश डालेंगे। 'रुद्राभिषेक' दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् 'रुद्र' और 'अभिषेक'। रुद्र तो शिव हैं एवं अभिषेक का अर्थ है, स्नान करना या कराना। रुद्र और अभिषेक का संक्षिप्त रूप 'रुद्राभिषेक' है। शिवलिंग पर जलधारा छोड़ना ही 'रुद्राभिषेक' कहलाता है।

रुद्रमंत्रों का विधान वेदों–ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद में उद्धृत मंत्रों से होता है। इसके लिए रुद्राष्टाध्यायी का इसमें आश्रय लिया जाता है, क्योंकि इसमें सभी प्रकार के मंत्रों का समावेश है। किन्तु *'कैवल्योपनिषद्'* और *'जाबालोपनिषद्'* में इसके बारे में बहुत स्पष्ट कहा गया है।

'कैवल्योपनिषद्' में *शतरुद्रिमधीते सोऽग्निपूतो भवति* इत्यादि वचनों द्वारा शतरुद्रिय के पाठ से अग्नि, वायु, सुरापान, ब्रह्महत्या, सुवर्ण चोरी, कृत्य एवं अकृत्य से पवित्र होने तथा कैवल्यपद प्राप्ति तक का ज्ञान-फल मिलता है। लेकिन 'जाबालोपनिषद्' में महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं–*शतरुद्रियेणेत्येतान्येव ह वा अमृतस्य नमानि एतैर्ह वा अमृतो भवतीति* अर्थात् शतरुद्रिय के पाठ से, वस्तुतः इसके द्वारा अभिषेक करने से अमृत्व प्राप्त होता है। इसलिए शतरुद्रिय मंत्रों से अभिषेक का बड़ा माहात्म्य है।

कुछ पाठकगण यह जिज्ञासा कर सकते हैं कि अभिषेक कब और कैसे किया जाता है। इस बारे में शास्त्रों में उल्लेख है कि गुरु-परम्परा का अनुसरण करते हुए शतरुद्रिय के पाठ द्वारा अभिषेक करना चाहिए। अभिषेक साधारणतः शुद्ध जल या गंगाजल से होता है। किसी विशेष अवसर पर अथवा सोमवार के दिन, प्रदोष या शिवरात्रि आदि पर्वकालों में गाय का कच्चा दूध पानी में मिलाकर या केवल दूध से भी अभिषेक किया जाता है।

तांत्रिक प्रयोग की दृष्टि से रोग-शांति में अन्य वस्तुओं से भी अभिषेक करने का विधान शास्त्रों में देखने को मिलता है।

यदि किसी व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति पर कोई अभिचार-कृत्य कराया हो, तो



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसी भी मृत्युंजय मंत्र का पांच या सात माला जप कर, सरसों के तेल से अभिषेक करें। इसी प्रकार टायफाइड आदि ज्वरों से मुक्ति के लिए छाछ (मट्ठे) से, सभी प्रकार की सुख-शांति के लिए आम, गन्ना, मौसमी, संतरा व नारियल के रस के मिश्रण से या फिर भांग से तथा वर्षा न होने पर सहस्रधारा से अभिषेक करना चाहिए।

दान

हवन और अभिषेक के बाद दान का स्थान है। अनेक बार देखा गया है कि कुछ रोग विविध उपचार करने पर भी नहीं ठीक होते। ऐसी स्थिति में चिकित्सा और जप के अतिरिक्त शास्त्रकारों ने निम्न आज्ञा दी है—

**तत्तद्दोष विनाशार्थं कुर्याद् यथोदितम्।**
**प्रतिरोगं च यद्दानं जप-होमादि कीर्तितम्॥**
**प्रायश्चित्तं तु तन्कृत्वा चिकित्सामारमेत्ततः।**
**प्रदद्यात् सर्वरोगघ्नं छायापात्रं विधानतः॥**

**छायापात्र दान**—कर्मदोषों से उत्पन्न रोगों की शांति के लिए जिस-जिस दान का वर्णन किया गया है, उसका दान अवश्य करना चाहिए। प्रत्येक रोग के लिए निर्देशित दातव्य दान, जप, होमादि और प्रायश्चित करके चिकित्सा आरंभ करें। साथ ही सर्वरोगों के नाशक छायापात्र का विधानपूर्वक दान करें। छायापात्र दान का प्रयोग निम्नवत है—

चौंसठ पल कांसे की कटोरी में शुद्ध गाय का घृत (घी) भरकर, उसमें सुवर्ण का टुकड़ा अथवा कुछ दक्षिणा डाल दें। फिर रोगी उस घी में अपना चेहरा देखे। अच्छी तरह चेहरा देखने के बाद वह पात्र किसी ब्राह्मण को दे दें। दान से पूर्व तिथि और वार आदि का स्मरण करके यह संकल्प करें—

**मम दीर्घायुरारोग्यसुतेजस्वित्व प्राप्ति पूर्वकं शरीरगत (अमुक) रोगनिवृत्तये अमुक नाम्ने ब्राह्मणाय सघृत-दक्षिणाकं छायापात्रदानमहं करिष्ये।**

इस संकल्प के बाद पात्र में जल डाल दें। फिर पात्र की पूजा करें। पूजा का मंत्र निम्नलिखित है—

**ॐ आज्यं सुराणामाहारमाज्यं पापहरं परम्।**
**आज्मममध्ये मुखं दृष्ट्वा सर्वपापै प्रमुच्यते॥**
**घृतं नाशयते व्याधिं घृतं च हरते रुजम्।**
**घृतं तेजोऽधिकरणं घृतमायुः प्रवर्धते॥**

तत्पश्चात् निम्न मंत्र पढ़कर उसमें अपना चेहरा देखें—

**आयुर्बलं यशो वर्च आज्यं स्वर्णं तथामृतप्।**
**आधारं तेजसां यस्मादतः शांतिं प्रयच्छ मे॥**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर पात्र को भूमि से टिकाए बिना ब्राह्मण को दे दें और प्रणाम करके सम्मान के साथ उसे विदा करें।

दान देने का एक दूसरा उपाय इस प्रकार है—किसी पात्र अथवा वस्त्र में, अपनी श्रद्धा के अनुसार सवाया तौल में चावल लेकर उसमें कुछ द्रव्य अथवा वस्तु रखें। फिर उसे रोगी के ऊपर 21 बार सिर से पैर तक उतारकर, निम्न मंत्र बोलकर ब्राह्मण को दान कर दें—

**ये मां रोगाः प्रबाधन्ते देहस्थाः सततं मम।**
**गृह्णीष्व प्रतिरूपेण तान् रोगान् द्विसत्तम।।**

**तुलादान**—यदि शरीर में किसी विशेष रोग ने घर कर लिया हो और अनेक प्रकार के उपचार करने पर भी कोई लाभ न होता हो, तो चंद्रग्रहण के अवसर पर तुलादान करना चाहिए। तुलादान का अर्थ है—तौलकर दान करना! अपनी सामर्थ्य के अनुसार शरीर के वजन का द्रव्य, वस्तु या खाद्य-सामग्री का दान करना ही तुलादान है। इस प्रकार के दान से रोगी का रोग दूर होकर वह पूर्णतया स्वस्थ हो जाता है।

यह बात सदैव स्मरण रखें कि कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए कभी किसी दूसरे की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए, बल्कि अपना कार्य स्वयं करना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है कि अच्छे कर्म स्वयं ही करने चाहिए। आत्मकल्याणकारी कार्य—दान-पुण्य, पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन और स्तुति-प्रार्थना आदि मनुष्य स्वयं करे। यदि किसी व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक अथवा बौद्धिक स्थिति ठीक न हो, तो अपने प्रतिनिधि द्वारा ऐसे कार्य कराए जा सकते हैं। प्रतिनिधि का अर्थ है—कोई निकट-संबंधी! यदि कोई ऐसा संबंधी न मिले, तो किसी स्नान-संध्याशील, पवित्र, सदाचारी अथवा मंत्रज्ञ ब्राह्मण द्वारा ये कार्य कराए जा सकते हैं।

मंत्र-जप एवं साधना-उपासना के लिए आंतरिक और बाह्य शुद्धि दोनों अत्यंत आवश्यक हैं। यदि ज्ञान न हो तो मरा-मरा के जप से ही सिद्धि मिल जाती है। ज्ञान होने पर प्रातः से सायं तक कर्मकांड के विभिन्न सोपानों का पालन करते हुए विधि-विधान से जपानुष्ठान करने पर ही सफलता प्राप्त होती है। अतः श्रद्धा-भाव रखते हुए जिज्ञासापूर्वक विषय को समझें और अपने कार्य में संलग्न हो जाएं।

आत्मज्ञान की ओर अभिमुख होने से विचारों में स्थिरता, भावनाओं में पवित्रता तथा कर्त्तव्यों में दृढ़ता आती है। *नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः* अर्थात् यह आत्मज्ञान बलहीन व्यक्ति के द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता। इस उपनिषद् वाक्य के अनुसार व्यक्ति को अपना कार्य सफल बनाने के लिए कभी शिथिल, उदास,



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शंकाशील, हतोत्साह या चंचल नहीं होना चाहिए। इस सम्बंध में निम्न पंक्ति भी महत्वपूर्ण है–**आत्मानं सततं रक्षेद् दारैरपि धनैरपि।** अर्थात् स्त्री–परिवार और धन–संपत्ति से भी पहले सदा अपने आपकी रक्षा करनी चाहिए। इस सूक्ति को मूलमंत्र मानकर अपने स्वास्थ्य एवं मनोबल की रक्षा में सदा जागरूक रहना प्रत्येक मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है। और यह तभी हो सकता है, जब आप अपना कार्य स्वयं करें।

संभवतः यह विचार आपके मन में उठ सकते हैं कि इतने विस्तृत कर्मकांड तथा उससे संबंधित संस्कृत भाषा के मंत्रों का शुद्ध उच्चारण कैसे हो सकेगा ? नित्य इन नियमों का निर्वाह मैं कैसे कर सकूंगा ? क्या मैं यह सब कर पाऊंगा ? ऐसे ही कितने प्रश्न मन को झकझोर सकते हैं। परंतु इन सबका एक ही उत्तर है कि आप निश्चय ही यह सब कर सकते हैं और यह आपको करना ही चाहिए।

अपनी पात्रता और उत्साह के अनुसार शनैः–शनैः मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति एक दिन शिखर पर पहुंच जाता है। पौराणिक एवं लौकिक आख्यानों से स्पष्ट है कि पहले छोटे–से–छोटे मंत्र का जप करें तथा जप–संबंधी निर्देशों का पालन अपनी शक्ति के अनुसार करते रहें। इससे आपका मानसिक विकास होगा, धीरे–धीरे ज्ञान की वृद्धि होने लगेगी तथा उपासना के द्वार खुल जाएंगे।

## महामृत्युंजय उपासना का महत्त्व

महामृत्युंजय उपासना का जितना महत्त्व है, उससे कहीं अधिक उसका लाभ भी है। मनुष्य की शुभ तथा कल्याणकारी कामनाएं शीघ्र ही पूर्ण हो जाती हैं। उसे अंतःकरण को मलिन बनाने वाली कुत्सित भावनाओं, स्वार्थ एवं असंकीर्णता से छुटकारा मिल जाता है।

इसके अलावा साधक काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, रोग, द्वेष जैसी कुटिल वृत्तियों और मलिन वासनाओं से मुक्त हो जाता है। श्रद्धा–विश्वास से उपासना करने पर हृदय में शांति की धारा तथा आत्मा में आनंद की वृष्टि होती है।

क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकार–शून्यता आदि शुभ भावनाएं मनुष्य में विकसित होती हैं। दुःखों के स्थान पर सुखों का आनंद प्राप्त होता है। मनुष्य समृद्धियों और सफलताओं के साथ परमात्मा के आशीर्वादों को प्राप्त करता है। महामृत्युंजय मंत्र के बारे में कहा गया है–

**मृत्युंजयजपं नित्यं यः करोति दिने दिने।**
**तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति दीर्घायुश्च प्रजायते॥**

अर्थात् जो प्रतिदिन महामृत्युंजय मंत्र का जप करता है, उसके सभी रोग नष्ट हो जाते हैं तथा वह दीर्घायु को प्राप्त करता है।

महर्षियों के मतानुसार मंत्र–जप से शरीर स्वस्थ व परिपुष्ट, मन सूक्ष्म, उन्नत,



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्मा पवित्र एवं निर्मल हो जाती है।

यह स्मरणीय है कि मनुष्य की प्रकृति में विभिन्नता होने पर भी उनमें कुछ आंतरिक समानता पाई जाती है। इसी कारण एक ही समय में सबको एक ही प्रकार की व्याधियां घेरे रहती हैं। ऐसी व्याधियां शारीरिक न होकर मानसिक अधिक होती हैं। इनसे मानव-स्वभाव में विकार आ जाता है और स्वजन, परिजन तथा परजन सभी में एक जैसे भाव बनने लगते हैं।

इसका परिणाम यह होता है कि अधर्म भावना, असद् आचरण, लोभ, क्रोध, द्वेष, अभिमान, पूज्यजनों का अनादर, देवताओं और गुरुओं के प्रति अश्रद्धा, पाप-प्रवृत्ति तथा विवेकहीनता आदि रोग मन को सदा घेरे रहते हैं। समानवृत्ति के लोगों से ही अधिक मेलजोल रहता है। अच्छे लोगों की संगति से मन दूर भागता है। इन सबके कारण मानसिक अशांति, निद्रा का अभाव, असंतोष एवं दैवी विपदाओं का प्रकोप बना रहता है। ऐसी व्याधियों से बचने के लिए महर्षि आत्रेय ने कहा है-

**सत्यम् भूते दया दानं बलयो देवतार्चनम्।**
**सद्वृत्तस्यानुवृत्तिश्च प्रशमो गुप्तिरात्मनः।।**
**हितं जनपदानां च शिवानामुपसेवनम्।**
**सेवनं ब्रह्मचर्स्य तथैव ब्रह्मचारिणाम्।।**
**शंकया धर्मशास्त्राणां महर्षीणां जितात्मनाम्।**
**धार्मिकैः सात्त्विकैर्नित्यं सहास्या वृद्धसम्मतैः।।**
**इत्येतद् भेषजं प्रोक्तमायुषः परिपालनम्।**
**येषां न नियतो मृत्युस्तस्मिन् काले सुदारुणे।।**

अर्थात् सत्य आचरण, सभी प्राणियों के प्रति दया, दान, बलि, देवताओं की पूजा, सदाचार का पालन, आत्मरक्षा, पवित्र स्थानों पर निवास, ब्रह्मचर्य, ब्रह्मचारियों की संगति, धर्मशास्त्रों, महात्माओं की आज्ञा का पालन, वृद्ध, गुरुजन एवं सात्विक लोगों का सामीप्य बड़े-से-बड़े रोगों से निवृत्ति दिलाने के उत्तम औषध हैं। इनसे अकालमृत्यु तक का निवारण सहज हो जाता है।

□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12

# मृत्युंजय मंत्र का प्रयोगात्मक रूप

दीर्घ आयुष्य एवं स्थायी आरोग्य प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमावश्यक है। इसके लिए वह नित्य-प्रतिक्षण चिन्तित-अवस्था में रहता है और विभिन्न साधनों का उपयोग करता है। किन्तु यदि व्यक्ति इधर-उधर के साधनों का आश्रय न लेकर केवल भगवान शिव की शरण में चला जाए और महामृत्युंजय मंत्र का प्रयोग करे तो वह स्वस्थ, निरोग एवं दीर्घायु होकर प्रसन्नावस्था में जीवन व्यतीत कर सकता है। महामृत्युंजय मंत्र निम्नलिखित है–

**ॐ जूं सः।**

सबसे पहले दाएं हाथ में जल लेकर विनियोग करें–

**अस्य श्रीत्र्यक्षरात्मकमृत्युंजयमंत्रस्य कहोलऋषिर्गायत्री छंदः, मृत्युंजयो महादेवो देवता, जूं बीजम्, सः शक्तिः मम्। सर्वरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।**

उपरोक्त विनियोग बोलकर जल छोड़ दें और फिर न्यास करें–

*ऋष्यादिन्यास*–**ॐ कहोलऋषये नमः** *(शिरसि)*, **ॐ गायत्र्ये छंदसे नमः** *(मुखे)*, **मृत्युंजय महादेवतायै नमः** *(हृदि)*, **ॐ जूं बीजाय नमः** *(गुह्ये)*, **ॐ सः नमः** *(पादयो)*, **ॐ कीलकाय नमः** *(नाभौ)*, **विनियोगाय नमः** *(सर्वांगे)*।

*करन्यास*–**ॐ सां** *(अंगुष्ठाभ्यां नमः)*, **ॐ सीं** *(तर्जनीभ्यां नमः)*, **ॐ सूं** *(मध्यमाभ्यां नमः)*, **ॐ सैं** *(अनामिकाभ्यां नमः)*, **ॐ सौं** *(कनिष्ठिकाभ्यां नमः)*, **ॐ सः** *(करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)*।

*हृदयादिन्यास*–**ॐ सां** *(हृदयाय नमः)*, **ॐ सीं** *(शिरसे स्वाहा)*, **ॐ सूं** *(शिखायै वषट्)*, **ॐ सैं** *(कवचाय हुम्)*, **ॐ सौं** *(नेत्रत्रयाय वौषट्)*, **ॐ सः** *(अस्त्राय फट्)*।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*ध्यान*–'चन्द्रार्काग्निविलोचन' ध्यान मंत्र हम पीछे दे आए हैं, इसलिए यहां उसकी पुनरावृत्ति नहीं कर रहे हैं। ज्ञातव्य हो कि अनेक मृत्युंजय मंत्रों के साथ एक ही ध्यान मंत्र का प्रयोग होता है। भगवान मृत्युंजय का ध्यान करने के पश्चात् निम्न मंत्रों द्वारा मानसोपचार से उनकी पूजा करें–

**ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।**
**ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।**
**ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।**
**ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि।**
**ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि।**
**ॐ सं सर्वात्मकान् तांबूललासिर्वोपचारान् समर्पयामि।**

इसके पश्चात् **ॐ जूं सः** मंत्र का जप करें। संकल्प के अनुसार जप पूर्ण होने पर पुनः न्यास और जप-समर्पण करके क्षमा-प्रार्थना करें। फिर भगवान मृत्युंजय को प्रणाम कर अपना अग्रिम कार्य करें। इस मंत्र का 12 लाख जप उत्तम तथा 3 लाख जप मध्यम माना जाता है।

'मंत्र महोदधि' में कहा गया है कि जो व्यक्ति मृत्युंजय मंत्र से संपुटित व्यासमंत्र का जप करता है, वह सभी उपद्रवों से मुक्त होकर वांछित फल भी पाता है।

'ॐ जूं सः' मंत्र के जपकर्त्ता को किसी दूसरे मंत्र के फेर में नहीं पड़ना चाहिए, क्योंकि यह मंत्र मृत्यु को नष्ट करने वाला है। केवल इस मंत्र का जप करने से ही मनुष्य को इच्छासिद्धि प्राप्त होती है। यदि इससे संपुटित व्यास मंत्र का जप किया जाए, तो अत्यधिक लाभप्रद होता है।

यदि रोग और अशक्ति के कारण मानसिक चिंता बढ़ रही हो, वैद्य एवं डॉक्टरों की समझ में रोग का कारण न आ रहा हो, तो उस समय 'मृत्युंजय मंत्र संपुटित व्यासमंत्र' का जप करने से महर्षि वेदव्यास स्वयं सद्बुद्धि प्रदान करके रोगी की रक्षा का मार्गदर्शन करते हैं। मंत्र की विधि इस प्रकार है–

*विनियोग*–**अस्य श्रीव्यासमंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, सत्यवतीसुत देवता, व्यां बीजं, नमः शक्तिः, मम रोगज्ञानपूर्वकं तन्निवृत्तये मृत्युंजय संपुटित व्यासमंत्र जपे विनियोगः।**

विनियोग करने के पश्चात् करन्यास तथा हृदयादिन्यासादि भी करें–

*करन्यास*–**व्यां** *(अंगुष्ठाभ्यां नमः)*, **व्यीं** *(तर्जनीभ्यां नमः)*, **व्यूं** *(मध्यमाभ्यां*



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमः), व्यैं (अनामिकाभ्यां नमः), व्यौं (कनिष्ठिकाभ्यां नमः), व्यः (करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)।

हृदयादिन्यास–व्यां (हृदयाय नमः), व्यीं (शिरसे स्वाहा), व्यूं (शिखायै वषट्), व्यैं (कवचाय हुम्), व्यौं (नेत्रत्रयाय वौषट्), व्यः (अस्त्राय फट्)।

ध्यान–व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतल सद्योगपीठस्थितं, वामे जानुतले दधानमपरं हस्तं सुविद्यानिधिम्। विप्रव्रातवृते प्रसन्न मनसं पाथोरुहांगद्युतिं, पाराशर्यमतीव पुण्यचरित्रं व्यास भजे सिद्धये॥

महर्षि पाराशर के पुत्र व्यासजी का ध्यान कर, मानसोपचार पूजा करें। तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का जप करें–

**ॐ जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूं ॐ।**

इस मंत्र का आठ हजार जप करने से इच्छित फल की प्राप्ति होती है। शरीर के सभी प्रकार के भीतरी रोगों का शमन हो जाता है।

यह स्मरण रखने वाली बात है कि किसी भी मंत्र के जप से पहले उसके अंग और उपांग मंत्रों के जप भी आवश्यक माने गए हैं। इनमें यदि मुख्य मंत्र पुरुष देव का है, तो 'भैरवी मंत्र' और यदि देवी का मंत्र है, तो 'भैरव मंत्र' का जप करना आवश्यक है। इससे मंत्र का चैतन्य यथावत् बना रहता है, अन्यथा भैरव उसका पुण्यांश हर लेते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक मुख्य मंत्र का 'पाद–जप' भी दशांश में होना चाहिए।

मूल जप के पश्चात् उसकी पूर्ति के लिए अंत में 'शिवपंचाक्षरी मंत्र' का दशांश जप भी होता है। इस प्रकार के मंत्र–जप में प्रातः 'सृष्टि–क्रम', मध्याह्न में 'स्थिति–क्रम' तथा सायं 'संहार–क्रम' से जप किया जाता है। इस प्रक्रिया में त्र्यम्बक के दोनों मंत्र भी लिए जाते हैं। इसका मंत्र–स्वरूप और जप–विधान निम्नलिखित है–

पूर्वोक्त विनियोग के साथ 'अंगोपांग सहित' जोड़कर इसका विनियोग करें। न्यास और ध्यान मंत्र भी पूर्ववत् वही रहेंगे। महामृत्युंजय के कुछ मंत्र इस प्रकार हैं–

(1)

**ॐ श्रीं ह्रीं मृत्युंजये भगवति,**
**चैतन्यचन्द्रे हंससंजीवनी स्वाहा।**

इस मंत्र का दशांश जप करना अनिवार्य है।

(2)

**ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं,**
**यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् श्री शिव॥**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस मंत्र का दशांश जप करें।

(3)

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः,**
**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।**
**ॐ हौं उर्वारुकमिव बंधनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।**
**ॐ जूं त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पतिवेदनम्।**
**ॐ सः उर्वारुकमिव बंधनात् मृत्योर्मुक्षीय मामुतः श्री शिव॥**

यदि यह मंत्र अकेला रहेगा, तो पूर्वोक्त क्रम से ही प्रयुक्त होगा।

(4)

**ॐ नमः शिवाय।**

इस मंत्र का दशांश जप करें।

इस प्रकार यदि थोड़ा भी जप किया जाए, तो वह बहुत उत्तम फल देता है। शास्त्रों में अंगहीन मंत्र का जप सामान्य कहा गया है, जबकि सांग जप का माहात्म्य सर्वोपरि है। इस मंत्र-जप के क्रम में, मूलमंत्र में बीजमंत्र, व्याहृति और पादमध्य में बीजमंत्रों का भी प्रयोग है। इसका कारण यह है कि आगमों में मंत्र के पदों को भिन्नपाद करके जप का निर्देश दिया गया है तथा अच्छिन्नपाद के रूप में जप करना निषिद्ध बताया गया है।

किसी व्यक्ति के लिए समय का कोई बंधन नहीं है और न ही समय का कोई विश्वास है। किस समय कौन-सा संकट उत्पन्न हो जाए, कौन-सा रोग आ दबोचे, कौन-सी दुर्घटना घट जाए और प्राण संकट में पड़ जाए, इस स्थिति में ईश्वर-कृपा ही जीवन की रक्षक हो सकती है। इस दृष्टि से महामृत्युंजय मंत्र को अधिक तेजस्वी बनाने तथा शिव के अतिरिक्त अन्य देवी-देवताओं का सहयोग प्राप्त करने की बात शास्त्रों में कही गई है।

निम्नलिखित शताक्षरी गायत्री के मृत्युंजय मंत्र का जप रोगी स्वयं ही कर सकता है अथवा उसके निकट संबंधी, हितैषी या सहयोगी को जप करना चाहिए। यदि शल्यादि चिकित्सा चल रही हो, व्यक्ति के बचने की कोई आशा न हो, तो निम्न मंत्र का जप आरंभ कर देना चाहिए। इसके प्रभाव से काल व्यक्ति पर से हट जाता है और वह नवजीवन प्राप्त कर लेता है। मंत्र का विनियोग और न्यासादि नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*विनियोग*–अस्य शताक्षरागायत्रीमंत्रस्य, विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठऋषयो, गायत्रीत्रिष्टुप् अनुष्टुपुछंदांसि, सविसृजातवेदस्त्र्यम्बका देवता, गायत्र्यक्षराणि बीजानि, अनुष्टुबक्षराणि शक्तयस्त्रिष्टुबक्षराणि कीलकानि, ममारिष्टशांतये जपे विनियोगः।

*ऋष्यादिन्यास*–विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठष ऋषिभ्यो नमः *(शिरसि)*, गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुपुछंदेभ्यो नमः *(मुखे)*, सवितृजातवेल- स्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः *(हृदि)*, गायत्र्यक्षरेभ्यो बीजेभ्यो नमः *(गुह्ये)*, अनुष्टुबक्षरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः *(पादयो)*, त्रिष्टुबक्षरेभ्यः कीलकेभ्यो नमः *(नाभौ)*, विनियोगाय नमः *(सर्वांगे)*।

*कर-षडंगन्यास*–ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि *(अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः)*, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् *(तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा)*, ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः *(मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट्)*, ॐ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वावावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः *(अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय हुम्)*, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् *(कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट्)*, ॐ उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् *(करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्राय फट्)*।

*ध्यान*–स्मर्तव्याखिलालोकवर्ति–सततं यज्जंगमस्थावर, व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिर्यतः सिद्धयति। यद्वा स्यात् प्रणवांत्रमेदगहनं श्रुत्वा च यद् गीयते, तद्वस्तु स्थितिसिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोर्त्थं महः॥

*मूलमंत्र*–

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नानेन सिंधुं दुरितात्यग्निः॥
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

इस मूलमंत्र का यथाशक्ति जप करके, अनेन शताक्षरागायत्रीजपाख्येन कर्मणा श्रीसवितृजातवेदस्त्र्यम्बकदेवताः प्रीयन्ताम् कहकर जल छोड़ें और क्षमा-प्रार्थना करें। यदि यह सब करना आपकी सामर्थ्य से बाहर हो और आपका संबंधी या सहयोगी भी इतना सब न कर पाए, तो निम्न सूक्त को शुद्ध रूप से पढ़ें–



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
सन्क्रन्द नोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत साकमिन्द्रः॥
सन्क्रन्द नेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्य वनेन धृष्णुना।
तदिदन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा॥
स इषु हस्तैः स निषंगिभिर्वशी संस्त्रष्टा सयुध इन्द्रो गणेन।
सं सृष्टजित सोम पा बाहू शर्द्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता॥
बृहस्पतये परिदिया रथेन रक्षोहा मित्रां अपबाधमानः।
प्रभन्जन्त्सेना प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेद्धय्व्यविता रथानाम्॥
बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्र रथ मातिष्ठ गोवित्॥
गोत्र भिदं गोविदं बज्रबाहुं जयन्त मज्म प्रमृणन्त मोजसा।
इमं सजाता अनुवीर यध्वभिन्द्रं सखायो अनु संरभध्वम्॥
अभिगोत्राणि सहसा गाहमा-नोदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।
दुश्च्यवन पृतनाषाडयुध्योऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु॥
इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देव सेना नाम भिभन्ज तीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वप्रम्॥
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्द्ध उग्रम्।
महा मनसां भुवन च्यवानां घोषो देवानां जयतामुद स्थात्॥
उद्धर्षय मघवन्ना युधान्युत्सत्त्वनां माम कानां मनांसि।
उदवृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्र थाना जयतां यन्तु घोषाः॥
अस्माक मिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मां उ देवा अवता हवेषु॥
अमीषां चित्तं प्रति लोभयन्ती गृहाणां गान्यप्वे परेहि।
अभि प्रेहि निर्दह हत्सु शोकैरन्धेन मित्रास्तमसा सचन्ताम्॥

*(यजुर्वेद संहिता)*

उपरोक्त सूक्त द्वारा अभिमंत्रित भस्म को रात्रिकाल में अपने शरीर के अंगों पर लगाने से दृढ़ एवं निरोग शरीर की स्थापना होती है। यदि कोई व्यक्ति भस्म न लगा सके, तो शुद्ध जल को इससे अभिमंत्रित कर पिलाने से भी लाभ हो जाता है। ☐☐



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

13

# मृत्यु पर विजय

मन का सीधा संबंध मस्तिष्क के साथ है। अधिक चिंता एवं अशांति के कारण मस्तिष्क में ऊष्मा बढ़ जाती है। उसी से अनिद्रा जैसे रोग की उत्पत्ति होती है और मन अशांत रहने लगता है। अतः मस्तिष्क एवं मन को अमृत से सींचने के लिए महामृत्युंजय 'मूलमंत्र' का जप एक अचूक उपाय है। यदि पूर्वोक्त सभी प्रकार के मंत्रों के स्थान पर केवल निम्नलिखित मंत्र की ही साधना की जाए, तो भी पर्याप्त है। इसका प्रयोग निश्चिय ही फलदायक है। अनेक प्रकार के घातक एवं मारक रोगों से मुक्ति पाने व पूर्णायु प्राप्त करने के लिए यह एक श्रेष्ठतम उपाय है।

महामृत्युंजय विधान या अनुष्ठान अत्यंत गोपनीय, महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठतम माना गया है। इस अनुष्ठान में अकालमृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव निहित है। जिस व्यक्ति के जीवन में अकालमृत्यु या बालघात योग हो, उसके लिए यह विधान सर्वश्रेष्ठ है। अनेक विद्वानों, महर्षियों और तांत्रिकों ने इस महामृत्युंजय मंत्र को अत्यंत महत्त्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम माना है।

मंत्रानुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान रखना बहुत ही आवश्यक है। यह एक ऐसी साधना-प्रक्रिया है जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन भी करती है। अनुष्ठान निम्न तीन प्रकार के होते हैं—

**लघु अनुष्ठान**—यह 24 हजार मंत्र का होता है। इसका पुरश्चरण 240 आहुतियों से किया जाता है।

**मध्यम अनुष्ठान**—यह 3 लाख 25 हजार मंत्र-जप का होता है, जिसका पुरश्चरण 1250 आहुतियों द्वारा होता है।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**महा अनुष्ठान**—यह 24 लाख मंत्र के जप से होता है। पुरश्चरण रूप में इसके दसवें भाग की आहुतियां दी जाती हैं।

## मंत्रानुष्ठान की संपन्नता

इन तीन अनुष्ठानों को निम्न रूप से सम्पन्न किया जाता है—

- लघु अनुष्ठान को 9 दिन में 27 माला नित्य (प्रतिदिन) के हिसाब से जप कर संपन्न किया जा सकता है।
- मध्यम अनुष्ठान 40 दिन में 33 माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके पूर्ण किया जाता है।
- महा अनुष्ठान को 66 माला प्रतिदिन के हिसाब से जप कर संपन्न करना चाहिए।

## महत्त्वपूर्ण तथ्य

साधनाकाल में निम्न तथ्यों का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए—

- अनुष्ठान शुभ दिन, शुभ पर्व, शुभ काल अथवा शुभ मुहूर्त्त ज्ञात करके सम्पन्न करना चाहिए।
- मंत्रानुष्ठान को प्रारंभ करते समय सामने भगवान शंकर का चित्र (उनकी शक्ति सहित) स्थापित कर लेना चाहिए। अथवा भगवान शंकर के चित्र सहित, उनकी शक्ति की भावना मन में रखनी चाहिए।
- जहां पर मंत्रानुष्ठान किया जाना हो, वहां का वातावरण पूर्णतया सात्त्विक होना चाहिए तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके जप प्रारम्भ करना चाहिए।
- साधनाकाल में शुद्ध घी का दीपक निरंतर प्रज्वलित रहना चाहिए।
- मंत्र की गणना के लिए चंदन या रुद्राक्ष की माला प्रयोग करनी चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।
- साधनाकाल में पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। बुरे विचारों को पास भी न फटकने देना चाहिए। मन की एकाग्रता बनाए रखनी चाहिए।
- साधनाकाल में यथाशक्ति एक समय भोजन करना चाहिए।
- साधनाकाल में संध्या के समय चेहरे या सिर के बाल नहीं कटाने चाहिए।
- अनुष्ठान करने से पूर्व मंत्र को संस्कारित करके ही पुरश्चरण करना चाहिए।
- जितने समय तक जितनी संख्या में जप करना हो, उसे विधिपूर्वक करना चाहिए। समय में हेर-फेर नहीं होना चाहिए।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- वस्त्र धुले हुए, स्वच्छ, पवित्र व बिना सिले धारण करने चाहिए।
- जब तक साधना चले, तब तक अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाने चाहिए। नीतिमय जीवन बिताना चाहिए।
- मंत्रों के शब्दों का उच्चारण शुद्ध व स्वर बहुत धीमा होना चाहिए। सबसे अच्छा है कि मानस जप करें।
- अनुष्ठान से संबंधित सभी क्रियाएं श्रद्धा व विश्वासपूर्वक करनी चाहिए।
- साधनाकाल में नीच व्यक्तियों के साथ वार्तालाप और उनका स्पर्श नहीं करना चाहिए। इससे पवित्रता नष्ट होती है।
- किसी से भी असत्य नहीं बोलना चाहिए। क्रोध नहीं करना चाहिए। पत्नी आदि को सम्मुख या सामने आने की आज्ञा नहीं देनी चाहिए।
- चित्त स्थिर व मौनता बनाए रखनी चाहिए।
- भूमि पर शयन करना चाहिए।

## कार्यानुसार मंत्र-जप संख्या

शास्त्रों के अनुसार विभिन्न कार्यों के लिए अलग-अलग संख्याओं में मंत्र जपे जाते हैं, जिनका विवरण निम्नवत है–

- भय से छुटकारा पाने के लिए ग्यारह सौ मंत्र का जप किया जाता है।
- रोगों से मुक्ति के लिए ग्यारह हजार मंत्र के जप का विधान है।
- पुत्र की प्राप्ति, उन्नति एवं अकालमृत्यु से बचने के लिए एक लाख की संख्या में मंत्र-जप करना अनिवार्य है।

## शास्त्र का विधान

मंत्रानुष्ठान के लिए शास्त्र के विधान का आश्रय लेना परम आवश्यक है। यदि बिना विधान के कार्य किया जाए, तो सफलता मिलनी असंभव है। इससे लाभ होना तो दूर रहा, हानि की आशा अधिक रहती है। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक कार्य शास्त्र-सम्मत ही किया जाए। इसके लिए किसी योग्य अथवा विद्वान व्यक्ति की सहायता लेनी चाहिए। रोग निवारण एवं मृत्यु-भय दूर करने तथा अकालमृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं, उनमें महामृत्युंजय साधना का स्थान सर्वोच्च है। हजारों-लाखों साधकों ने इससे फल प्राप्त किया है। जब कोई साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ यह साधना करता है, तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

इसका सामान्य मंत्र निम्नलिखित है, किन्तु साधक को बीजयुक्त मंत्र का ही जप करना चाहिए–



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥**

*(ऋग्वेद 7-15-12, यजुर्वेद 3-60)*

अर्थात् हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं ताकि सुगंधियुक्त और पुष्टि प्रदान करने वाले उर्वारुक की तरह मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाएं।

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर गुरु-स्मरण, शिव-पूजन आदि के बाद निम्न प्रकार क्रिया करनी चाहिए-

*संकल्प*-**ॐ मम आत्मनः श्रुति स्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं, अमुक यजमानस्य वा शरीरे अमुकपीड़ा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युंजय देवता प्रीतये अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युंजय जपमहं करिष्ये।**

*विनियोग*-हाथ में जल लेकर इस प्रकार पाठ करें-

**ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वामदेव कहोलवशिष्ठ ऋषयः, पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छंदासि, सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजम्, महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थं जपे विनियोगः।**

विनियोग के पश्चात् हाथ का जल छोड़ दें।

*ऋष्यादिन्यास*-**वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः** *(मूर्ध्नि)*, **पंक्तिगायत्र्युनुप्छंदेभ्यो नमः** *(मुखे)*, **सदाशिव महामृत्युंजयरुद्र देवतायै नमः** *(हृदि)*, **ह्रीं शक्त्ये नमः** *(लिंगे)*, **श्रीं बीजाय नमः** *(पादयोः)*।

उपरोक्त मंत्रों से सिर, मुख, हृदय, लिंग और चरणों का स्पर्श करना चाहिए।

*करन्यास*-**ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपांणये स्वाहा** *(अंगुष्ठाभ्यां नमः)*, **ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय** *(तर्जनीभ्यां नमः)*, **ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चंद्रशिरसे जटिने स्वाहा** *(मध्यमाभ्यां नमः)*, **ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुव स्वः उर्वारुकमिव बंधनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांकाय ह्रीं ह्रीं** *(अनामिकाभ्यां नमः)*, **ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममंत्राय** *(कनिष्ठिकाभ्यां नमः)*, **ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः माऽमृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय** *(करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)*।

*हृदयादिन्यास*-**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये** *(हृदयाय नमः)*, **ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय (*शिखायै वषट्*), ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बंधनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय ह्रीं ह्रीं (*कवचाय हुम्*), ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममंत्राय (*नेत्रत्रयाय वौषट्*), ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः माऽमृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय (*अस्त्राय फट्*)।

*वर्णन्यास—*

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यं नमः पूर्वमुखे ॥1॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः पश्चिममुखे ॥2॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः दक्षिणमुखे ॥3॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः उत्तरमुखे ॥4॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः जां नमः उरसि ॥5॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मं नमः कण्ठे ॥6॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः हें नमः मुखे ॥7॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुं नमः नाभौ ॥8॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः गं नमः हृदि ॥9॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः धिं नमः पृष्ठे ॥10॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः पुं नमः कुक्षौ ॥11॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः ष्टिं नमः लिंगे ॥12॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः गुदे ॥13॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः धं नमः दक्षिणोरुमूले ॥14॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः नां नमः वामोरुमूले ॥15॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उं नमः दक्षिणोरुमध्ये ॥16॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः वां नमः वामोरुमध्ये ॥17॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः रुं नमः दक्षिणजानुनि ॥18॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः वामजानुनि ॥19॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मिं नमः दक्षिणजानुवृत्ते ॥20॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः वामजानुवृत्ते ॥21॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः दक्षिणस्तने ॥22॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः धं नमः वामस्तने ॥23॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः नां नमः दक्षिणपार्श्वे ॥24॥



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामपार्श्वे ॥25॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्यों नमः दक्षिणपादे ॥26॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मुं नमः वामपादे ॥27॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः क्षीं नमः दक्षिणकरे ॥28॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः वामकरे ॥29॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मां नमः दक्षिणनासायाम् ॥30॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामनासायाम् ॥31॥
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः तां नमः मूर्घ्नि ॥32॥

*अथाक्षरान्यास*–त्र्यं नमः दक्षिणचरणाग्रे। बं नमः कं नमः यं नमः जां नमः दक्षिणचरण संधिचतुष्टयेषु मं नमः वामः चरणाग्रे, हे नमः सं नमः गं नमः धिं नमः वामचरणसंधि चतुष्टयेषु पु नमो गुह्येष्टि नमः आधारे। वं नमः जठरेर्द्धे नमो हृदये। ॐ नमः कंठे ॐ नमः दक्षिणकराग्रे वा नमः रु नमः, कं नमः मिं नमः दक्षिणकरसंधि चतुष्टयेषु। बं नमो वामकराग्रे धं नमः। नां नमः मृं नमः वामकरसंधि चतुष्टयेषु त्यों नमो वदने मुं नमः ओष्टोः क्षी नमो घ्राणयो नमः दृशो मां नमः श्रवणयः मृनमोभ्रुवाः तां नमः शिरेसि। यत्यक्षेरन्यासः।

*पदन्यास*–त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगंधिं नैत्रयोः। पुष्टिवर्धनं मुखे। उर्वारुकम् गंडयोः इव हृदये। बंधनात् जठरे। मृत्योः लिंगे। मुक्षीय ऊर्व्योः। मा जान्वोः। अमृतात् पादयोः। मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्याने कुर्यात्।

*मानसोपचार पूजा*–

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।
ॐ यं वाव्यात्मकं धूपं समर्पयामि।
ॐ रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।
ॐ सं सर्वात्मकं पत्रं पुष्पं समर्पयामि।

इस प्रकार कहने के पश्चात् निम्नलिखित मूलमंत्र का उच्चारण करें–

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब निम्न मंत्र से भगवान शिव का ध्यान करें–

*ध्यान–*

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः,
सिंचंन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करो।
अक्षस्त्रगमृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्त्रवत्,
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं यक्षं च मृत्युंजयम्।।

*(शिवपुराण सतीखंड 38–34)*

भगवान आशुतोष शंकरजी के इस महामृत्युंजय मंत्र में छह 'ॐ' लगते हैं। इस मंत्र का जप करने के बाद उत्तरान्यास करने का भी विधान शास्त्रों में है। यह जप महामृत्युंजय शिव को समर्पित कर देना चाहिए।

*समर्पित मंत्र–*

गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं गुहाणास्मत्कृतं जपं।
सिद्धिर्भवतु मे देव, त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥1॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्यु जरा रोगैः पीड़ितं कर्म बंधनैः ॥2॥

*प्रार्थना–*

भस्माल्लेपन भूषितः प्रविलसन्नेत्राग्नि दीपांकुरः।
कंठे पन्नगपुरुष दाम सुभगो गंगाजलैः पूरितः।।
ईषत्ताम्र जटाग्र पल्लव युतो नस्तो जगन्मंडये।
शंभुर्मंगल कुभंतामुपगतो भूयात् सतां श्रेय मे।।

***विशेष***–मूलमंत्र का अनुष्ठान सवा लाख मंत्र-जप का माना जाता है। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। जप क्रिया रुद्राक्ष की माला से करनी चाहिए।

यह रोग निवारण का अचूक विधान माना जाता है। कोई भी व्यक्ति इसे श्रद्धापूर्वक अपनाकर अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

## लघु मृत्युंजय

लघु मृत्युंजय मंत्र नीचे दिया जा रहा है। इसमें 'अमुक' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लेना चाहिए, जिसके लिए यह अनुष्ठान किया जा रहा हो–

**ॐ जूं सः 'अमुक' पालय पालय सः जूं ॐ।**

इसका पूर्ण अनुष्ठान 11 लाख मंत्र-जप का है, जिसका दशांश हवन करना चाहिए। शास्त्रों ने इसे सर्वरोग निवारक घोषित किया है–



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।**
**जन्ममृत्युंजरारोगैः पीड़ितम् कर्मबन्धनः।।**

**मंत्र जप**—यदि कोई साधक केवल मंत्र का जप करना चाहे, तो उसके लिए मृत्युंजय मंत्र इस प्रकार है—

**ॐ हौं जूं सः।**

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मंत्र से भगवान मृत्युंजय को जायफल समर्पित करना चाहिए—

**ॐ ह्रौं ह्रौं जूं सः नमः शिवाय प्रसन्न परिजाताय स्वाहा।**

वस्तुतः महामृत्युंजय विधान मृत्यु पर विजय पाने का अद्भुत उपाय है। भगवान महामृत्युंजय के शास्त्रकार महर्षियों ने कई प्रकार के मंत्र लोगों के लाभार्थ प्रस्तुत किए हैं, जिनका उल्लेख विभिन्न शास्त्रों में मिलता है। 'शारदातिलक' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ में अनुष्टुप् त्र्यम्बक मंत्र से संबंधित महामृत्युंजय मंत्रानुष्ठान की एक विधि इस प्रकार दी गई है—

महामृत्युंजय मंत्र की साधना स्वयं के लिए की जानी हो अथवा किसी दुःखी व्यक्ति के लिए—स्वच्छता का ध्यान सबसे पहले रखा जाना चाहिए। तन-मन और वस्त्र सभी स्वच्छ हों, मन निर्मल एवं भावनाएं पवित्र हों। साधक भस्म-त्रिपुण्ड्र शरीर अथवा मस्तक पर लगाकर, गले में रुद्राक्ष की माला धारण करें तथा आचमन करके निम्न संकल्प करें—

**श्रीमहामृत्युंजयप्रीतये त्र्यम्बकमंत्रजपपुरश्चरणमहं करिष्ये तदंगतया च भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां मातृकान्यासं श्रीकंठादिकलान्यासं मूलमंत्र न्यासपूर्वकं मंत्रराजस्यावरणपूजां च करिष्ये।**

यह संकल्प करके गणपति-स्मरण, भूतशुद्धि, स्वप्राणप्रतिष्ठा, अंतर्मातृका तथा बहिर्मातृकान्यासादि करें (इस बारे में हम चतुर्थ अध्याय में बता चुके हैं)। तदनंतर श्रीकंठादिकलान्यास करें—

*विनियोग*—**अस्य श्रीकंठादिकलान्यासस्य, दक्षिणामूर्तिऋषिः, गायत्रीछंदः, अर्द्धनारीश्वरोदेवता, हलोबीजानि स्वराः शक्तयश्चतुर्विध-पुरुषार्थ-सिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

*ऋष्यादिन्यास*—**ॐ दक्षिणामूर्तये नमः** *(शिरसि)*, **ॐ गायत्रीछंदसे नमः** *(मुखे)*, **ॐ अर्द्धनारीश्वरदेवतायै नमः** *(हृदि)*, **ॐ हलबीजाय नमः** *(गुह्ये)*, **ॐ स्वरशक्तये नमः** *(पदयोः)*, **ॐ विनियोगाय नमः** *(सर्वांगे)*।

*करन्यास*—**ॐ हसां** *(अंगुष्ठाभ्यां नमः)*, **ॐ हसीं** *(तर्जनीभ्यां नमः)*, ॐ



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ह्सूं *(मध्यमाभ्यां नमः)*, ॐ ह्सैं *(अनामिकाभ्यां नमः)*, ॐ ह्सौं *(कनिष्ठिकाभ्यां नमः)*, ॐ ह्सः *(करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)*।

*हृदयादिन्यास*—ॐ ह्सां *(हृदयाय नमः)*, ॐ ह्सीं *(शिरसे स्वाहा)*, ॐ ह्सूं *(शिखायै वषट्)*, ॐ ह्सैं *(कवचाय हुम्)*, ॐ ह्सौं *(नेत्रत्रयाय वौषट्)*, ॐ ह्सः *(अस्त्राय फट्)*।

*ध्यान*—

पाशांकुशवराक्षस्त्रक् पाणिशीतांशुशेखरम्।
त्र्यक्षं रक्त सुवर्णा-भमर्द्धनारीश्वरं भजे॥
बंधूक कांचननिभं रुचिराक्ष मालां,
पाशांकुशौ च वरदं निजबाहुदण्डैः।
विभ्राणमिन्दुश कलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेश मनिशं वपुराश्रयामः॥

उपर्युक्त ध्यान करने के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र को मन-ही-मन बोलते हुए न्यास-प्रक्रिया करें। न्यास के समय तत्त्वमुद्राओं द्वारा निर्देशित अंगों का स्पर्श भी करते रहें।

ॐ ह्सौं अं श्रीकंठेश पूर्णोदरीभ्यां नमः *(मस्तके)*, ॐ ह्सौं आं अनंतेश विरजाभ्यां नमः *(मुखवृत्ते)*, ॐ ह्सौं इं सू मेश शाल्मलीभ्यां नमः *(दक्षिणनेत्रे)*, ॐ ह्सौं ईं त्रिमूर्ति लोलाक्षीभ्यां नमः *(वामनेत्रे)*, ॐ ह्सौं उं अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां नमः *(दक्षकर्णे)*, ॐ ह्सौं ऊ अर्धीश दीर्घघोणाभ्यां नमः *(वामकर्णे)*, ॐ ह्सौं ऋं भारभूतेश दीर्घमुखीभ्यां नमः *(दक्षनासापुटे)*, ॐ ह्सौं ॠं तिथीश गोमुखीभ्यां नमः *(वामनासापुटे)*, ॐ ह्सौं लं स्थाण्वीश दीर्घजिह्वाभ्यां नमः *(दक्षगण्डे)*, ॐ ह्सौं लृं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः *(वामगण्डे)*, ॐ ह्सौं एं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः *(ऊर्ध्वोष्ठे)*, ॐ ह्सौं ऐं भौतिकेश विकृतमुखीभ्यां नमः *(अधरोष्ठे)*, ॐ ह्सौं ओं सद्योजातेश ज्वालामुखीभ्यां नमः *(ऊर्ध्वदंतपंक्तौ)*, ॐ ह्सौं औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः *(अधोदंतपंक्तौ)*, ॐ ह्सौं अं अक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः *(शिरसि)*, ॐ ह्सौं अः महासेनेश विद्यामुखीभ्यां नमः *(मुखमध्ये)*, ॐ ह्सौं कं क्रोधीश महाकालीभ्यां नमः *(दक्षस्कंधे)*, ॐ ह्सौं खं चण्डेश सरस्वतीभ्यां नमः *(दक्षकूर्परे)*, ॐ ह्सौं गं पंचान्तकेश सर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः *(दक्षमणिबंधे)*, ॐ ह्सौं घं शिवोत्तमेश त्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः *(दक्षकरांगुलिमूले)*, ॐ ह्सौं ङ एकरुद्रेश मंत्रशक्तिभ्यां नमः *(दक्षकरांगुल्यग्रे)* ॐ ह्सौं चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः *(वामस्कंधे)*, ॐ



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ह्सौं छं एकनेत्रेश मूलमातृकाभ्यां नमः *(वामकूर्परे)*, ॐ ह्सौं जं चतुराननेश लम्बोदरीभ्यां नमः *(वाममणिबन्धे)*, ॐ ह्सौं झं अजेश द्रविणीभ्यां नमः *(वामकरांगुलिमूले)*, ॐ ह्सौं ञं सर्वेश नागरीभ्यां नमः *(वामकरांगुल्यग्रे)*, ॐ ह्सौं टं सोमेश खेचरीभ्यां नमः *(दक्षस्कंधमूले)*, ॐ ह्सौं ठं लांगलीश मंजरीभ्यां नमः *(दक्षजानुनि)*, ॐ ह्सौं डं दारुकेश रूपिणीभ्यां नमः *(दक्षगुल्फे)*, ॐ ह्सौं ढं अर्धनारीश वीरिणीभ्यां नमः *(दक्षपादांगुलिमूले)*, ॐ ह्सौं णं उमाकान्तेश काकोदरीभ्यां नमः *(दक्षपादांगुल्यग्रे)*, ॐ ह्सौं तं आषाढीश पूतनाभ्यां नमः *(वामपादोरुमूले)*, ॐ ह्सौं थं दण्डीश भद्रकालीभ्यां नमः *(वामजानुनि)*, ॐ ह्सौं दं अत्रीश योगिनीभ्यां नमः *(वामगुल्फे)*, ॐ ह्सौं धं मीनेश शंखिनीभ्यां नमः *(वामपादांगुलिमूले)*, ॐ ह्सौं नं मेषेश तर्जनीभ्यां नमः *(वामपादांगुल्यग्रे)*, ॐ ह्सौं पं लोहितेश कालरात्रिभ्यां नमः *(दक्षपार्श्वे)*, ॐ ह्सौं फं शिखीश कुब्जिनीभ्यां नमः *(वामपार्श्वे)*, ॐ ह्सौं बं छगलाण्डेश कपर्दिनीभ्यां नमः *(पृष्ठे)*, ॐ ह्सौं भं द्विरण्डेश व्रजाभ्यां *(नाभौ)*, ॐ ह्सौं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः *(जठरे)*, ॐ ह्सौं यं त्वगात्मभ्यां वालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः *(हृदये)*, ॐ ह्सौं रं असृगात्मभ्यां भुजगेशरेवतीभ्यां नमः *(दक्षांसे)*, ॐ ह्सौं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः *(ककुदि)*, ॐ ह्सौं वं मेदआत्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमः *(हृदयादिवामांसे)*, ॐ ह्सौं शं अस्थ्यात्मभ्यां केशवायवीभ्यां नमः *(हृदयादिदक्षकरांतं)*, ॐ ह्सौं पं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षोविदारिणीभ्यां नमः *(हृदयादिवामकरांत)*, ॐ ह्सौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः *(हृदयादिवामपादाग्रान्त)*, ॐ ह्सौं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः *(हृदयादिदक्षपादाग्रान्त)*, ॐ ह्सौं लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेशव्यापिनीभ्यां नमः *(हृदयादिनाभ्यंतम्)*, ॐ क्षं परमात्मा संवर्तकेशमायाभ्यां नमः *(हृदयादिशिरोन्तम्)*।

इस प्रकार न्यास-क्रिया करके भगवान मृत्युंजय (शिव) का ध्यान करें-

**अत्र रुद्राः स्मृता रक्ता धृताशूल-कपालकाः।**
**शक्तयो रुद्रपीठस्थाः सिंदूरारुण-विग्रहाः॥**
**रक्तोत्पल कपालाभ्यामलंकृत कराम्बुजाः।**
**न्यस्तास्तिष्ठन्तुसर्वेऽपि शक्ति-संख्यिविर्वधनाः॥**

ध्यान के पश्चात् मूल महामृत्युंजय मंत्र से प्राणायाम करें तथा कहें-

**कृतो यं श्रीकंठादिन्यासः शिवार्पणमस्तु।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतना कहकर जल छोड़ दें। फिर मूलमंत्रन्यासादि की जप-क्रिया करें—

*विनियोग*—**अस्य श्रीत्र्यम्बकमंत्रस्य वसिष्ठऋषिरनुष्टुप् छंदस्त्र्यम्बकः पार्वती पतिर्देवता, त्र्यं बीजम्, बं शक्तिः, कं कीलकं, मम सर्वरोगनिवृत्तये** *(सर्वाभीष्टसिद्धये)* **त्र्यम्बकमंत्रजपे विनियोगः।**

*ऋष्यादिन्यास*—**ॐ वसिष्ठऋषये नमः** *(शिरसि)*, **ॐ अनुष्टुप् छंदसे नमः** *(मुखे)*, **ॐ त्र्यम्बकदेवतायै नमः** *(हृदि)*, **ॐ त्र्यं बीजाय नमः** *(गुह्ये)*, **ॐ बं शक्तये नमः** *(पादयोः)*, **ॐ कं कीलकाय नमः** *(नाभौ)*, **ॐ विनियोगाय नमः** *(सर्वांगे)*।

*करन्यास*—**ॐ त्र्यम्बकं** *(अंगुष्ठाभ्यां नमः)*, **ॐ यजामहे** *(तर्जनीभ्यां नमः)*, **ॐ सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्** *(मध्यमाभ्यां नमः)*, **ॐ उर्वारुकमिव बंधनात्** *(अनामिकाभ्यां नमः)*, **ॐ मृत्योर्मुक्षीय** *(कनिष्ठिकाभ्यां नमः)*, **ॐ माऽमृतात्** *(करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)*।

*हृदयादिन्यास*—**ॐ त्र्यम्बकं** *(हृदयाय नमः)*, **ॐ यजामहे** *(शिरसे स्वाहा)*, **ॐ सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्** *(शिखायै वषट्)*, **ॐ उर्वारुकमिव बंधनात्** *(कवचाय हुम्)*, **ॐ मृत्योर्मुक्षीय** *(नेत्रत्रयाय वौषट्)*, **ॐ माऽमृतात्** *(अस्त्राय फट्)*।

*अंगन्यास*—**ॐ त्र्यं नमः** *(पूर्वमुखे)*, **ॐ बं नमः** *(पश्चिममुखे)*, **ॐ कं नमः** *(दक्षिणमुखे)*, **ॐ यं नमः** *(उत्तरमुखे)*, **ॐ जां नमः** *(उरसि)*, **ॐ मं नमः** *(कंठे)*, **ॐ हें नमः** *(मुखे)*, **ॐ सु नमः** *(नाभौ)*, **ॐ गं नमः** *(हृदि)*, **ॐ धिं नमः** *(पृष्ठे)*, **ॐ पुं नमः** *(कुक्षौ)*, **ॐ ष्टिं नमः** *(लिंगे)*, **ॐ वं नमः** *(गुदे)*, **ॐ र्धं नमः** *(दक्षिणोरुमूले)*, **ॐ नं नमः** *(वामोरुमूले)*, **ॐ उं नमः** *(दक्षिणोरुमध्ये)*, **ॐ र्वां नमः** *(वामोरुमध्ये)*, **ॐ रुं नमः** *(दक्षिणजानुनि)*, **ॐ कं नमः** *(वामजानुनि)*, **ॐ मिं नमः** *(दक्षिणजानुवृत्ते)*, **ॐ वं नमः** *(वामजानुवृत्ते)*, **ॐ बं नमः** *(दक्षिणस्तने)*, **ॐ धं नमः** *(वामस्तने)*, **ॐ नां नमः** *(दक्षिणपार्श्वे)*, **ॐ मृं नमः** *(वामपार्श्वे)*, **ॐ त्यों नमः** *(दक्षिणपादे)*, **ॐ मुं नमः** *(वामपादे)*, **ॐ क्षीं नमः** *(दक्षिणकरे)*, **ॐ यं नमः** *(वामकरे)*, **ॐ मा नमः** *(दक्षिणनासाया)*, **ॐ मृं नमः** *(वामनासाया)*, **ॐ तात् नमः** *(मूर्ध्नि)*।

*पदन्यास*—**ॐ त्र्यम्बकं** *(शिरसि)*, **ॐ यजामहे** *(भ्रूवोः)*, **ॐ सुगंधिं** *(नेत्रयोः)* **ॐ पुष्टिवर्धनम्** *(मुखे)*, **ॐ उर्वारुकम्** *(गण्डयोः)*, **ॐ इव** *(हृदये)*, **ॐ बंधनात्** *(जठरे)*, **ॐ मृत्योः** *(लिंगे)*, **ॐ मुक्षीय** *(गुदे)*, **ॐ मा** *(जान्वोः)*, **ॐ अमृतात्** *(पादयोः)*।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*ध्यान–*

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहंतं परम्।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं,
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे॥

## पांच मुद्राएं

ध्यान के बाद महामृत्युंजय के त्र्यम्बक यंत्र में मूलमंत्र से मूर्ति की कल्पना करके भगवान महामृत्युंजय त्र्यम्बकेश्वर की मानसोपचार पूजा करें तथा निम्नलिखित पांच मुद्राएं दिखाएं–

1. मुष्टि मुद्रा
2. मृग मुद्रा
3. शक्ति मुद्रा
4. लिंग मुद्रा
5. पंचमुख मुद्रा

**मुष्टि मुद्रा**–यह सभी विघ्नों को नष्ट करने वाली मुद्रा है। दाएं हाथ से मुट्ठी बांधकर उसको ऊपर की ओर उठाते हुए दिखाना ही 'मुष्टि मुद्रा' कहलाता है।

**मृग मुद्रा**–दाएं हाथ का अंगूठा और अनामिका व मध्यमा उंगली के अग्रभागों को मिलाने तथा तर्जनी एवं कनिष्ठिका उंगली को खड़ी करने से 'मृग मुद्रा' बनती है।

**शक्ति मुद्रा**–दोनों हाथों की मुट्ठियां बांधकर बाईं मुट्ठी पर दाईं मुट्ठी रखें और उसे सिर पर लगाएं। यही 'शक्ति मुद्रा' है।

**लिंग मुद्रा**–यह मुद्रा भगवान मृत्युंजय श्रीशिव का सान्निध्य कराने वाली है। दाएं हाथ के अंगूठे को खड़ा रखकर, बाएं हाथ के अंगूठे से बांध दें। फिर बाएं हाथ की उंगलियों को दाएं हाथ की उंगलियों से बांध लें। यही 'लिंग मुद्रा' कहलाती है।

**पंचमुख मुद्रा**–यह मुद्रा भगवान शिव को प्रसन्न करने वाली है। मणिबंध से युक्त दोनों हाथों की उंगलियों के अग्रभागों (पोरों) को मिलाएं। इस क्रिया से 'पंचमुख मुद्रा' बनती है।

जो लोग किसी घातक रोग से ग्रस्त हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें उपरोक्त यंत्र को तांबे या चांदी के पतरे अथवा भोजपत्र पर, शुभ मुहूर्त में विधिपूर्वक तैयार करके, नित्य पूजा तथा मंत्र–जप के बाद धारण करना चाहिए।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**त्र्यम्बक यंत्र**

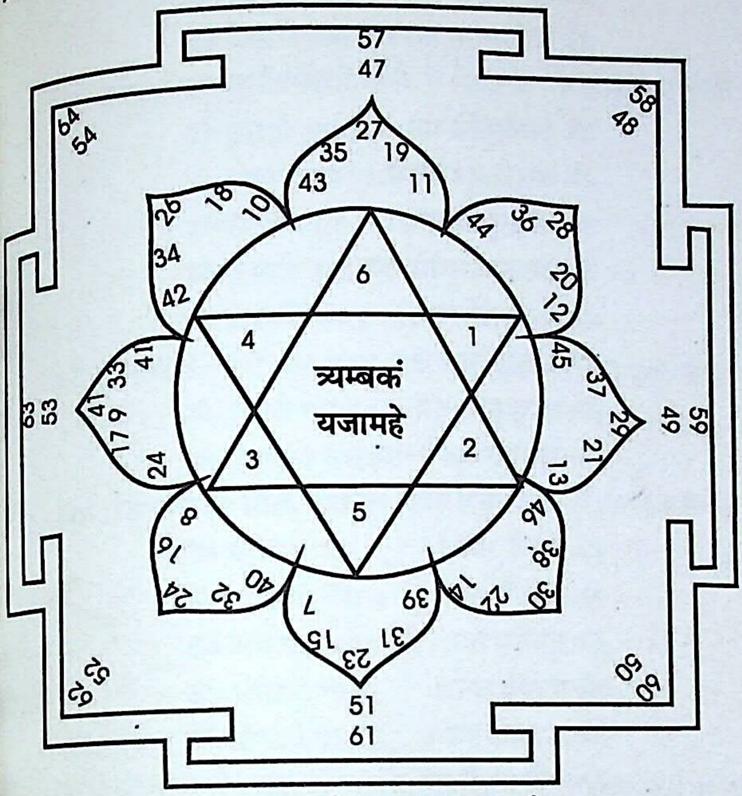


*महामृत्युंजय का त्र्यम्बक यंत्र*

**यंत्रोद्धार–**

> **त्रिकोणं वर्तुलं बाह्यं षट्कोणं तदनन्तरम्।**
> **सप्ताष्टदलपद्मानि भूपुरद्ववेष्टितम्।।**
> **महामृत्युंजयाख्यं च सर्वारिष्ट–हरं परम्।**
> **यंत्रं पूज्यं सदा सेव्यं साधकैः परमाद्भुतम्।।**

सर्वप्रथम महामृत्युंजय के स्वरूप का ध्यान कर, यंत्र को स्थापित कर निम्नानुसार आवरण पूजा करें।

प्रथम आवरण में–आग्नेयादि षट्कोणों में हृदय आदि षडंगों की पूजा करें। यथा–

> **ॐ त्र्यम्बकं हृदयाय नमः।**
> **ॐ यजामहे शिरसे स्वाहा।**
> **ॐ सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् शिखायै वषट्।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ उर्वारुकमिव बंधनात् कवचाय हुम्।

ॐ मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ माऽमृतात् अस्त्राय फट्।

द्वितीय आवरण में—अष्टदल में अष्टमूर्तियों की पूजा करें। यथा—

ॐ अर्कमूर्तये नमः।

ॐ वसुधामूर्तये नमः।

ॐ वह्निमूर्तये नमः।

ॐ आकाशमूर्तये नमः।

ॐ इन्द्रमूर्तये नमः।

ॐ तोयमूर्तये नमः।

ॐ वायुमूर्तये नमः।

ॐ यजमानमूर्तये नमः।

तृतीय आवरण में—वहीं कुछ ऊपर आठ शक्तियों की पूजा करें। यथा—

ॐ रमायै नमः।

ॐ प्रभायै नमः।

ॐ पूर्णाय नमः।

ॐ पूरण्यै नमः।

ॐ शकायै नमः।

ॐ ज्योत्स्नायै नमः।

ॐ वायुमूर्तये नमः।

ॐ ऊषायै नमः।

ॐ सुधायै नमः।

चतुर्थ आवरण में—वहीं कुछ ऊपर अन्य आठ शक्तियों की पूजा करें। यथा—

ॐ विश्वायै नमः।

ॐ सितायै नमः।

ॐ सारायै नमः।

ॐ शिवायै नमः।

ॐ विद्यायै नमः।

ॐ प्रह्वायै नमः।

ॐ संध्यायै नमः।

ॐ निशायै नमः।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंचम आवरण में—वहीं कुछ ऊपर अन्य आठ शक्तियों की पूजा करें। यथा—

ॐ आर्यायै नमः।

ॐ मेधायै नमः।

ॐ धृत्यै नमः।

ॐ प्रज्ञायै नमः।

ॐ शान्त्यं नमः।

ॐ सत्यै नमः।

ॐ प्रभायै नमः।

ॐ कान्त्यै नमः।

छठे आवरण में—वहीं कुछ ऊपर अन्य आठ शक्तियों की पूजा करें। यथा—

ॐ धरायै नमः।

ॐ पद्मायै नमः।

ॐ जयायै नमः।

ॐ मायायै नमः।

ॐ शान्तायै नमः।

ॐ अमलायै नमः।

ॐ अविन्यै नमः।

ॐ मोधायै नमः।

सातवें आवरण में—भूपुर में इन्द्रादि दिक्पालों की पूर्वादि क्रम से पूजा करें। यथा—

ॐ इन्द्राय नमः।

ॐ ऋर्तये नमः।

ॐ कुबेराय नमः।

ॐ ब्रह्मणे नमः।

ॐ अग्नेय नमः।

ॐ वरुणाय नमः।

ॐ ईशानाय नमः।

ॐ अनंताय नमः।

ॐ ययाम नमः।

ॐ वायवे नमः।

आठवें आवरण में—वज्रादि दस आयुधों की पूजा करें। यथा—



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ वज्राय नमः।

ॐ दण्डाय नमः।

ॐ पाशाय नमः।

ॐ गदायै नमः।

ॐ पद्माय नमः।

ॐ शक्तयै नमः।

ॐ खड्गाय नमः।

ॐ अङ्कुशाय नमः।

ॐ त्रिशूलाय नमः।

ॐ चक्राय नमः।

इस प्रकार आवरण-पूजा (यंत्र की) में कुल 64 स्थानों पर पूजा होती है। यह पूजा गंधाक्षत मिश्रित पुष्पों अथवा केवल पुष्प की पत्तियों या अक्षतों से करनी चाहिए। पूजा के पश्चात् धूप, नैवेद्य, आरती, मंत्र-पुष्पांजलि आदि विधिवत करके पुरश्चरण के रूप में निम्न मंत्र का जप करना चाहिए–

**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बंधनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥**

उक्त मंत्र का एक लाख की संख्या में जप होने से पुरश्चरण होता है। पुरश्चरण के पश्चात् दशांश हवन अवश्य किया जाना चाहिए। बिल्व, खैर, वट, तिल, दूर्वा, पलाश, दही, सरसों, खीर और दूधादि द्रव्यों को शुद्ध गाय के घी में डुबोकर आहुति दें। हवन दशांश मूलमंत्र बोलकर करें तथा अंत में, **ॐ त्र्यम्बकं देवं तर्पयामि** मंत्र से तर्पण करें। तर्पण दशांश से, जिस रोगी के लिए साधना की जाए, उस पर मार्जन रूप में अभिषेक करें तथा उसके दशांश की संख्या में ब्राह्मणों को भोजन कराएं।

***विशेष***–विधि–विधान के अनुसार चांदी, तांबे या भोजपत्र पर यंत्र की रचना करके (कराकर) उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करें (कराएं) और तदन्तर नित्य इसी पद्धति से आवरण-पूजा करके जप करें। पूजा के पश्चात् निम्नलिखित स्तुति-पाठ करके इसे संपन्न करने का विधान है। यंत्र और मंत्र साधकों के लिए परम कल्याणकारी सिद्ध होते हैं। स्तुति-पाठ इस प्रकार है–

**यदीहा-सम्भूतो रचयति विधिर्विश्वमखिलम्**
**यदाज्ञा-संलग्नो हरिरपि जगत् पालयति च।**
**यदंशो रुद्रस्तु प्रलय-भय-लालांकलयति**
**त्र्यात्मा ज्येष्ठेशः शिवयतु जगंससम्प्रति शिवः ॥ 1॥**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्वचिल्लीलाऽऽलापे प्रणव-कलहाम् मान-मलिनाम्
भवानीं कल्याणीं गिरिश-विमुखां लोहित-मुखीम्।
तदीय-स्निग्धांगं प्रसभम्भिनन्दन् हठ परः
समालिंगेश्चुम्बन् स्मित-वदन-शम्भुर्विजयते ॥2॥
यदीयं माहात्म्यं हरि-विधि-मुखा वेत्तुमखिलम्
प्रयासं निस्सारं विदधुरसकृत्तीव्र-तपसः।
अलब्ध्वा तत्पारं विगलित-बला म्लान-मतयः
क्षमामायाचन्तो नति-नुति-मिता स्त्वामुपगताः ॥3॥
अनिष्ट-प्रारब्धात् खल-कुटिल-सामन्त-निगड़े
पराधीना दीनाः स्वजन धनहीना लघुजनाः।
रुद्रन्तः क्रोशन्तो भयमुक्ति सत्साहस-धना-
दयाब्धै त्वां त्यक्त्वा शिवा कथयकंयांतु शरणम् ॥4॥
दुरुचार-व्रात-व्रतमुपगताः शोषण-रताः
पर-द्रव-ग्राहाः पर-सदन-दाराऽर्पित-हृदः।
कदाचित् काशीशं सकृदपि नमन्त्यत्र यदि ते
विलीनैनो-मूला शिव। तव तदं यान्ति सहसा ॥5॥
यदा देवा भीता उदधि-मथनोद्भूत-गरलाद्
भजन्तो भूतेद्यं मृशमुपगताः क्षीण-शरणाः।
विषं तेषां पीत्वा प्रतिदिनमपासीः सुमनसो
विपद्-क्ष्वेड-ज्वालां न पिबसि कथं मे पशुपते ॥6॥
न मे भव्यं द्रव्यं यजन-विधि-हव्योपकरणम्
न भक्तिः शक्तिर्वा तव चरणसेवा-समुचिता।
न वा सत्संगोऽपि क्लम-कलल-हृन्-मोहदलनो-
हताशस्त्वां यातः श्रृणु शिव। मदाक्रन्दन-श्वम् ॥7॥
जटाजूट ग्रंथि ग्रथित गति गंगा भगवती
नुनाव त्वां नूनं नवगति समीहोन्मुख मतिः।
ततो निर्गच्छन्ती तव गुण-गणोच्चारणवती
पुनातीदं विश्वं शिव। तव महिम्नः फलामदम् ॥8॥
पुरा रामो रामा-विरह-विधुरो वानर सखो-
वनं भ्रामं भ्रामं गत-गति विरामाऽऽकुल-मतिः।
समुद्रस्योत्संगे तव चरण पूजाऽर्पित करः
स्व साफल्यं लेमे सपदि वरद! त्वद् वर बलात् ॥9॥



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्मशानोद्यानस्त्वं मनसिज चिता भस्म धवलः
पिशाचैः साचिव्यं भुजग-पति-सम्भूषित-वपुः।
कपालाऽस्थि-स्त्रग्भिस्तव रुचिर-देहः परिवृतः
तथापि त्वं शम्भो! सुर-मनुज-संमंगल-निधिः ॥ 10 ॥
न वेदा देवा वा तव महिम-काष्ठमधिगता-
न देवर्षि-व्यूहा न च मुनिगणा नाऽपि नृगणाः।
अचिन्त्य-ब्रह्माण्डाऽऽवलि वलय लीलाऽतिकुशलम्
नमामि त्वां शम्भो ! चरण-शरणं देहि सततम् ॥ 11 ॥

अपनी शक्ति-भक्ति के अनुसार आगे बढ़ते रहने और आत्मकल्याण करने के लिए यह साधना-पद्धति ही सबसे उत्तम मार्ग है। इससे भगवान महामृत्युंजय की अनन्य कृपा, भक्ति मिलती है तथा दूसरों के रोग, दुःखादि दूर करने की शक्ति प्राप्त होती है। साधना करने वाला व्यक्ति स्वयं निरोग रहकर इस लोक में सभी प्रकार के सुखों का भागी बनता है तथा अंत में भगवान सदाशिव के चरणों में पहुंचकर मुक्ति प्राप्त करता है।

□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

14

# मृतसंजीवनी यंत्र और मंत्र

मूर्तियों और शिवलिंग के समान शिवजी के विभिन्न यंत्रों को भी भगवान शंकर का साक्षात् रूप माना जाता है। यंत्र किसी भी देवी-देवता का हो, उसमें देवी-देवता की आकृति नहीं, बल्कि कुछ रेखाएं और अंक-अक्षर एक निश्चित क्रम में अंकित होते हैं। रेखाओं के इस क्रम तथा आकृति के आधार पर ही उस यंत्र को कोई विशिष्ट नाम दिया जाता है। यंत्र में शक्ति का मूल रेखाओं द्वारा बनी आकृति और उनके बीच अंकित अक्षर एवं अंक ही हैं। यही कारण है कि यंत्र में अंकित अक्षरों और अंकों को 'बीज' कहा जाता है। वस्तुतः उन्हीं पर दृष्टि केंद्रित करके एक निश्चित संख्या में पूर्ण विधि-विधान के साथ जप किया जाता है।

तंत्रशास्त्र के ग्रंथों में कहा गया है कि विभिन्न प्रकार के यंत्रों की रेखाएं, बीजाक्षर और बीजांक दिव्य शक्तियों से प्रभावित होते हैं। संभवतः इसी कारण जब साधक यंत्र पर नजरें जमाकर किसी विशिष्ट मंत्र का जप करता है, तो उसके मन और शरीर पर ही नहीं, बल्कि आसपास के वातावरण पर भी अच्छा या बुरा प्रभाव पड़ता है। महर्षियों का मत है कि पूजा-उपासना, अनुष्ठान अथवा मंत्रों का जप करते समय यदि मंत्र से संबंधित देवता का यंत्र भी सम्मुख रख लिया जाए तो सफलता बहुत शीघ्र मिल जाती है। जिस प्रकार प्रतिमाएं और मंत्र देव-स्वरूप माने जाते हैं, उसी प्रकार यंत्र भी देवताओं के प्रतीक हैं।

यंत्र अत्यधिक शक्तिशाली माने जाते हैं। इसी कारण व्यक्ति के मन-मस्तिष्क और शरीर पर उनका प्रभाव अतिशीघ्र पड़ता है। यंत्रों में अंकित रेखाओं, अंकों एवं अक्षरों की शक्ति के बारे में हमारे प्राचीन धर्मशास्त्र कहते हैं कि हम संसार में प्रकट रूप में अनेक आकृतियां देखते हैं। इसी प्रकार की अनेक आकृतियां अदृश्य रूप में, आकाशमंडल में विचरती रहती हैं, जो अदृश्य होते हुए भी प्रत्येक जीव



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को प्रभावित करती हैं। यंत्रों में रेखाओं के माध्यम से ये आकृतियां ही अंकित की जाती हैं। जहां तक अंकों का प्रश्न है, प्रत्येक अंक किसी-न-किसी ग्रह और राशि का प्रतिनिधित्व करता है। शब्दों, अंकों और आकृतियों की इन्हीं दिव्य शक्तियों के कारण कोई भी यंत्र साधक के मस्तिष्क, शरीर, मन और आत्मा पर ही नहीं, आसपास के वातावरण तथा उस व्यक्ति पर विशेष रूप से प्रभाव डालता है, जिसके लिए वह यंत्र तैयार किया जाता है। यंत्रों की इसी शक्ति के कारण तांत्रिक साधना में मंत्रों के साथ यंत्रों को भी संयुक्त किया जाता है।

हमने अभी तक पुस्तक में मंत्र-साधना के बारे में ही बताया है, किन्तु जब हम यंत्र में भगवान शिव को साक्षात् उपस्थित मानकर उसका पूजन करने के बाद मंत्र-जप करते हैं, तो यह प्रक्रिया यंत्र साधना कहलाती है।

मंत्र साधना और यंत्र साधना का समन्वित रूप है-तंत्र साधना ! तंत्र साधना में यंत्र के पूजन और मंत्रों के जप का महत्त्व तो है ही, पूजा में प्रयुक्त की जाने वाली वस्तुओं को भी बहुत महत्त्व दिया जाता है।

हमारे धर्मशास्त्रों के अनुसार-यंत्र सम्मुख रखकर संपूर्ण अनुष्ठानों का विस्तारपूर्वक संपादन करते हुए, आराध्यदेव के किसी भी मंत्र का निश्चित संख्या में जप और उसके बाद हवनादि करना ही तंत्र साधना है।

आराध्यदेव से विशेष शक्तियों की प्राप्ति, भय और आपदाओं से रक्षा अथवा विशिष्ट सिद्धि या कार्य की आपूर्ति के लिए यंत्र को सम्मुख रखकर ही विशेष अनुष्ठान, पूजा और मंत्रों का जप किया जाता है। यहां स्मरणीय है कि तंत्र साधना सामान्य पूजा, स्तुति, स्तोत्र और कवचपाठ अथवा मंत्र-जप के समान न तो सीधी-सादी प्रक्रिया है और न ही उपासना की भांति पूर्णतया कर्मकाण्ड से रहित। तंत्रविद्या पूर्णतया मंत्रों के अभिप्राय सहित ज्ञान, उचित विधि-विधानपूर्वक जप, उचित यंत्र का चुनाव, उसके पूजन एवं साधक के आत्मबल पर टिकी है। मंत्र का अपना महत्त्व है, तो यंत्र का अपना; और जब ये दोनों मिल जाते हैं तो इनकी सम्मिलित शक्ति कई गुना बढ़ जाती है।

## मृतसंजीवनी यंत्र की साधना

मृतसंजीवनी यंत्र मृत्यु को जीतने की सामर्थ्य रखता है। इस यंत्र की साधना से हर प्रकार का मृत्युतुल्य रोग, मृत्युभय तथा अकालमृत्यु के संकट का निवारण हो जाता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति स्वस्थ होकर दीर्घजीवन प्राप्त करता है। अगले पृष्ठ पर मृतसंजीवनी यंत्र का चित्र दिया गया है।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

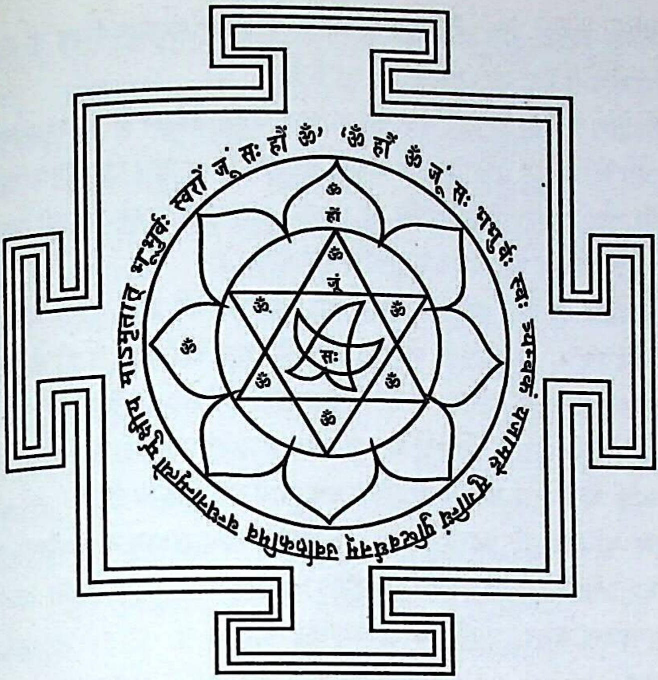


*मृतसंजीवनी यंत्र*

प्राय: इस बात को सभी जानते हैं कि संसार में किसी भी व्यक्ति के लिए बड़े से बड़ा सुख-सौभाग्य उसका रोग रहित शरीर है। निरोगी जीवन ही आनंदमय होता है, जबकि रोगी शरीर होने पर न खाने-पीने का सुख मिलता है, न पहनने-ओढ़ने का। ऐसा व्यक्ति न तो किसी लंबी यात्रा पर जा सकता है और न ही किसी प्रकार के संत-समागम का आनंद ही उठा पाता है। वह निरंतर रोग-शय्या पर पड़ा, तन-मन की व्यथा से जर्जर होता रहता है।

ऐसी स्थिति में व्यक्ति के पास चाहे जितनी संपदा हो, व्यर्थ ही प्रतीत होती है। अत: श्रीसंपदा का सुखोपभोग करने के लिए स्वस्थ व निरोग शरीर का होना अत्यंत जरूरी है। स्वस्थ शरीर के लिए रोगमुक्ति भी परम आवश्यक है।

जटिलतम रोगों के आक्रमण से, जब प्राण-संकट उत्पन्न हो जाता है, तो उससे त्राण पाने के लिए आस्थावान-ज्ञानीजन मृतसंजीवनी यंत्र की साधना करते हैं। इस यंत्र का प्रभाव रोग और अकालमृत्यु को नष्ट करने वाला है।

इस यंत्र के देवता भगवान मृत्युंजय (शिव) हैं, जो संसार की समस्त औषधियों के स्वामी, मृत्यु के नियंत्रक तथा आरोग्य व स्वास्थ्य के प्रदाता हैं। अपनी इसी महान क्षमता के कारण ये देवाधिदेव महादेव कहे जाते हैं। अत: किसी भी प्रकार



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के शारीरिक क्लेश, रोग और भय से मुक्ति के लिए भगवान शिव के साकार रूप इस मृतसंजीवनी यंत्र की साधना की जाती है।

शास्त्रीय पद्धति से इस यंत्र की साधना बहुत जटिल है जो लगभग दुःसाध्य प्रतीत होती है। किन्तु मनीषियों ने अपने अनुभव के आधार पर प्रतिपादित किया है कि सरल एवं व्यावहारिक विधि से इसका अनुष्ठान करने पर भी पर्याप्त लाभ होता है। यंत्र साधना की सरलतम विधि इस प्रकार है–

शिवरात्रि के दिन अथवा किसी भी सोमवार को शुभ मुहूर्त में चांदी, तांबे अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से पूर्वोक्त यंत्र की रचना करें। यदि कहीं से बना-बनाया यंत्र उपलब्ध हो सके, तो प्राप्त कर सकते हैं। हरिद्वार-ऋषिकेश आदि धार्मिक स्थानों पर यह सुगमता से मिल सकता है। यंत्र प्राप्त हो जाए, तो उसकी प्राण-प्रतिष्ठा कराएं। कोई भी विद्वान पंडित-पुरोहित यह कार्य कर सकता है।

प्राण-प्रतिष्ठा के पश्चात् यंत्र को श्वेत चंदन से स्नान कराकर उसे श्वेत आसन पर प्रतिष्ठित करें। तदनन्तर निम्नलिखित ध्यान एवं स्तुति द्वारा भगवान शिव का स्मरण करते हुए यंत्र को प्रणाम करें–

*ध्यान–*

**चन्द्रार्काग्नि विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं,**
**मुद्रा पाशं सुधाक्षसूत्र विलसत् पाणी हिमांशु प्रभम्।**
**कोटीचन्द्रगलत् सुधाद् भुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं,**
**भ्रान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजय भावये॥**
**पीयूषांशु सुधामणिः करतले पीयूष कुम्भं वहन्,**
**पीयूषद्युति सम्पुटान्तरगतः पीयूषधाराधरः।**
**मां पीयूषमयूख सुन्दरवपुः पीयूषलक्ष्मीसखा,**
**पीयूषद्रववर्षणस्त्वहरहः प्रीणातु मृत्युंजयः॥**
**देवं दिनेशाग्निशशांकनेत्रं पीयूषपात्रं क्लशं दधानम्।**
**दोर्भ्यां सुधांशुद्युतिमिंदुचूडं नमामि मृत्युंजयमादिदेवम्॥**

*स्तुति–*

**कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।**
**सदाबसन्तं हृदयारविंदे भवं भवानी सहितं नमामि॥ 1॥**
**शंखेन्द्वाभमतीव सुंदरतनुं शार्दूलं चर्माम्बरम्।**
**काल व्याल कराल भूषणधरं गंगा शशांकप्रियम्॥**
**काशीशं कलिकल्पपौघ शमनं कल्याण कल्पद्रुमम्।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकर कामहम्॥ 2॥
सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्रीशेले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालं ओंकारममलेश्वरम्॥
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम्।
वाराणास्यां च विश्वेश त्र्यम्बकं गौतमीतटे॥ 3॥
प्रातः स्मरामि भवमीति हरं सुरेशं।
गंगाधर वृषभ वाहन मम्बिकेशम्।
खट्वांग शूल वरदा भय हस्तमीशं।
संसार रोगहर मौषधम द्वितीयम्॥
प्रातर्नमामि गिरिश गिरिजार्द्धदेहं,
सर्गस्थिति प्रलय कारणमादि देवत्।
विश्वेश्वरं विजित विश्व मनोऽभिरामं,
संसार रोगहर मौषधम् द्वितीयम्॥
प्रातर्भजामि शिवमेक मनन्तमाद्यं,
वेदान्त वेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।
नामादि मेद रहितं षडभावशून्यं,
संसार रोगहर मौषधम द्वितीयम्॥ 4॥
ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतसं।
रत्नाकल्पोज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समंतत् स्तुतममरगणैः व्याघ्रकृत्तिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥ 5॥
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ 6॥
नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्ते दिव्य चक्षुषे।
नमः पिनाक हस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः॥ 7॥
नमस्ते त्वां महादेव लोकानां गुरुमीश्वरम्।
पुन्साम पूर्ण कामानां कामपूरामरांघ्रिपम्॥ 8॥
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे,
सुरतरुवर शाखा लेखनी पत्र मुर्वीम्।
लिखित यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥ 9॥



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वन्दे देव मुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं,
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्य शशांक वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं,
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।। 10।।
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरं मुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांके वहन्तम्।।
नागं पाशं च घण्टां डमरुक सहितं सांकुशं वामभागे।
नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि।। 11।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।। 12।।
निरानलम्बस्य ममावलम्बं, विपाटिता शेष विपत्कदम्बम्।
मदीय पापा चलपातशम्बं, प्रवर्ततां वाचि सदैव बम्-बम्।। 13।।
तव तत्त्वं न जानामि की दृशोऽसि महेश्वर।
यादृशस्त्वं महादेव तादृशाय नमो नमः।। 14।।
रुद्रं चतुर्भुजं देवं त्रिनेत्रं वरदा भयम्,
दधान मूर्ध्वं हस्ताभ्यां शूलं डमरु मेव च।
अंक संस्थामुमा पद्मे दधानं च कर द्वये,
आद्ये करद्वये कुम्भं मातुर्लिंगं च विभ्रताम्।। 15।।
उद्यद्भानुस्फुरित तडिदाकार मूर्द्धाम्बिकेशम्,
पाशाभीतिं वरद परशुं सन्दनं कराब्जैः।
दिव्याकल्पैर्नवमणि मयैः शोभितं विश्वमूलम्,
सौम्याग्नेयं वपुर वतुनश्च चूडं त्रिनेत्रम्।। 16।।

ध्यान, स्तुति एवं प्रणामोपरान्त चंदन, बेलपत्र, मदार, पुष्प, धतूर-पुष्प-फल, गुग्गल की धूप और दीप आदि से यंत्र की पूजा करके मृत्युंजय मंत्र का जप प्रारंभ करना चाहिए। मंत्र की जप संख्या सवा लाख है। जप की समाप्ति पर हवन-दान करना आवश्यक है।

सामान्य रूप से यदि दैनिक पूजा में भी इसकी 5 या 11 माला जप ली जाएं तो बहुत लाभ होता है। इस लाभ का उदाहरण एक दोहे से दिया जा सकता है-

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे तो दुःख काहे को होय।।

इस मंत्र के जप के लिए रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। पूर्ण संयम,


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आस्था और शुद्धता के साथ की गई साधना कभी व्यर्थ नहीं जाती। यह एक अकाट्य सत्य है। मंत्र इस प्रकार है–

**ॐ हौं जूं सः, ॐ भूर्भवः स्वः**
**त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बंधनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।**
**स्वः भुवः भूः ॐ, सः जूं हौं ॐ।**

*विशेष*–यंत्र की साधना के समय (वैसे तो सभी यंत्रों की साधना में) साधक को परम सात्त्विक जीवन व्यतीत करना चाहिए। काम–क्रोधादि से मुक्त परम शुचिता के साथ फलाहार अथवा अल्पाहार पर निर्वाह करते हुए, निरंतर भगवान शिव के चिंतन में लीन रहना चाहिए। भूमि–शयन, दान–पुण्य, परोपकार और श्रद्धापूर्वक मंत्र का जप सफलता के निश्चित साधन हैं।

## सिद्धमृत्युंजय यंत्र

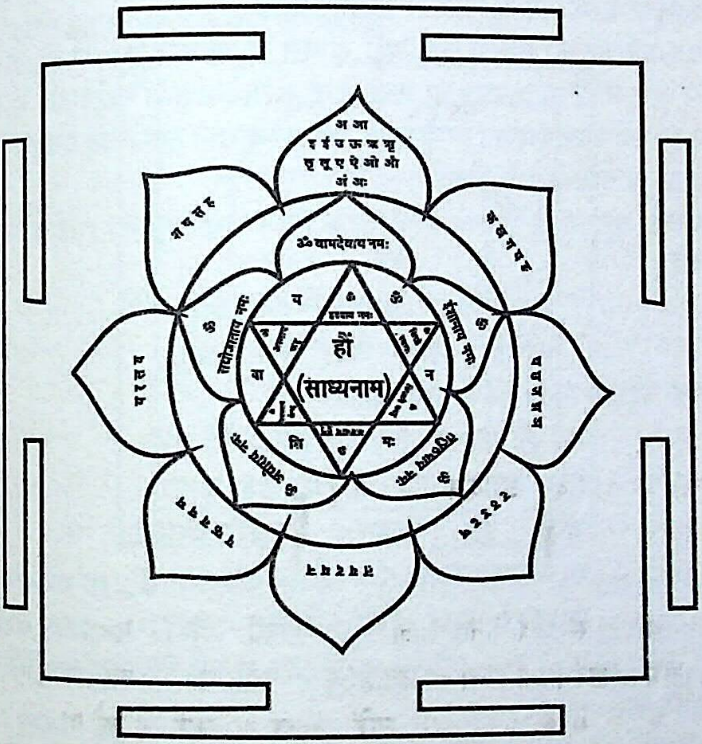


*सिद्धमृत्युंजय यंत्र*

सिद्धमृत्युंजय यंत्र का स्थान उपासना के क्षेत्र में मंत्र के बाद आता है। वैसे भी ब्रह्माजी ने ध्वनि–विज्ञान के मूलसूत्र को लेकर 'ॐ' की रचना की। यही 'ॐ' या



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओंकार' बाद में विभिन्न मंत्रों का जनक बना। इस प्रकार मंत्र-सृजन के पश्चात् विष्णुजी ने चित्रात्मकता के द्वारा यंत्रों की रूपरेखा निर्मित की। यदि जप के लिए मंत्र आवश्यक है, तो पूजा के लिए यंत्र आवश्यक माना गया है। अर्थात् यंत्र इष्टदेव की अभ्यंतर मूर्ति है। लिपि का पूर्णरूप यंत्रों से सिद्ध है। जिस प्रकार यंत्र का उपयोग पूजा के लिए होता है, उसी प्रकार धारण के लिए भी किया जाता है।

यंत्र जिस रूप में भी प्रयोग किया जाने वाला हो, सर्वप्रथम उसकी उपासना के नियमों का पालन करना अनिवार्य है। इसी से यंत्र सिद्ध होता है। बिना सिद्ध हुआ यंत्र प्रयोग करने पर लाभ नहीं करता; उसका प्रयोग व्यर्थ होता है। मृत्युंजय यंत्र की रचना के लिए शिवरात्रि, प्रदोष अथवा सोमवार का दिन विशेष उत्तम है। ज्योतिष-विज्ञान के अनुसार रविपुष्य योग, गुरुपुष्य योग अथवा अमृतसिद्धि योग यंत्र-रचना के लिए श्रेष्ठ माना गया है।

उपरोक्त यंत्र की रचना भोजपत्र अथवा ताम्रपत्र पर करनी चाहिए। रचना के पश्चात् विधिवत प्राण-प्रतिष्ठा करानी भी आवश्यक है। किसी शुभ मुहूर्त में नित्यकर्म से निवृत्त होकर, श्रीगणेशजी का स्मरण कर संकल्प, गुरुपूजा, गणपतिपूजा तथा शिवपूजा करके यंत्र को पीठ पर स्थापित करें।

प्राण-प्रतिष्ठा की प्रार्थना करें। यदि कागज या भोजपत्र का यंत्र हो, तो कुश से मार्जन और चांदी या ताम्रपत्र पर बना हो तो अभिषेक करें। पहले जल से, फिर पंचगव्य से, तदोपरांत पंचामृत व गंगाजल से स्नान कराएं। तत्पश्चात् गंधपुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य एवं दक्षिणा अर्पित करें।

तदनन्तर कुशाग्र से यंत्र का स्पर्श करके निम्न यंत्रगायत्री का 108 की संख्या में जप करें–

**यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय,**
**धीमहि। तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्।**

इसके पश्चात् निम्न मंत्र से प्राण-प्रतिष्ठा करें–

**आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हौं हंसः**
**मृत्युंजयदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः**
**जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि**
**वांमनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रघ्राण प्राणा**
**इहागत्यं सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।**

इस प्रकार यंत्र की प्राण-प्रतिष्ठा करके जप से पूर्व निम्नलिखित विनियोग एवं न्यासादि करें–

*विनियोग*–**ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठा ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानिच्छंदांसि, प्राणाख्या देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कीलकं, देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

*ऋष्यादिन्यास*—ॐ ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः (*शिरसि*), ॐ ऋगयजुः सामच्छन्दोभ्यो नमः (*मुखे*), ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः (*हृदि*), ॐ आं बीजाय नमः (*गुह्ये*), ॐ ह्रीं शक्तये नमः (*पादयो*), ॐ क्रौं कीलकाय नमः (*नाभौ*), विनियोगाय नमः (*सर्वांगे*)।

उपरोक्त यंत्र की नित्य पूजा अथवा धारण करने से सर्व प्रकार के रोगों-कष्टों की निवृत्ति हो जाती है और शारीरिक सुख प्राप्त होता है। साथ ही अकालमृत्यु का भय टल जाता है।

## देहरक्षा-कवच का महामृत्युंजय यंत्र

यह यंत्र एक कवच के रूप में शरीर की रक्षा करता है तथा व्यक्ति को हर अला-बला, विपत्ति, रोग और अकालमृत्यु से बचाता है। यह एक बहुत ही प्रसिद्ध यंत्र है। प्रायः तंत्रशास्त्र के सभी विद्वान लेखकों ने अपनी पुस्तकों में किसी न किसी रूप में इस यंत्र का उल्लेख अवश्य किया है। हम भी पाठकों के लाभार्थ विधि सहित इसका उल्लेख यहां कर रहे हैं।

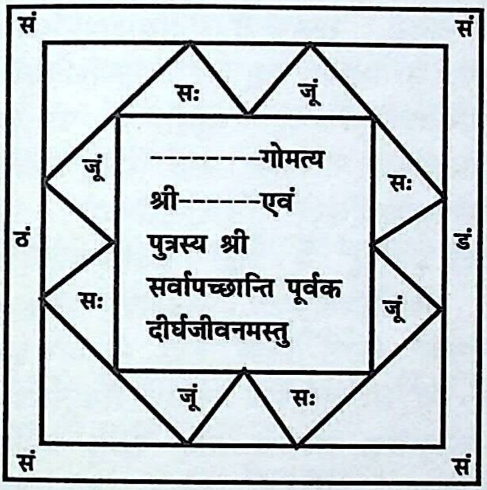


भोजपत्र पर यंत्र की रचना करके, पूर्ण विधि-विधान के साथ उसे चांदी के कवच में भरकर दाएं बाजू में बांधना चहिए अथवा गले में लटकाना चाहिए। किन्तु पहले यंत्र को आठ तहों में करके चांदी के कवच में भर लेना चाहिए। फिर काले डोरे में पिरोकर उसे बांधना या लटकाना चाहिए।

*विनियोग*—अस्य श्रीमहामृत्युंजयकवचस्य श्रीमहादेवऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, श्रीमृत्युंजयरुद्रोदेवता, ॐ बीजं, जूं शक्तिः, सः कीलकम्, मम् (*प्रयोगकर्त्ता*



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का नाम ले) रक्षार्थं कवचपाठे विनियोगः।

*ऋष्यादिन्यास*–श्रीमहादेव ऋषये नमः (*शिरसि*), अनुष्टुप्छंदसे नमः (*मुखे*), श्रीमृत्युंजयरुद्रदेवतायै नमः (*हृदि*), ॐ बीजाय नमः (*गुह्ये*), जूं शक्तये नमः (*पादयो*), सः कीलकाय नमः (*नाभौ*), विनियोगाय नमः (*सर्वांगे*)।

इसके बाद 'ॐ जूं सः' मंत्र से करन्यास व हृदयादिन्यासादि करें।

*ध्यान*–

हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भ युगला–दुद्धत्य तोयं शिरा
सिंचन्तं करयोर्युगेन दधतंस्वांके सकुम्भौ करौ।
अक्षस्त्रङ् मृगस्त मम्बुजगतं मूर्द्धस्थ चन्द्रस्रवत्–
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युंजयम्।

*कवच*–

शिरो मे सर्वदा पातु मृत्युंजय सदाशिवः।
स त्र्यक्षर स्वरूपों मे वदनं च महेश्वरः॥
पंचाक्षरात्मा भगवान भुजौ मे परिरक्षतु।
मृत्युंजयस्त्रिबीजात्मा ह्यायू रक्षतु मे सदा॥
बिल्ववृक्ष समासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः।
सदा मे सर्वदा पातु षट्त्रिंशद्वर्णरूपधृकः॥
द्वाविंशत्यक्षरो रुद्रः कुक्षौ में परिरक्षतु।
त्रिवर्णात्मा नीलकंठः कंठं रक्षतु सर्वदा॥
चिंतामणिर्बीजपूरे ह्यर्द्धनारीश्वरो हरः।
सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसंपत्प्रदायकः॥
स त्र्यक्षरस्वरूपात्मा कूटरूपो महेश्वरः।
मार्तण्ड भैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु॥
ॐ जूं सः महाबीज स्वरूप स्त्रिपुरान्तकः।
ऊर्ध्वमूर्धिन चेशानो मम रक्षतु सर्वदा॥
दक्षिणस्यां महादेवो रक्षेन्मे गिरिनायकः।
अघोराख्यो महादेवः पूर्वस्यां परिरक्षतु॥
वामदेवः परिश्चमायां सदा मे परिरक्षतु।
उत्तरस्यां सदा पातु सद्योजातस्वरूपधृक्॥

कवच पाठ के पश्चात् यंत्र के मंत्र का एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए। इसी से यंत्र सिद्ध हो जाता है। यह प्राणों की रक्षा करता है। इसका प्रताप



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काल का क्रोध भी शमन कर देता है। यह यंत्र जब तक बंधा रहता है, कवच रूप में अपने स्वामी का जीवन सुरक्षित रखता है।

## भगवान मृत्युंजय के मंत्र

मंत्रों का जप भगवान श्रीशिव की प्रसन्नता, उनसे भक्ति और मुक्ति की मांग तथा किसी विशेष प्रयोजन की आपूर्ति हेतु किया जाता है। प्रयोजन-विशेष की स्थिति में मंत्र का जप पूर्ण विधि-विधान के साथ किया जाना चाहिए। जप की संख्या भी उसी हिसाब से निर्धारित की जाती है। यह मंत्र मृत्युंजय भगवान शिव का सबसे सरल, मोक्ष प्रदायक और सभी कामनाओं की आपूर्ति में समर्थ है–

**ॐ नमः शिवाय**

इस छह अक्षर के मंत्र से भगवान श्रीशिव को नमन किया जाता है। उपासना के अंत में तो इस मंत्र का जप किया ही जाता है, मंदिरों में पूजा करते और शिवलिंग पर जल चढ़ाते समय भी इसी मंत्र का उच्चारण होता है। यदि इस मंत्र का जप अधिक मात्रा में किया जाना हो, तो इसके प्रणव 'ॐ' को हटाकर 'नमः शिवाय' का जप भी किया जा सकता है। प्रायः तांत्रिक साधनाओं में इसी रूप में मंत्र को जपा जाता है।

**शिवतराय:**

'नमः शिवाय' की तरह यह भी पांच अक्षर का मंत्र है तथा उसी के समान हर प्रकार के कार्यों को सिद्ध करने वाला है। शरीर में चाहे जैसा रोग हो, इसका जप रोग का शमन अतिशीघ्र कर देता है।

**मयस्कराय**

पंचाक्षर का यह मंत्र दुःख, क्लेश और रोगों का नाशकर्त्ता है। भक्तिवर्धन एवं कल्याण प्राप्त करने हेतु भी इस मंत्र का जप किया जाता है।

**ॐ नमो रुद्राय**

शिवजी के रुद्र रूप को नमस्कार करने का यह मंत्र हर प्रकार की पीड़ाओं, पापों, रोग और शोकों को दूर करने वाला है।

**ॐ नमः शिवतराय**

मंगल प्रदायक-कल्याणकारी शिव के सौम्य रूप का यह मंत्र हर प्रकार के विघ्नों को नष्ट करने वाला और लौकिक एवं अलौकिक सिद्धियां प्रदान करने वाला है।

**मृत्युंजय नित्यं यः करोति दिने दिने।**
**तस्य रोगाः प्रणश्यंति दीर्घायुश्च प्रजायते।।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिदिन प्रातःकाल पूजा के समय इस महामृत्युंजय मंत्र का जप करने से साधक के सभी रोग नष्ट हो जाते हैं तथा वह दीर्घायु, प्राप्त करता है।

**ॐ ह्रीं क्रों आं वैवस्वताय**
**धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः।**

इस मंत्र का नित्य प्रातःकाल जप करने से यमराज प्रसन्न होकर आपत्तियों का नाश तथा नरक से मुक्ति देते हैं।

**आदौ प्रासादबीजं तदनु मृतिहरं तारकम् व्याहृतीश्च,**
**प्रोच्चार्य त्र्यम्बकं यो जपति मृतिहरं भूय एवैतदाद्यम्।**
**कृत्वा न्यासं षडंगं स्त्रवदमृतकरं मंडलांतः प्रविष्टं,**
**ध्यात्वा योगीशरुद्रं स जयति मरणं शुक्रविद्याप्रसादात्॥**

उपरोक्त मृत्युंजय मंत्र का षडंगन्यास एवं योगीश्वर शिव का ध्यान करके जो इसका जप करता है, वह शुक्रविद्या की कृपा से मृत्यु को जीत लेता है। अतः इस मंत्र को शुक्रविद्या भी कहते हैं।

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ उर्वारुकमिव बंधनात् ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः भुवः भूः सः जूं हौं ॐ।**

असाध्य रोग की निवृत्ति के लिए इस मंत्र का जप करने तथा शिवलिंग पर मट्ठे से अभिषेक करने से शीघ्र आराम मिलता है। इसकी नित्य प्रातः 11 माला जप करना अनिवार्य है।

□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

15

# श्रीमहामृत्युंजय शरणागति

भगवान महामृत्युंजय की शरण में जाना ही अपने जीवन को अमर बनाना है। किसी भी रूप में भगवान से ध्यान लगाना ही उनकी शरण में जाना है। जो भी मनुष्य भगवान महामृत्युंजय श्रीशिव की शरण में जाता है, भगवान उसका कल्याण करते हैं। उसके दुःख, रोग, क्लेश और मृत्यु-भय को समाप्त कर देते हैं। उसकी हरेक परेशानी का निराकरण कर देते हैं। उन्होंने अपनी शरण में आने वाले को कभी खाली हाथ नहीं लौटाया। जितने समय उपासक भगवान शिव के दिव्य और मनोहर रूप-स्वरूप को हृदय में बसाकर अष्टकों, स्तोत्रों, साठिका, चालीसा, स्तुति एवं स्तवन करता है, भावलोक में वह आशुतोष भगवान मृत्युंजय शिव की मोहक छवि के दर्शन करता रहता है। भगवान जिसे अपनी शरण में स्थान दे देते हैं, उसका इस धरती पर आना चरितार्थ हो जाता है।

## श्रीशिव सहस्रनामावलि

भगवान शिव औघड़दानी, परम भक्तवत्सल, शीघ्र प्रसन्न होने वाले देवाधिपति, घट-घट वासी तथा त्रैलोक्य के स्वामी हैं। सकल ब्रह्मांड में जितने भी जड़- चेतन पदार्थ, पशु-पक्षी, जलचर-नभचर, मानव-दानव, देव एवं असुर हैं, वे सभी श्रीशिव के अंश रूप हैं। सभी नाम शिव को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में संबोधित करते हैं। सहस्रनामावलि में श्रीशिव को एक हजार नामों से संबोधित किया गया है। जो भी इन नामों को जपता है, इन नामों का स्मरण करता है, इन नामों के द्वारा भगवान की आराधना करता है, भगवान उसे अपनी शरण में लेकर उसके सभी दुःखादि हर लेते हैं।

इस सहस्रनाम के रचयिता श्रीविष्णु माने जाते हैं, क्योंकि विष्णु ने ही इन नामों को श्लोकों के रूप में स्तवन कर शिवजी की स्तुति की थी। यहां हम उस



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्रनामावलि का हिंदी रूपांतर दे रहे हैं, जिनको जप कर साधकजन श्रीशिव की शरण में जाने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं–

सदाशिव, सृष्टि के हर्त्ता, सुखदाता तथा दुःखों को हरने वाले, पुष्टि देने वाले, परिपुष्ट नेत्रधारी, धर्म, काम और मोक्ष को चाहने वाले सदा आपकी सेवा किया करते हैं। श्रेष्ठ आचरणवान, प्रजा के सुखदाता एवं संहारकर्त्ता, सबके ईश, परब्रह्म परमात्मा, मस्तक पर चंद्रमा से शोभायमान, विश्वस्वरूप, विश्व के पालक, वेदांत तत्त्व के ज्ञाता, कपाली, लाल–लाल एवं श्याम जटाधारी, अविनाशी, ज्ञान के आधाररूप, पार्वतीनाथ, प्रमथादिगणों के स्वामिन्, आकाशादि अष्टमूर्तियों वाले



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वस्वरूप, अर्थ, धर्म, काम, स्वर्गादि की प्राप्ति के साधन, विज्ञान के पूर्ण ज्ञाता, देवाधिदेव, त्रिनेत्रधारी, विपरीत देव, सारे देवताओं में महादेव, परम चतुर, कुशल एवं रक्षक, पुष्ट, बलवान, विश्वरूप, त्रिनेत्र, वाणी के अधिपति, समस्त देवों में बड़े, सब प्रमाणों के ज्ञाता, वृष लक्षणों वाले, वृषभ के सवार, सर्वेश्वर, पिनाक धनुष वाले, खट्वांगधारी, अद्भुत वेश वाले, त्रिकालबाधित अज्ञानमन अंधकार के नाशक, महायोगी रक्षक, ब्रह्मांडहर्ता, जटाधारी, कालों के भी काल, व्याघ्रादि चर्म को वस्त्रों की भांति धारण करने वाले, उत्तम विभव वाले, ओंकार स्वरूप, पापियों को दंड देने वाले, सभी प्राणियों में निवास करने वाले, सेवा एवं भजन योग्य, दुर्वासा का अवतार ग्रहण करने वाले, त्रिपुर दैत्य के विनाशक, श्रेष्ठ अस्त्रधारक, कार्तिकेय स्वामी के पिता, परब्रह्म, प्रकृति से परे, आदि-अंत एवं मध्य से रहित, पर्वतों के स्वामी, उमानाथ, कुबेर के भ्राता, सुंदर कंठधारी, सर्वश्रेष्ठ लोक तथा वर्ण वाले, सीधे स्वभाव के समाधिगम्य, धनुर्धारी, नीलकंठ, अद्भुत प्रकाशमान विशाल नेत्र, सृष्टि तथा संहार के समय मृगरूप, जीवों के लिए शिवकारी, देवेश, सूर्य के प्रचंड तप की तरह दुष्टों को तापित करने में समर्थ, धर्म के स्वामी, सहनशील, शीतल प्रकृति, वैभवों के स्वामी, भगवान के नेत्र निकालने वाले, क्रोधी, जीवों के नाथ, गरुड़ रूप धारक, भक्तों के प्रेमी, उत्तम तपस्वी, सबके दाता, दयासागर, परम चतुर, जटाजूट धारक, काम दंडदाता, श्मशानवासी, सूक्ष्म रूप से सब में रहने वाले, सर्व समर्थ, सृष्टिकर्त्ता, जीवों के नाथ तथा पंच महाभूतों के रचयिता हैं।।100।।

संसार को आवागमन से छुड़ाने में महौषध, सोमरस पीने वाले, अमृतपान करने वाले, नम्र, महातेजस्वी, उत्तम कांतिमान, प्रकाशमय, जलरूप, मृत्युरहित, अन्नरूप, प्रतापी, अमृतस्वामी, संसार से पार कराने वाले, स्वर्ग-पृथ्वी, पशु-वाणी-जल एवं इंद्रियों के स्वामी, रक्षक, विज्ञान से प्राप्य, समय से अविनाशी, नीतिज्ञ, उत्तम नीति रूप, शुद्ध अंतःकरण, चंद्रूप, सोमरस में श्रेष्ठ, सदा सुखी, अजातशत्रु, स्वयं प्रकाश, देवताओं में श्रेष्ठ, अग्निरूप, लोक रचयिता, वेद तथा सूत्र रचयिता, अनादि, काल, सर्व वेदों के ज्ञाता, जगत को प्रकाशित करने वाले, त्रिनेत्रधारी, ब्राह्मण स्वरूप, महामंगल, सुंदर, बुद्धि संपन्न, पृथ्वी के धारक, प्रकाशक, भक्तों के मनोरथ पूरक, सबके नाथ, वेद तथा ब्रह्मा के रचयिता, विश्वकारक, सृष्टिरूप, सर्वज्ञाता, कनेर पुष्पप्रिय, शाखानामधारी, विशाखनाम, वेदशाखानाम, वेदशाखामय, त्रिगुणभिन्न, उत्तम वैद्य, प्रवाहित गंगाजल, सम, निर्मल, कांतिमय, श्रेष्ठ, सृष्टि रचयिता, स्थिररूप, आत्मा को वश में रखने वाले, आत्मा के विधाता, जीवमात्र को



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मफल देने वाले, गणसेवित, गणशरीर, निर्मल कीर्ति, निःसंशय, काम स्वरूप, इच्छापूरक, भस्मधारी, भस्मप्रेमी, भस्म की शय्या वाले, कामना वालों के प्रेमी, संसार चलाने वाले, आत्मनिवृत्ति रहित, धर्म समूह तथा मंगलरूप, निष्पाप, पवित्रात्मा, चतुर्भुज, दुष्टों के लिए असह्य, दुर्लभ, कठिनता से ज्ञेय, महाकठिन, अस्त्र-शस्त्रों में चतुर, विद्याओं के निधान, अध्यात्म योगी, संसार के आधार, सृष्टिवर्धक, सुंदर अंगों वाले, भ्रमरों की भांति लोकतत्त्वज्ञाता, जगदीश, संहारक, भस्म द्वारा पवित्र करने वाले, अभय, आत्मबली, शुद्ध शरीर, कठिनता से लभ्य, सज्जनों द्वारा भजनीय, हनुमान स्वरूप, अग्निरूप, पुराणरूप, शत्रु विनाशक तथा महाबली हैं।। 200।।

महाकुण्डरूप, अपार मायाधारी, देवसिद्धि, गणवंदनीय, व्याघ्रचर्म, गणसर्पों के भूषणधारी, महाविराट, उत्पादक, संपूर्ण जीवों के कोश, अमर, वायुरूप, स्वात्मसुखरूप, अमृतपानकर्ता, शोभामय, पच्चीस तत्त्वों के मध्य में अग्निरूप, कल्पवृक्ष, सुलभता से जाति एवं आश्रमों के चालक, ब्रह्मचारी, शत्रु-विजयी, आश्रमरूप, परिश्रम के दूरकर्ता, परम ज्ञानी, पर्वतों के नाथ, प्रमाण-रचयिता, कठिन लभ्य, गरुड़रूप, वायु पर सवार, धनुर्वेदज्ञ, उत्तम स्नान, सत्यरूप, दीनतारहित, पृथ्वी तथा धर्म स्वरूप, पृथ्वी एवं धर्म के शासक, अपार दृष्टि वाले, दमन और निग्रहकर्ता, अभिचारी, मायाधारी, विश्व की रचनाओं में चतुर, राग-द्वेष विनाशक, तपस्वी, जीवों के वर्द्धक, मतवाले, विजयी, विष्णु प्रेम वाले, सभी लोगों के मन की गति जानने वाले, वेगवान, उद्धारक, बुद्धिमान, मुख्य परमात्मा, अविनाशी, लोकपालक, अंतर्यामी, कल्पों के आदि, कमलनेत्र वाले, आनंददायक, चंद्रदायक, चंद्रमास्वरूप, सूर्यरूप, शनिरूप, धूम्रकेतु रूप, उत्तमांग, मूंगे के समान शोभित, शक्ति के अधीन न होने वाले, महाशक्तिशाली, परब्रह्म, मन की भांति वेगवान, अनघ, निष्पाप, पर्वतरूप, पर्वतवासी, प्रियमूर्ति, मंगल सेवित, महातपस्वी, दीर्घतपस्वी, अतिस्थूल, वृद्धस्वरूप, स्थिरदिन, प्रणामरूप, प्रिय मूर्ति, मंगल सेवित, महादीर्घतपस्वी, वर्षाकाल, सर्वव्यापक, उत्तम, ऋतु, सत्यरूप, संवत्सरकर्त्ता, मंत्रों के आधीन, सबके तारक, अजन्मा, सर्वेश्वर, निवृत्त, निष्यंतरूप एवं योगसिद्ध हैं।। 300।।

अतिपराक्रमी, सफलस्वरूप, सबके आदि, अधर्मीजन अज्ञेय, कुबेररूप, प्रकाशमय, मनस्वी, सत्यस्वरूप, पाप विनाशक, सुंदरकीर्ति, शोभामय, मालाधारक, प्रकृतिरूप, भोजन के भोक्ता, पुरुषरूप, लोकनाथ, दुष्टजनों से आराधना रहित, नित्य अमृतमय, शांतरूप, बाणहस्त, परम प्रतापी, कमंडलधारक, मनवाणी से परे, इंद्रियरहित, मायाधारी, सर्वव्यापक, चार मार्गों वाले, प्रवृत्तकर्त्ता, महाउत्साही, महाबली,



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेष्ठ बुद्धि, महावीर, भूतगणसेवित, त्रिपुरदैत्य विनाशक, रात्रिकाल में विचरने वाले, शक्तिशाली, महाकांत, अज्ञेय शरीर, शोभायमान, आचार्यों के मनगति ज्ञाता, शास्त्र-रचयिता, विधिमाया-रचयिता, स्थिर आत्मा, चररूप, तेजरूप, कांतिरूप, ओंकार-अक्षर रूप, ज्ञानवान, मंत्ररूप, समभाव, तत्त्वरूप, नौकारूप, युग प्रवर्तक, अति गंभीर, सर्वमहान, महात्माओं के प्रिय, सुलभ, तत्त्वशोधक, तीर्थस्वरूप, तीर्थनाम, तीर्थों के प्रापक, सागररूप, विजयज्ञाता, प्रशंसनीय, सुवर्ण कवचधारक, बिंदु के आश्रय, त्रिताप नाशक, निर्मल, प्रपंची, विस्तारक, साधक, कारणमय, सर्वकर्त्ता, सभी बंधकों के मोचक, सत चित् मात्ररूप, व्यवस्थापक, स्थानदाता, द्वैताद्वैतस्वरूप, सदानूतन, वीरभद्र और गणरूप हैं ।। 400।।

गुरुविधान, वीरासन, शूरवीर, शिरोमणि, सर्वदाता, आनंदरूप, नंदीश्वररूप, जगत्रूप, त्रिशूलधारक, बालखिल्यस्वरूप, श्रोयइंद्रिय रहित, इंद्ररूप, विश्वामित्र स्वरूप, प्राणियों के अंत, त्रिनेत्रधारी, तत्त्वरूप, संसारचक्र धारक, सफल दंडदाता, प्रलय में संसार के संहर्ता, ब्रह्मतेज स्वरूप, मुक्तिदाता, एकत्रितकर्त्ता, छविमय, वाणी के नाथ, दिवाकर, रसग्रहणकर्त्ता, यमरूप, कैलासनाथ, विश्वरूप, निर्भय; विश्वपालक, कर्मों के फलदाता, जन्म-मरण रहित, मंगलस्वरूप, पवित्र, ध्येय, दुःस्वप्न नाशक, संसार-सागर से उद्धार करने वाले, अनादि, किरीट धारक, स्वर्ग के स्वामी, जगत-रक्षक, गतियुक्त, जन्मादिकारक, कश्यपरूप, ॐ रूप, महाकोष, जन्म के स्वामी, सबसे बड़े देव, तत्त्वज्ञ, एकरूप, ब्राह्मणरूप, वैभवजन्य तथा विष्णुविभूषण हैं ।। 500।।

पंचतत्त्वोत्पादक, विश्वेश्वर, मंगलकर्त्ता, आदि-अंत रहित, पवित्र किरण धारक, दिनकर्ता, बालकरूप, संसार के राजा, देव-शत्रु विनाशक, नेमिरहित, इच्छितनेम, सर्वतापरहित, स्वप्रकाशमान, आदित्यरूप, बृहस्पतिरूप, उधमकर्त्ता, सत्यरक्षक, असत्यनाशक, आकाशरूप, शवनक्षय मालारूप, स्वात्मपद के आधार, शुद्ध स्वरूप, अघनाशक, मणिप्रदाता, आकाशविहारी, हृदयकमल में स्थित, गृहस्वामी, कृष्णरूप, अधर्म के शत्रु, अगम्य, आराधनीय, महानगर्भ स्थानधारी, आगमरूप, मोहनकर्त्ता, बुद्धअवतार, प्राणियों में रमणकर्त्ता, नारदरूप, रोगरहित, नेत्र स्वामी, माता-पिता, पवनरूप, पुलस्त्य, ऋषिरूप, पुलहस्वरूप, अगस्त्यरूप, जातुकर्ण्यऋषिरूप, पराशररूप, अनिरुद्धस्वरूप, अत्रिरूप, लोकवीर, शिरोमणिशूर, महाकल्परूप एवं कल्पवृक्षरूप हैं।। 600।।

शब्द एवं आयु के स्वामी, वाचाल, अग्निसारथी, अस्पृश्यरूप, अतिथिरूप, आसनधारी, श्रवणकर्त्ता, भजनीय, जरा व आदि रोग विनाशक, अंधकार के निवर्तक,



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रीष्मरूप, मेघराज, शिशिररूप, बसंतरूप, बैसाख मासरूप, ग्रीष्मभाद्रपदरूप, धान्यप्रापक, शरदेहमंतरूप, अंगिराऋषिरूप, दत्तात्रेयस्वरूप, निर्मल विश्ववाहन, वेदत्रयीज्ञाता, अहंकारस्वरूप, क्षेत्रज्ञ, क्षेत्ररक्षक, जमदग्निरूप, सागररूप, सर्वमुक्तिरूप, कालरूप-स्वरूप, भयंकरता रहित, यज्ञरूप, शुभ कल्याणदाता, गगन, कुंदवत् शोभायुक्त, रात्रि रचयिता, लोक एवं कल्प के धारक, सर्ववेदरूप, बलोंयुक्त, विशालकाय, सर्वस्वरूप, चराचररूप, न्यायकर्त्ता, हजार सिरों वाले, मुंडितसिर, श्रीवत्स स्वरूपधारक, इंद्रियदमनकारक, सहस्रभुजाधारी, भक्तों के शरणदाता, सर्वलोकधारक, फलदायक, पद्मगर्र, महागर्भ, विश्वगर्भ, वरदाता और वर्णनीय हैं।। 700।।

ईश्वर, स्वामी, अलौकिक रूपवान, महानादरूप, सुरासुर गुरु, देवों की आत्मा, शीघ्र प्रकट होने वाले, दयालु, परमदेव, देवों में सिंह, दिनकर्त्ता, अपने ही ज्ञान में रमणकर्त्ता, चूड़ावान, श्रीपार्वती के प्रेमी, वज्रहस्त, तलवारधारक, नृसिंह मद विनाशक, ब्रह्मचारी स्वरूप, लोकों में विचरण करने वाले, नंदी के ईश्वर, अंतरहित, नग्न रहने वाले, व्रतधारी, लिंग स्वामी, युगस्वामी, सप्त स्वरों के चालक, वाणी के स्वामी, स्वर्ग के पवन, बीज उत्पादक, धर्म संचालक, श्मशानवासी, सेतुस्वरूप, मूर्तिआकार से रहित, त्र्यम्बक, सर्पभूषणधारी, अंधका- सुरशत्रु, मयदानव शत्रु, स्कंध को गिराने वाले, पूषा के दांत तोड़ने वाले, भक्तों के प्रेमी, धतूरे के सेवनकर्त्ता, जटाधारी, अपरिछिन्न, वीर्यधारी, महाकालरूप, सृष्टि व प्रलय में ग्राह्य स्वरूप तथा महेश्वर हैं।। 800।।

कृपासागर, मंद मुस्कान युक्त, जगन्नाथ, निराकार, त्रिलोकीरक्षक, त्रिलोकीनाथ, संयमरूप, ब्रह्मा-विष्णुरूप, योगियों की गति, पक्षीरूप, कर्मफलदाता, नित्य गतिरूप, हिरण्यगर्भ, परब्रह्म, ध्यानरूप, उपदेशदाता, निरुपद्रव, अर्थों के धारणकर्त्ता, तीनों कालों के स्वामी, निष्कंटक, नित्यानंदरूप, बली, उद्यमी, सत्त्वरहित, सत्य स्नेहकर्ता, निष्कल्पगुणज्ञ, सुखदाता, लघुरूपधारी, सहन करने में समर्थ, प्रीतिवर्धक, किसी से न हारने वाले तथा सर्वत्र प्रकट होने वाले हैं।। 900।।

सच्ची सवारी वाले, गौओं के स्वामी, किसी के आश्रय पर न रहने वाले, अपने गौरव पर निर्भर, पूर्ण पवित्ररूप, वाराह के दंतरूप, अनेक रूप धारण करने वाले, कल्याणकर्त्ता, भूशायी, जीवों को रचने वाले, काल को क्षीण करने वाले, कलानाथ, सत्यव्रती, महात्यागी, सदा शांतरूप, धन, आजीविका तथा जीवनदाता, भंडारी, रोगादि निवारक, शुभकर्त्ता, सुंदर कामधारी, संसारद्रष्टा, अकर्त्ता, गुणग्रहणकर्त्ता, न्यायकर्त्ता, सहायक समय, काल के भी काल, वासुकी सर्प के रचयिता, सफल



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधना सिद्धदाता, विशाल छाती वाले, विशाल भुजाधारी, स्तुतिमय, सर्वव्यापक, निरवधस्वरूप, साकलीऋषिरूप, परमार्थरूप, अर्पित भेंटों को स्वीकार करने वाले, स्तुति से प्रसन्न होने वाले, शंकर, मृत्युंजय, शिव, सदाशिव और शरणागत-रक्षक हैं।। 1000।।

पौराणिक काल में जगत् के पालनकर्त्ता श्रीविष्णु ने सर्वप्रथम इस सहस्रनामं द्वारा मृत्युंजय भगवान शिव की आराधना की थी और प्रत्येक नाम के उच्चारण के साथ एकेक पुष्प शिवजी को अर्पित किया था। इससे प्रसन्न होकर भगवान शिव ने साक्षात् प्रकट होकर विष्णुजी को सुदर्शन चक्र और अभय का वरदान दिया। उन्होंने यह भी कहा कि जो व्यक्ति प्रातःकाल मेरा पूजन करने के बाद इस सहस्रनाम का नियमपूर्वक खड़े होकर स्तवन करेगा, उसे सभी सिद्धियां और मेरी विशेष कृपाएं प्राप्त होंगी। यह दैहिक व दैविक तापों का रक्षक, सुख-समृद्धि प्रदायक, अकालमृत्यु निवारक तथा मोक्ष-प्रदायक है।

## शिवाष्टक

जिस प्रकार 'श्रीरामचरितमानस' में *गोस्वामी तुलसीदास* जी द्वारा लिखित 'रुद्राष्टक' शिव-स्तुति के क्षेत्र में विख्यात है, उसी प्रकार आदि शंकराचार्य ने भी एक 'शिवाष्टक' की रचना की थी। भगवान शिव की भक्ति से ओत-प्रोत वह स्तोत्र इस प्रकार है–

**तस्यै नमः परमकारणकारणाय, दीप्तोज्ज्वलज्ज्वलितपिंगललोचनाय।**
**नागेन्द्रहारकृतकुंडलभूषणाय, ब्रह्मेन्द्रविष्णुवरदाय नमः शिवाय।। 1।।**
**श्रीमत्प्रसन्नशशिपन्नगभूषणाय, शैलेन्द्रजावदन चुम्बितलोचनाय।**
**कैलाशमन्दरमहेन्द्रनिकेतनाय, लोकत्रयार्तिहरणाय नमः शिवाय।। 2।।**
**पद्मावदातमणिकुण्डलगोवृषाय, कृष्णागरु प्रचुर चन्दन चर्चिताय।**
**भस्मानुषक्तविकचोत्पलमल्लिकाय, नीलाब्जकण्ठसदृशाय नमः शिवाय।। 3।।**
**दक्षप्रजापति महामखनाशानाय, क्षिप्रं महात्रिपुर दानवघातनाय।**
**ब्रह्मोर्जितोर्ध्वगकरोटिनिकृन्तनाय, योगाय योगनमिताय नमः शिवाय।। 4।।**
**लम्बत्सपिंगलजटामुकुटोत्कटाय, दंष्ट्राकरालविकटोत्कट भैरवाय।**
**व्याघ्राजिनाम्बरधराय मनोहराय, त्रैलोक्यनाथनमिताय नमः शिवाय।। 5।।**
**संसार सृष्टि घटना परिवर्तनाय, रक्षः पिशाचगणसिद्ध समाकुलाय।**
**सिद्धोरगग्रहगणेन्द्रनिषेविताय, शार्दूलचर्मवसनाय नमः शिवाय।। 6।।**
**भस्मांगरागकृतरूप मनोहराय, सौम्यावदातवन माश्रितमाश्रिताय।**
**गौरीकटाक्षनयनार्द्ध निरीक्षणाय, गोक्षीरधारधवलाय नमः शिवाय।। 7।।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदित्यसोमवरुणा निलसेविताय, यज्ञाग्निहोत्रवरधूनिकेतनाय।
ऋक् सामवेद मुनिभिः स्तुतिसंयुताय, गोपाय गोपनमिताय नमः शिवाय॥ 8॥

## श्रीविश्वनाथाष्टक

महामृत्युंजय भगवान के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक वाराणसी स्थित श्री विश्वनाथजी की स्तुति में एक अष्टक उपलब्ध होता है। ऐसी मान्यता है कि इसकी रचना *महर्षि वेदव्यासजी* ने की थी। साधकजन आज भी इस स्तोत्र का बड़ी श्रद्धा के साथ पाठ करते हैं–

गंगातरंग रमणीयजटाकलापं, गौरीनिरन्तर विभूषितवामभागम।
नारायणप्रियमनंगमदापहारम्, वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ 1॥
वाचामगोचरमनेक गुणस्वरूपं, वागीशविष्णुसुरसेवित पादपीठम्।
वामेनविग्रहवरेण कलत्रवंतम्, वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ 2॥
भूताधिपं भुजगभूषणभूषितांगं, व्याघ्राजिनांबरधरं जटिलं त्रिनेत्रम्।
पशांकुशाभयवरप्रदशूलपाणिम्, वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ 3॥
शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं, भालेक्षणानलविशोषितपंचवाणम्।
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरम्, वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ 4॥
पंचाननं दुरितमत्तमतंगजानां, नागान्तकं दनुजपुंगवपन्नगानाम्।
दावालनं मरणशोकजराटवीनाम्, वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ 5॥
तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितायमानन्दम पराजित प्रमेयम्।
नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपम्, वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ 6॥
रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं, वैराग्यशांतिनिलयं गिरिजासहायम्।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामम्, वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ 7॥
आशांविहाय परिहृत्कमलमध्यगतं परेशम्, पापेरतिं च सुनिवार्यमनः समाधौ।
आदायहृत्कमलमध्यगतं परेशम्, वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्। ८॥

इस स्तुति के पाठ-प्रभाव का वर्णन करते हुए श्री व्यासजी ने कहा है–

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य, व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनंतकीर्ति, संप्राप्यदेहविलये लभते च मोक्षम्॥ ९॥
विश्वनाथथाष्टकमिदंयःपठेच्छिवसन्निधौ, शिवलोकमवाप्नोतिशिवेनसहमोदते॥ १०॥

## तुलसीदास कृत रुद्राष्टक

*तुलसीदास* द्वारा रचित रुद्राष्टक शिव की प्रसन्नता एवं उनकी कृपा प्राप्त कराने वाला है। पाठकों के लाभार्थ हम इसे भी यहां प्रस्तुत कर रहे हैं–

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥ 1॥



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकाल कालं कृपालं, गुणागार, संसारपारं नतोऽहं।। 2 ।।
तुषाराद्रि शंकाश गौरं गंभीरम्, मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा, लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा।। 3 ।।
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।। 4 ।।
प्रचंड प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानु कोटि प्रकाशं।
त्रयः शूलं निर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।। 5 ।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानंद संदोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।। 6 ।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणां।
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं।। 7 ।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।
जरा जन्म दुःखौध तातप्यमानं, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।। 8 ।।

इस स्तुति के फलदायिनी के संबंध में *तुलसीदासजी* ने लिखा है–

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तोषये।
ये पठंति नरा भक्त्या, तेषां शंभुः प्रसीदति।।

अर्थात् जो मनुष्य इन श्लोकों का पाठ करते हैं, उन पर शिवजी प्रसन्न हो जाते है। उन्हें शिवजी की कृपा सहज ही प्राप्त हो जाती है। जिसे यह कृपा प्राप्त होती है, वह चिरायु होता है।

## पंचाक्षर स्तुति

श्रीशिवजी की पूजा का सर्वश्रेष्ठ और बहुप्रसिद्ध मंत्र है–'नमः शिवाय।' इस मंत्र में मात्र पांच अक्षर हैं। प्रत्येक अक्षर को लेकर उस पर एक स्वतंत्र श्लोक (स्तुति) की रचना की गई है। यह पंच अक्षर स्तोत्र शिव भक्तों में बहुत प्रचलित है। परम श्रद्धा के साथ इसका पाठ करने वालों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। उनका हर प्रकार का दुःख, कष्ट एवं रोग दूर हो जाता है।

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मांग रागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय।। 1।।
मन्दाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय, नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय, तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय।। 2।।
शिवाय गौरी वदनाब्ज वृन्द-सूर्याय दशाध्वर नाशकाय।
श्री नीलकण्ठाय वृष ध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय।। 3।।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वसिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य-मुनिन्द्र देवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय, तस्मै 'वा' काराय नमः शिवाय॥ 4॥
यक्ष स्वरूपाय जटा धराय, पिनाक हस्ताय सनात नाय, दिव्याय
देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥ 5॥

## द्वादश ज्योतिर्लिंगों की स्तुति

प्रायः श्रीशिवजी की प्रत्येक प्रतिमा (मूर्ति) पूज्य है और श्रद्धापूर्वक उसका स्तवन-पूजन करने से शिवकृपा की अनुभूति होती है। किन्तु समस्त भारतवर्ष की बारह प्रतिमाएं, जो स्वयम्भू मानी जाती हैं (इसलिए कि वे मानवकृत नहीं हैं), ज्योतिर्लिंग के रूप में विशेष महत्त्व तो रखती ही हैं, अत्यधिक पूज्यनीय भी हैं।

आज भी भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में ये अलौकिक शिवलिंग स्थापित हैं, जहां प्रतिदिन शतशः भक्तजन दर्शनार्थ पहुंचते रहते हैं। शिव 'पुराण' के अनुसार-इन द्वादश ज्योतिर्लिंगों की अवस्थिति इस प्रकार है—

सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालं ओंकारममलेश्वरम्॥
केदारं हिमवत् पृष्ठे डान्कियां भीमशंकरं।
वाराणास्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे॥
बैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकवने।
सेतुबन्धे च रामेशं, घुष्मेशं च शिवालये॥

## ज्योतिर्लिंगों की अवस्थिति

ग्रंथ भेद से कहीं-कहीं इस क्रम में अंतर भी है, किन्तु नामावली एक ही है। इस प्रकार कुछ प्रतिमाओं की अवस्थिति में भी मतभेद है। एक ही नाम की प्रतिमा के भिन्न-भिन्न स्थान बताए गए हैं। किन्तु बहुमत से, उपर्युक्त श्लोकों में वर्णित स्थान ही स्वीकृत हैं। अस्तु, कल्पना भेद से सभी स्थानों पर प्रतिमा की अवस्थिति संभव और शुद्ध हो सकती है।

सामान्य भक्तों को आज इतनी सुविधाएं नहीं हैं कि वे समस्त स्थानों एवं तीर्थों पर जाकर उन प्रतिमाओं का दर्शन-पूजन कर सकें। ऐसी स्थिति में, यदि श्रद्धापूर्वक घर पर ही उन समस्त प्रतिमाओं का स्तवन-पूजन किया जाए, तो निश्चय ही साधक को शांति एवं शिवजी की कृपा का अनुभव प्राप्त होगा। इन ज्योतिर्लिंगों की अब स्थिति निम्नवत है—



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*महाकालेश्वर*

अवंतिकायां विहितावतारम्, मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्यो परिरक्षणार्थं, वन्दे महाकाल महासुरेशम्।।

*ओंकारेश्वर*

कावेरिका नर्मदयो पवित्रे, समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव मान्धातृपुरे वसन्तं, ओंकारमीशं शिवमेकमीडे।।

*नागेश्वर*

याम्ये सदंगे नगरेऽति रम्ये, विभूषितांगं विविधैश्च भोगैः।
सद्भक्ति मुक्ति प्रदमीश मेकं, श्री नागनाथं शरणं प्रपद्ये।।

*घुश्मेश्वर*

इलापुरे रम्य विशालकेऽस्मिन्, समुल्लसन्तं च जगत् वरेण्यम्।
वन्दे महोदर तर स्वभावं, घुश्मेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये।।

*त्र्यम्बकेश्वर*

सह्याद्रि शीर्षे विमले वसन्तं, गोदावरी तीर पवित्र देशे।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं, प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे।।

*रामेश्वर*

सुताम्रपर्णी जलराशि योगे, निबध्य सेतु विशिखैरसंख्यैः
श्री रामचन्द्रेण समर्पितं तं, रामेश्वराख्यं नितं नमामि।।

*बैद्यनाथ*

पूर्वोत्तरे प्रज्जवलिका निधाने, सदावसन्तं गिरिजा समेतम्।
सुरासुराराधित पाद पद्मं, श्री बैद्यनाथं तमहं नमांमि।।

*विश्वनाथ*

सानन्द मानन्द वने वसन्तं, आनन्द कन्दं हत पाप वृन्दम्।
वाराणसीनाथ मनाथ नाथं, श्री विश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।

*सोमनाथ*

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये, ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम्।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं, तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये।।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

### केदारनाथ

महाद्रि पार्श्वे च तटे रमन्तं, सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः।
सुरासुरैर्यक्ष महोरगाद्यैः, केदारमीशं शिवमेकमीडे॥

### भीमशंकर

यं डाकिनी शाकिनिका समाजे, निषेव्यमाणं पिशिता शनैः च।
सदैव भीमादि पद प्रसिद्धं, तं शंकरं भक्तिहितं नमामि॥

### मल्लिकार्जुन

श्रीशैलश्रृंगे विबुधातिसंगे, तुलाद्रितुंगेवि मुद्रा वसन्तम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसार समुद्र सेतुम्॥

## वेदसार-स्तवन

भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म और संस्कृति के मेरुस्तंभ आदिगुरु श्री शंकराचार्यजी ने भगवान मृत्युंजय की स्तुति में समस्त वेदों के सार-स्वरूप कुछ छंद लिखे हैं, जिन्हें वेदसार कहा जाता है। इस स्तवन (स्तुति) का नियमित पाठ साधक को श्रीशिव की कृपा का अधिकारी बनाने में सहायक होता है। यह कोई साधारण स्तवन नहीं, भगवान शिव का प्रसाद है–

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं, गजेंद्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गंगवारिं, महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम्॥
महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं, विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्निंत्रिनेत्रं, सदानंदमीडे प्रभुं पंचवक्त्रम्॥
गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं, गवेन्द्राधिरूढ़ं गुणातीतरूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं, भवानीकलत्रं भजे पंचवक्त्रम्॥
शिवाकांत शंभो शशांकार्धमौले, महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप, प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप॥
परमात्मनमेकं जगद्बीजमाद्यं, निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम्।
नभूमिर्नचापो न वह्निर्न वायुर्न चाकाशमास्ते न तंद्रा न निद्रा॥
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं, तमीशं भजे लीयतेयत्रविश्वम्।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो, न यस्यास्तिमूर्तिस्त्रिमूर्तितमीडे॥
अजं शाश्वतं कारणं कारणानां, शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तमः पारमाद्यन्तहीनं, प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्॥



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते, नमस्ते नमस्ते चिदानंदमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य, नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य।।
प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ, महादेव शंभो महेश त्रिनेत्र।
शिवाकांत शांत स्मरारेपुरारे, त्वदन्योवरेण्यो न मान्यो न गण्यः।।
शंभो महेश करुणामय शूलपाणे, गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।
काशीपते करुणया जगदेतदेस्त्वं हंसिपासिविदधासि महेश्वरोऽसि।।
त्वत्तो जगद्भवति देवभवस्मरारे, त्वय्येवतिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ।
त्वय्येवगच्छति लयंजगदेतदीश, लिंगात्मकं हर चराऽचरविश्वरूपिन।।

अनेक महर्षियों और विद्वानों ने यह प्रमाणित करने का भरसक प्रयास किया है कि आज के इस कलियुगी संसार में 'महामृत्युंजय साधना एवं उपासना' से श्रेष्ठ कोई साधना नहीं है। इस साधना के द्वारा ही मनुष्य का कल्याण हो सकता है। उसे विपत्तियों, रोगों और मृत्यु-भय से मुक्ति मिल सकती है। जो लोग पूर्ण रूप से महामृत्युंजय साधना करने में समर्थ न हों, वे नित्यप्रति यदि केवल रुद्राष्टक, शिवाष्टक एवं स्तुति-स्तवन करें, तो भी शिव-चरणों का प्रसाद उन्हें मिल सकता है।

शिव से ऊंचा और महान कोई नहीं है। वे इतने ऊंचे और महान हैं कि आकाश का चंद्रमा भी उनके मस्तक के एक कोने में निवास करता है। शिव से अधिक कोई पवित्र भी नहीं है। वे इतने पवित्र हैं कि सारे ब्रह्मांड को पवित्र करने वाली गंगा भी उनके शीश पर रखकर नीचे गिरा दी गई है। ऐसे भगवान शिव निश्चय ही अपने भक्तों की समस्त समस्याओं का निवारण करने वाले हैं, मृत्युंजय हैं।

□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

16

# श्रीशिवमहिम्न स्तोत्रम्

शिखरिणी छंद में लिखा गया यह स्तोत्र शिव भक्तों के लिए एक अनुपम स्तोत्र है। इस छंद की विशेषता है कि इसको सस्वर गाते समय भक्त-उपासक शिव महिमा और उनके चरित्रों को अपने भाव जगत में प्रत्यक्ष सा देखता हुआ उससे अपना तादात्म्य स्थापित कर लेता है। इसीका बार-बार अभ्यास उपासना के परम रहस्य शिवतत्त्व का अनुभव कराता है।

**महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी**
**स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।**
**अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्**
**ममाऽप्येषः स्तोत्रे हर! निरपवादः परिकरः॥ 1॥**

हे शम्भो! आप मनुष्य के सभी कष्टों एवं दुःखों का हरण कर लेने में सक्षम हैं, इसीलिए हर कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में, आपको हम विपदा पीड़ितों का दुःख-संकट दूर करने के लिए कोई भी कार्य नहीं करना पड़ेगा। इसके लिए मात्र आपका नाम ही पर्याप्त है, क्योंकि आप हर हैं। हे हरदेव! आपकी महिमा अपरम्पार है, अर्थात् उसकी कोई सीमा नहीं है। यदि आपके माहात्म्य, आकार-प्रकार आदि को न अनुभव करने वाले व्यक्ति की स्तुति उत्तम नहीं है तो ब्रह्मादि सभी देवताओं द्वारा की गई स्तुतियां आपके समकक्ष नहीं हैं। इसका कारण यह है कि आप असीमित हैं तथा वे सभीआपके अनन्त ज्ञान से न्यून ही हैं। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार पक्षी असीमित गगन में अपने बल के अनुसार उड़ते-विचरण करते हैं, उसी प्रकार अपनी बुद्धि के अनुकूल कोई भी व्यक्ति, सेवक या भक्त आपका गुणगान करते हुए हास्यास्पद नहीं होता।

**सावाग्यता तस्य गुणान् गृणीते करौ च तत्कर्मकरौ मनश्च।**
**जिह्वासती दार्दुरिकेव सूत! न चोपगायत्युरुगायगाथाः॥**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हे प्रभो! मनुष्य की वाणी वही है जिसके द्वारा भगवान् का गुणगान हो, हाथ इसीलिए हैं ताकि वे ईश्वर का कैकर्य कर सकें, मन वही है जो ब्रह्म के गुणों का मनन करे अर्थात् उक्त सभी कार्य ही प्रशंसनीय हैं। जिस मनुष्य की जिह्वा भगवान् का गुणानुवाद नहीं करती, वह मेंढक की जिह्वा के समान है। ईश-भक्ति के मार्ग पर अभी हमने चलना ही शुरू किया है, इसमें कोई अपवाद नहीं है।

हे शम्भो! आप स्तुति के सम्बंध में स्वयं तथा ब्रह्मादि की समता युक्तिपूर्वक सिद्ध करें। हे हरदेव! आप स्तुतियों से ज्ञातव्य नहीं हैं, इस उद्देश्य से हम पुनः आपकी स्तुति करते हैं।

**अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-**
**रतद्व्यवृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।**
**स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः**
**पदे त्वर्वाचीने पतति न मनःकस्य न वचः ॥ 2 ॥**

हे हर! प्रारंभ के श्लोक का यह सम्बोधन इस श्लोक से सम्बन्धित है। हे हरदेव! आपके सगुण तथा निर्गुण का महत्व वाणी और मन से परे है। ऐसा ही वेद भी घोषित करता है। मन तथा वाणी आदि भी परमात्मा को न प्राप्त कर आशातीत हो जाते हैं। सच तो यह है कि वेद भी उन महत्व का वर्णन अचंभित होकर करता है; श्रुतियां सगुण और निर्गुण दोनों का उल्लेख आश्चर्यचकित होकर करती हैं अर्थात् वे सगुण का जगत से अभेद तथा निर्गुण का स्व चमत्कार आदि वर्णन करती हैं। अत: ऐसी महानता का उल्लेख कौन ठीक और सही-सही कर सकता है?

**मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-**
**स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।**
**मम त्वेतां वाणीं गुणकथन पुण्येन भवतः**
**पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ 3 ॥**

हे ब्रह्मन्! हे पुरमथन! क्या गुरुदेव इत्यादि द्वारा की हुई स्तुतियां आपके तेज की प्रभावोत्पादिका हो सकती हैं—नहीं। क्योंकि अकारण ही श्रीमान्‌जी के श्वास द्वारा आविर्भूत एवं सभी अलंकारों से आभूषित तथा मधु के समान मधुर-श्रेष्ठ अमृत रस-सी वह वेद घोषणा अतीव स्वादिष्ट है। तात्पर्य—यदि गुरुदेव आदि की स्तुति में कोई उत्कृष्टता नहीं है तो हम लोग ऐसी स्तुति किस तरह कर सकते हैं। परन्तु त्रिपुरासुर का संहार करने वाले हे प्रभो! आपका गुणगान करके हमें जो पुनीत प्राप्त होगा, उससे मेरी बुद्धि निर्मल होगी। इसी उद्देश्य से आपकी स्तुति में मेरी बुद्धि प्रस्तुत हुई है।

**तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षा प्रलयकृत्—**
**त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**अभव्यानामस्मिन्वरद! रमणीयामरमणीं**
**विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ 4 ॥**

हे मनवांछित पदार्थ देने वाले! संसार की रचना, पालन एवं संहार करने वाले! ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद द्वारा गुणगान किए जाने वाले! आपका तेज ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश में विद्यमान है। उसको मिटाने के लिए कुछ अल्पज्ञ निंदा के रूप में उच्च स्वर में विरुद्ध बातें करते हैं। जो निंदा सुन्दर नहीं होती, उसी को भाग्यहीन मनोहर-सी मानते हैं। विरोध करने वाला समूह किन-किन शंकाओं को करता है, उसका समाधान करते हुए स्तुति करते हैं।

**किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं**
**किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।**
**अतर्क्यैश्वर्यै त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः**
**कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ 5 ॥**

हे वरद! आप विचार विनिमय करने योग्य नहीं हैं। आपके संबंध में जगत को अज्ञान में डालने वाला कुविचार अनेक नीच-दुष्ट लोगों को बोलने में पटु बना रहा है—जैसे कि कुम्हार घट (घड़ा) की रचना करते समय चाक चलाना आदि अनेक उद्योग (कार्य) एक साथ करता है, उसी प्रकार परमेश्वर किस देह से, किन सहायक साधनों से, किस आश्रय से तथा किस अत्यंत समीपी कारण से इस त्रिभुवन का निर्माण करता है। यदि उस परमेश्वर में ये उद्योग हैं तो वह परमेश्वर कैसे और अगर उसमें यह सब उद्योग नहीं हैं तो वह संसार का निर्माता कैसे हो सकता है?

वेद यह उद्घाटित करते हैं कि ईश्वर में तर्क-वितर्क का लेश नहीं। जबकि विचारहीन व्यक्ति आपमें तर्क-वितर्क करके जगत को अज्ञान में डाल देते हैं।

**अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-**
**मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।**
**अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो**
**यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर! संशेरत इमे॥ 6 ॥**

हे अमरवर! क्या ये भू आदि लोक अवयव (खण्ड) वाले होते हुए भी जन्मरहित हैं। उसी प्रकार क्या पृथ्वी आदि की रचनात्मक क्रिया बिना किसी निर्माता के संभव हो सकती है। यदि ईश्वर से भिन्न कोई पुरुष इसका निर्माता है तो उसके पास रचना के कौन से सामान हैं। क्योंकि जीव तो अपनी देह का निर्माण करना नहीं जानता तो चौदह भुवनों की बात दूर है। अतः यह सभी प्रमाणों द्वारा सिद्ध है कि आप सर्वशक्तिमान और नश्वर हैं। ऐसी स्थिति में वे मूर्ख हैं, जो आपके संबंध में शंका करते हैं।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति**
**प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।**
**रुचीनां वैचित्र्यादृजु-कुटिल-नानापथजुषां**
**नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥ 7॥**

हे अमरवर! जिस प्रकार सभी नदियां सीधे या एक दूसरी से मिलकर समुद्र में समा जाती हैं, उसी तरह तीनों वेद, चौदह विद्या *(पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्रागमश्रिता, वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश)*, चार सांख्य शास्त्र (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्व विद्या व अर्थशास्त्र) और योग शास्त्र, शैव शास्त्र एवं वैष्णव शास्त्र तथा अनेक सिद्धांत उल्लिखित हैं, परंतु सभी का प्रत्यक्ष भाव क्रमशः आपको प्राप्त करना है। उदाहरणार्थ—जैसे गंगा समुद्र में जाकर सीधे मिल जाती है, परंतु सरयू आदि छोटी नदियां एक दूसरे से मिलकर जाती हैं, वैसे ही दार्शनिक सीधे जाते हैं लेकिन कुछ सिद्धान्तवादी परम्परया जाते हैं। परंतु सबका उद्देश्य आपको प्राप्त करना ही है।

**महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः**
**कपालं चेतीयत्तव वरद! तन्त्रोपकरणम्।**
**सुरास्तां तामृद्धिं दधति तुभवद्भ्रू प्रणिहितां**
**न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥ 8॥**

हे वरद! यद्यपि आप पूर्ण ब्रह्म हैं तथापि बूढ़ा बैल, खाट की पाटी, फरसा, मृगचर्म, भस्म, सर्प और कपाल—यह सभी आपके तांत्रिक उपकरण हैं। यदि कोई यह संदेह करे कि जो स्वयं अकिंचन है, वह दूसरे लोगों को क्या दे सकता है, तो वह मूर्ख है। उसकी धारणा गलत है। सच तो यह है कि सभी देवतागण आपके भृकुटी मात्र से प्रदत्त पृथक-पृथक ऋद्धियां प्राप्त करते हैं। यदि कोई यह कहे कि आप स्वयं उन ऋद्धियों का उपभोग क्यों नहीं करते तो इसका उत्तर है कि आपको कभी विषय-वासना का भ्रम नहीं हो सकता। आप तो मायातीत हैं। आपको किसी वस्तु की आवश्यकता ही नहीं है।

**ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं**
**परौ ध्रौव्याऽध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।**
**समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन! तैर्विस्मित इव**
**स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥ 9॥**

हे त्रिपुरासुर का हनन करने वाले भगवान् शिव! इस सृष्टि की काल्पनिक स्थितियां तीन प्रकार की हैं—नित्य, अनित्य तथा नित्यानित्य। आप इन तीनों के संहारकर्ता हैं। इस कारण विभिन्न मतानुयायी भिन्न-भिन्न रूप में आपकी स्तुति करते हैं। परंतु मैं अपनी वाचालता से प्रेरित होकर आपके विषय में दृढ़ भक्ति भाव रखकर पूरी श्रद्धा के साथ स्थिर होकर स्तुति कर रहा हूं।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**तवैश्वर्य यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः**
**परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्ध वपुषः।**
**ततो भक्तिश्रद्धा भरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश! यत्**
**स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ 10 ॥**

हे शम्भो! हे गिरीश! आपके ऐश्वर्ययुक्त तेज-पुंज प्रतिभा का वास्तविक ज्ञान कोई नहीं प्राप्त कर सकता। ब्रह्मा तथा विष्णुजी ने क्रमशः आपके ऊर्ध्व एवं अधोभाग का ज्ञान प्राप्त करने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वे असफल रहे। लेकिन जब उन्होंने आपके विषय में ज्ञान के लिए दृढ़ भक्ति का सहारा लिया तो वे सरलतापूर्वक सफल हो गए। हे भगवन! जब सर्वोच्च महान शक्तियां आपकी आराधना-उपासना से सफल हो रही हैं तो हम मनुष्यों की मर्यादा का क्या औचित्य है।

**अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं**
**दशास्यो यद् वाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।**
**शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुह-बलेः**
**स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर! विस्फूर्जितमिदम् ॥ 11 ॥**

हे त्रिपुहर! हे शम्भो! रावण जैसे महापराक्रमी ने पूरी श्रद्धा के साथ अपने नौ मस्तकों को कमल-पुष्प की माला की भांति आपके श्रीचरणों में समर्पित कर दिया था। यह रावण की दृढ़ भक्ति का ही प्रतिफल था कि उसने तीनों लोकों पर अपना अधिकार कर लिया था। यही नहीं, उसने तो इन्द्र, वरुण, कुबेर आदि को भी अपना दास बना लिया था। उसकी बीस भुजाएं सदा युद्ध करने के लिए खुजलाया करती थीं। यह सब आपकी दृढ़ भक्ति का ही परिणाम था। तात्पर्य यह है कि आपकी भक्ति करना कभी व्यर्थ नहीं जाता। आपकी शक्ति से क्या नहीं हो सकता। आपकी माया अपरम्पार है।

**अमुष्य त्वत्सेवासमधिगत सारं भुजवनं**
**बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।**
**अलभ्या पातालेऽप्यलस चलितांगुष्ठ शिरसि**
**प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ 12 ॥**

हे हरदेव! आपकी ही दृढ़ भक्ति से रावण ने अनेक चमत्कारी शक्तियां प्राप्त की थीं। परंतु जब उसी रावण ने आपके आवास स्थान पर जाकर अपनी भुजाओं से कैलाश पर्वत को हिलाना प्रारम्भ किया तो आप उसके इस कृत्य से रुष्ट हो गए। आपने उसकी भुजाओं को इस तरह दबाया कि वह तड़पता हुआ नीचे जाने लगा, लेकिन उसे पाताल में भी ठहरने का अवसर नहीं मिला। आपसे ही शक्ति प्राप्त करने वाले रावण ने आपके साथ ऐसा व्यतिकर्म क्यों किया? इसका उत्तर यही है



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि दुष्ट लोग अपनी दुष्टता को कभी नहीं छोड़ते। यहां तक कि सर्वसम्पन्न हो जाने पर भी उनकी प्रकृति में परिवर्तन नहीं होता।

**यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद! परमोच्चैरपि सती–**
**मधश्चक्रे बाणः परिजन विधेय स्त्रिभुवनः।**
**न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न**
**कस्याऽप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ 13 ॥**

हे वरद! मनोवांछित वरदान देने वाले! आपके परम भक्त वाणासुर ने अपने पराक्रम से तीनों भुवनों पर अधिकार कर लिया था। यहां तक कि उसने आपकी दृढ़ भक्ति से परमोच्य इन्द्र को भी नीचा दिखा दिया। आपकी उपासना किसकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए नहीं होती, अर्थात् यह सबकी उन्नति और समृद्धि कारक है।

**अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षय–चकित देवासुरकृपा–**
**विधेयस्याऽऽसीद् यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः।**
**स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो**
**विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभंगव्यसनिनः ॥ 14 ॥**

हे त्रिनयन! समुद्र मंथन के समय जब कालकूट नामक महाविष निकला तो उसे देखकर देवता और दानवगण आश्चर्य में पड़ गए थे। ऐसे समय में आपने इस ब्रह्मांड के अलावा दानवों एवं देवताओं पर कृपा की। आप उस महाविष का पान कर गए। क्या आपके कंठ में पड़ा हुआ वह निशान आपकी सुंदरता को नहीं बढ़ाता?

**असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे**
**निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।**
**स पश्यन्नीश त्वामितर–सुरसाधारणमभूत्**
**स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥ 15 ॥**

हे ईश! जो कामदेव देवताओं, असुरों एवं मनुष्यों पर हर समय अपने बाणों के प्रहार में असफल नहीं होता वही आपको अन्य देवताओं की भांति साधारण समझकर आपके पास गया और आपने उसे भस्म कर दिया। जितेन्द्रियों का अपमान करना हितकर नहीं होता। लेकिन आप तो स्वयं सर्वशक्ति सम्पन्न हैं। दुष्टों एवं घमंडियों का सुधार आप ही करते हैं।

**मही पादाघातद् व्रजति सहसा संशयपदं**
**पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघ रुग्णग्रहगणम्।**
**मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृत जटाताडिततटा**
**जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ 16 ॥**

हे भगवन! जब आप संसार की रक्षा के लिए नृत्य प्रारंभ करते हैं तो उस



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय पृथ्वी भयभीत हो जाती है कि कहीं मैं नीचे न चली जाऊं। ऐसे समय चक्कर काटती हुई मुद्गर के समान आपकी भुजाओं की चोटों से नक्षत्रगण त्रस्त हो जाते हैं। यही नहीं, आपकी मुक्त जटाओं से स्पर्श करता स्वर्ग लोक का प्रारंभ अव्यवस्थित हो जाता है। वास्तव में, यह सब आपकी नृत्यकला के द्वारा बल-प्रदर्शन के दृश्यमात्र हैं। इससे किसी में कुछ व्यत्यय नहीं होता।

**वियद्व्यापी तारागणगुणित-फेनोद्गमरुचिः**
**प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।**
**जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-**
**त्यूनेनैवोन्नेयं धृतमहिम! दिव्यं तव वपुः ॥ 17 ॥**

हे सर्वसमर्थ! व्योम में प्रविष्ट तथा नक्षत्रगणों के प्रकाश से आलोकित फेन से भरा हुआ आकाश गंगा का महान प्रवाह आपके शीश में नन्हीं बूंद की तरह प्रतीत हो रहा है। जिस आकाशगंगा के प्रवाह ने सारे संसार के सात समुद्रों को भरा है, जिससे यह पृथ्वी समुद्र की सीमावर्तिनी कही जाती है, वही आकाशगंगा आपकी जटा में एक नन्हीं बूंद के समान लगती है। इसी से आपकी महिमा प्रमाणित होती है।

**रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो**
**रथांगे चन्द्राऽर्कौ रथचरणपाणिः शर इति।**
**दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-**
**विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ 18 ॥**

हे वरद! आपने त्रिपुरासुर को जलाने के लिए ऐसा दृश्य क्यों प्रकट किया? आप सर्वशक्ति सम्पन्न थे। आपके सामने तो त्रिपुरासुर तृष्णा के समान था। उसके लिए आपने इतने तजेस्वी कार्य क्यों किए? आपने पृथ्वी को रथ, ब्रह्मा को सारथी, मेरु पर्वत को धनुष, सूर्य-चन्द्रमा को चक्र और विष्णु को बाण क्यों बनाया? क्या यह सब क्रीड़ा का विधान था। क्या स्वामित्व अधिकृत विचारवान् परतन्त्र नहीं होते?

**हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-**
**र्यदेकोने तस्मिन्निज-मुदहरन्नेत्रकमलम्।**
**गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा**
**त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर! जागर्ति जगताम् ॥ 19 ॥**

हे त्रिपुरहर! त्रिपुरासुर नामक राक्षस का हनन करने वाले! एक समय जब विष्णुजी आपकी आराधना करते हुए आपके चरणों में एक सहस्र कमल अर्पित कर



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे थे, तो उस समय एक कमल कम हो गया (ऐसी किंवदंती है कि उसे शंकरजी ने छिपा लिया था)। उसकी पूर्ति के लिए श्रीविष्णुजी ने अपना कमलरूपी नेत्र निकालकर अर्पित किया। इसी उत्कृष्ट भक्ति का परिणाम यह है कि सुदर्शन चक्र देकर त्रैलोक्य की रक्षा के लिए विद्यमान हैं।

**क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां**
**क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।**
**आतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं**
**श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥ 20 ॥**

हे प्रभो! याज्ञिकों के यज्ञ समाप्त हो जाने पर फल-प्राप्ति के समय आप जाग्रत रहते हैं। याज्ञिकों द्वारा यज्ञ समाप्त किए बिना यज्ञफल कैसे प्राप्त हो सकता है। इसी कारण यज्ञ कराने वाले याज्ञिक आपको देखकर साक्षी के रूप में आपको निर्धारित करते हैं और वेदों में श्रद्धा रखकर यज्ञ कार्य में संलग्न हो जाते हैं।

**क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरम् धीशस्तनुभृता-**
**ऋषीणामात्विज्यं शरणद्! सदस्याः सुरगणाः।**
**क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफल विधान व्यसनिनो**
**ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ 21 ॥**

हे शरण देने वाले शम्भो! जिस यज्ञ में देहधारियों के स्वामी तथा कर्मकांड कुशल यज्ञकर्ता दक्ष प्रजापति थे, यज्ञ कराने वाले भृगु आदि महर्षिगण थे तथा जिस - सभा के सदस्य देव समूह थे, आपका अपमान होने के कारण आपने उस यज्ञ को विध्वंस कर दिया। हे प्रभो! यज्ञ द्वारा यज्ञकर्ता को स्वर्गादिक फल देना आपकी अभिरुचि है। परंतु आपका अपमान करना दक्ष प्रजापति के यज्ञफल प्राप्ति में बाधक हो गया।

**प्रजानाथं नाथ! प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं**
**गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।**
**धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं**
**त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ 22 ॥**

हे नाथ! कामदेव से वशीभूत अपने पिता प्रजानाथ ब्रह्मा को देखकर उनकी पुत्री ने हरिणी का स्वरूप धारण कर लिया। तब ब्रह्मा मृग का रूप बनाकर उसके पीछे दौड़े। ऐसे समय में आपने परम कृपालु होकर व्याध रूपी बाणों से उसकी सहायता की, जो इस समय भी आकाश में उनका पीछा नहीं छोड़ रहा है। यह आपकी कृपालुता का ही माहात्म्य है।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्वाय तृणवत्**
**पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन! पुष्पायुधमपि।**
**यदि स्त्रैणं देवो यमनोरत देहार्ध घटना-**
**दवैति त्वामद्धावत वरद! मुग्धा युवतयः॥ 23॥**

हे पुरमथन! हे यमनिरत! हे वरद! आपकी अर्द्धांगिनी पार्वती आपके शरीर की सुन्दता से प्रभावित होकर आपके पास गईं। लेकिन तभी धनुषबाण धारण कर आपके पास गए कामदेव को तृणवत् जलता देखकर उन्होंने आपके बारे में यह कल्पना की कि यदि आप योगी होते तो मुझे अपने शरीर से प्रत्येक समय क्यों स्पर्श किए रहते। हे हरदेव! स्त्रियां स्वभाव से मुग्धा एवं भोली होती हैं। यही उनका सौन्दर्य होता है।

**श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर! पिशाचाः सहचरा-**
**श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटी परिकरः।**
**अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं**
**तथाऽपि स्मर्तृणां वरद! परमं मंगलमसि॥ 24॥**

हे स्मरहर! हे कामदेव को भस्म करने वाले हरदेव! श्मशानों में क्रीड़ा करना, भूत-प्रेत आदि को सदा साथ लगाए रखना, शरीर में चिता की भस्म लगाना, मनुष्यों की हजारों खोपड़ियों की माला बनाकर धारण करना तथा अमंगल स्वभाव रखना आदि आपकी बातें सम्पूर्ण संसार में प्रसिद्ध हैं। परन्तु हे शम्भो! आपका स्मरण करने वाले भक्तों एवं सेवकों के लिए आप परम मंगल तथा कल्याणकारी हैं।

**मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमयधायात्तमरुतः**
**प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।**
**यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्ज्यामृतमये**
**दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥ 25॥**

हे प्रभो! अष्टांग योग के ज्ञानी योगी अपना मन बाध्य विषयों से हटाकर अन्तःवायु द्वारा अन्तःकरण में स्थित कर, सत्-चित्-आनन्द स्वरूप का ध्यान करते हैं, रोम-रोम से आनंदित होते हैं, अमृत कुंड में स्नान की तरह प्रमुदित होते हैं और अन्तस्तत्व धारण करते हैं। हे भगवन! वह स्वरूप आप ही तो हैं।

**त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-**
**स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।**
**परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं**
**न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥ 26॥**

हे शम्भो! आप सूर्य हो, आप चन्द्रमा हो, आप वायु हो, आप अग्नि हो, आप



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जल हो, आप आकाश हो, आप पृथ्वी हो तथा प्रत्येक प्राणियों में स्थित आत्मा आप ही हो। जिस प्रकार शास्त्रों में आपकी प्रतिमाओं का प्रभावशाली वर्णन किया गया है, उसी प्रकार प्रखर बुद्धि वाले व्यक्ति को बुद्धिमान कहा जाता है। हे हरदेव! हे वरद! हम मनुष्य यह नहीं जानते कि ऐसा कौन-सा तत्व है, जिसमें आप नहीं हैं, अर्थात् आप सभी जड़-चेतन पदार्थों में सर्वव्याप्त हैं।

**त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-**
**नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्ण विकृति।**
**तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः**
**समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥ 27॥**

हे शरणाद! शरणागत की रक्षा करने वाले! तीन वर्णों—'अ', 'उ' एवं 'म' से बना कर्मधारय 'ॐ' अविकृत पद क्रमशः तीनों वेदों—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद; क्रमशः तीन वृत्तियों—उदात्त, अनुदात्त, स्वरित; तीनों अवस्थाओं—जाग्रत; स्वप्न, सुषुप्ति; त्रिभुवनों क्रमशः—भूः, भुवः, स्वः तथा तीन देवताओं—ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अर्थों को परिभाषित करता है (ऐसा श्रुतियों में कहा गया है)। यही अविकृत तुरीय पद ध्वनियों में अवरुन्ध होकर सत्-चित्त-आनंद स्वरूप का गुणगान करता है।

**भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां-**
**स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।**
**अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि**
**प्रियायाऽस्मै धाम्ने प्रणिहित-नमस्योऽस्मि भवते॥ 28॥**

हे देव! भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महादेव, भीम और ईशान आपके नामाष्टक हैं। इन आठ नामों का गुणगान करने में प्रत्येक वेद तथा देवगण निरंतर प्रयत्नशील हैं। ऐसे तेज पुंज की उपासना में मैं अपने को अक्षम जानकर मन एवं वाणी से उसको केवल नमस्कार कर रहा हूं।

**नमो नेदिष्ठाय प्रियदव! दविष्ठाय च नमो**
**नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर! महिष्ठाय च नमः।**
**नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन! यविष्ठाय च नमो**
**नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥ 29॥**

हे प्रियदेव, अर्थात् सबसे अधिक प्रिय लगने वाले देवता! भावना के अनुसार वहुत सन्निकट में स्थित तथा बहुत दूर में स्थित आपके लिए यौनः पुन्य अभिवादन है। हे स्मरहर! हे कामदेव को भस्म करने वाले! आपके परमताप्पु तथा परममहान स्वरूप को अभिवादन है। हे त्रिनयन! तीन नेत्रों वाले! आपके अत्यन्त वृद्ध एवं अत्यन्त युवा स्वरूप को नमस्कार है। मैं उस सर्व तेजपुंज को भक्तिभाव एवं



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हूं, जिसका यह जगत है तथा यह जगत जिसके लिए है।

**बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः**
**प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।**
**जनसुखकृते सत्त्वोद्रिकतौ मृडाय नमो नमः**
**प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥ 30॥**

हे प्रभो! हे सृष्टि के निर्माण के समय रजोगुण सम्पन्न ब्रह्मा का स्वरूप धारण करने वाले! आपको नमस्कार है। सृष्टि के प्रलयकाल के समय तमोगुण युक्त हर स्वरूप आपको बार-बार अभिवादन है। संसार की रक्षा की स्थिति में सतोगुण सम्पन्न विष्णु स्वरूप आपको शत-शत नमन है। प्रकृष्ट महान पद पर स्थित निस्त्रैगुण्य शिव स्वरूप आपको पुनः पुनः नमस्कार है।

**कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं**
**क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः।**
**इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्**
**वरद! चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥ 31॥**

हे वरदायक! हे मनोवांछित वरदान देने वाले! कहां अल्पतर परिणाम एवं दुःखी हमारा मन और कहां सीमा का उल्लंघन करने वाली तथा निरंतर वृद्धि को प्राप्त होती हुई आपकी ऋद्धियां। ऐसी स्थिति में मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूं। अतः अच्छा यह होगा कि आश्चर्यचकित मेरे अस्तित्व को चमत्कृत करके वाणी रूपी पुष्पों की माला बनवाकर उसे अपने चरणों में उपहार स्वरूप अर्पित करें।

**असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे**
**सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।**
**लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं**
**तदपि तव गुणानामीश! पारं न याति॥ 32॥**

हे शम्भो! हे प्रभो! आपकी सम्पूर्ण महिमा का गुणगान करना किसी के वश में नहीं है। यदि समुद्र रूपी दवात, श्याम रंग के पर्वत के समान काजल, पृथ्वी रूपी पत्र और कल्पवृक्ष रूपी शाखा कलम हो, तब भी शारदाजी दिन-रात हर समय आपके गुणों को लिखने में पारंगत नहीं हो सकतीं।

**असुर-सुर-मुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले—**
**ग्रंथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।**
**सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो**
**रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥ 33॥**

देवों, दानवों और मुनीन्द्रों द्वारा पूजा किए जाने वाले, जिनके मस्तक पर चन्द्रमा विराजमान है, जो निर्गुण तथा सर्वसमर्थ हैं, ऐसे शिवजी की गुण-महिमा को सकलगुण वरिष्ठ पुष्पदन्त नामक गन्धर्व ने बड़े परिश्रम के साथ रुचिपूर्वक माला



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के रूप में ग्रंथित कर इस स्तोत्र का सृजन किया।

**अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्**
**पठति परमभक्तया शुद्धचित्तः पुमान् यः।**
**स भवति शिवलोके रुद्रतुल्य स्तथाऽत्र**
**प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च॥ 34॥**

जो मनुष्य पवित्र मन होकर परम शक्ति से शंकरजी के इस स्तोत्र का निरंतर पाठ करता है, वह शिवलोक में शिवतुल्य हो जाता है। उसकी भी आराधना-उपासना होती है। वह इस लोक में बहुत अधिक धन, आयु, पुत्र तथा कीर्ति प्राप्त करता है।

**महेशान्नाऽपरो देवो महिम्नो नाऽपरा स्तुतिः।**
**अघोरान्नाऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥ 35॥**

आशुतोष भगवान् शंकर से बढ़कर कोई दूसरा देवता नहीं है, महिम्न स्तोत्र से बढ़कर कोई दूसरी स्तुति नहीं है, अघोर से श्रेष्ठ कोई अन्य मंत्र नहीं है तथा गुरु से श्रेष्ठ कोई तत्व नहीं है।

**दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं योगादिकाः क्रियाः।**
**महिम्न स्तव पाठस्य कलां नाऽर्हन्ति षोडशीम्॥ 36॥**

दान-दीक्षा, तीर्थ-तपस्या, ज्ञानार्जन और योगादिक कार्य आदि मिलकर भी महिम्न स्तोत्र के पाठ की सोलहवीं कला को भी नहीं प्राप्त कर सकते।

**कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः**
**शशिधरवर मौलेर्देवदेवस्य दासः।**
**सगुरु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्**
**स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः॥ 37॥**

सभी गन्धर्वों का राजा कुसुमदशन देवताओं के भी देवता एवं मस्तक पर श्रेष्ठ चन्द्रमा को धारण करने वाले शिवजी का सेवक था। एक बार वह शिवजी के क्रोध के कारण अपने महत्व से गिर गया था। लेकिन उसने इस दिव्यातिदिव्य महिम्न स्तोत्र का पाठ कर पुनः अपना वैभव प्राप्त कर लिया।

**आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्व भाषितम्।**
**अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वर वर्णनम्॥ 38॥**

उपमा देने योग्य. मन को आकर्षित करने वाला तथा शुरू से अंत तक शिवजी के गुणानुवाद का वर्णन करने वाला यह पवित्र शिवमहिम्न स्तोत्र पुष्पदंत नामक गंधर्व द्वारा रचा गया है।

**सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतं**
**पठति यदि मनुष्य प्राञ्जलिर्नाऽन्यचेताः।**



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः**
**स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्त प्रणीतम् ॥ 39 ॥**

पुष्पदन्त गन्धर्व द्वारा रचित यह अमोघ स्तवन श्रेष्ठ देवताओं और मुनियों के लिए अति पूजनीय तथा स्वर्गिक आनन्द देने वाला है। यदि कोई मनुष्य मोक्ष प्राप्ति करने के लिए इसे एकाग्र मन से हाथ जोड़कर पढ़ता है तो वह किन्नरों द्वारा स्तुति किया जाता है। बाद में उसे शिवजी का लोक प्राप्त होता है।

**श्री पुष्पदन्त-मुखपङ्कज निर्गतेन**
**स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।**
**कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन**
**सुप्रीणितो भवंति भूतपतिर्महेशः ॥ 40 ॥**

शिवभक्त पुष्पदन्त के कमल मुख से निकले पापों को हरने वाले इस स्तोत्र का एकाग्रतापूर्वक कण्ठस्थ पाठ करने पर भूतपति महेश्वरजी अत्यधिक प्रसन्न होते हैं।

**इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।**
**अर्पिता तेन देवेशः प्रीयंता मे सदाशिवः ॥ 41 ॥**

यह वाङमयी पूजा मैंने आशुतोष भगवान् शंकरजी के चरणों में अर्पित कर दी। इससे सदाशिव देव हमारे ऊपर प्रसन्न होएं।

**तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर!**
**यादृशोऽसि महादेव! तादृशाय नमो नमः ॥ 42 ॥**

हे महेश्वर! मैं आपके तत्व को नहीं जानता कि आप किस प्रकार के हैं। हे महादेव! मैंने आपको देखा भी नहीं है। फिर भी ऐसे स्वरूप के लिए बार-बार नमस्कार है।

**एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।**
**सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥ 43 ॥**

जो मनुष्य एक काल, दो काल अथवा तीन काल शिवजी के समीप इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह सर्व पापों से मुक्त होकर शिवलोक में पूजनीय हो जाता है।

❑❑❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# चीनी वास्तु फेंगशुई एवं भारतीय वास्तु शास्त्र

## अपनाएं और बनें परम सौभाग्यशाली

### भूमि के चुनाव से लेकर भवन निर्माण तक की संपूर्ण जानकारी
### कैसे थोड़ा-सा बदलाव कर वास्तु दोषों से छुटकारा पाएं

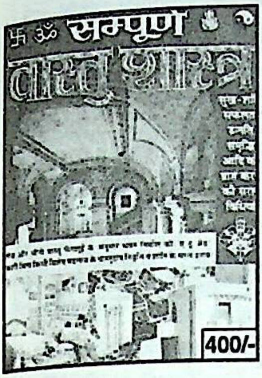

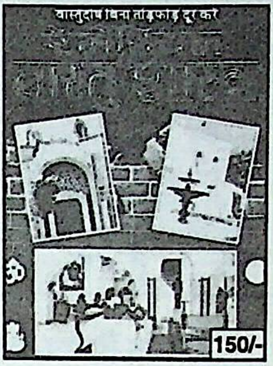

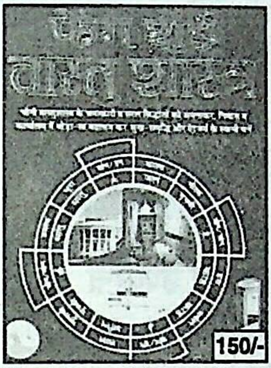


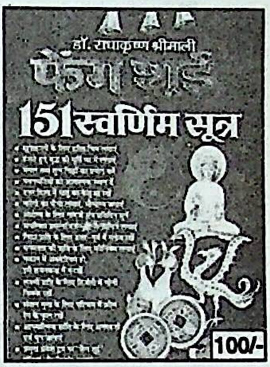


| | | | |
|---|---|---|---|
| ☐ वास्तुशास्त्र (सजिल्द) | 400.00 | ☐ रेमेडियल वास्तुशास्त्र | 150.00 |
| ☐ वास्तुशास्त्र | 300.00 | ☐ वास्तु द्वारा लक्ष्मी प्रवेश | 150.00 |
| ☐ सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र | 150.00 | ☐ फेंगशुई वास्तुशास्त्र | 150.00 |

☐ फेंगशुई : 151 स्वर्णिम सूत्र 100.00

☐ फेंगशुई : अपने घर अपार्टमेंट में खुशहाली लाएं 100.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# तंत्र, मंत्र और पराविज्ञान

## जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान

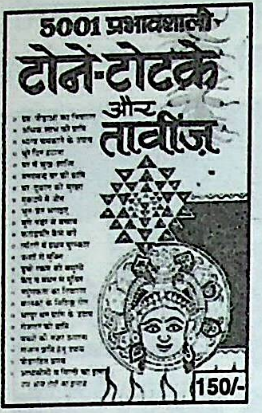


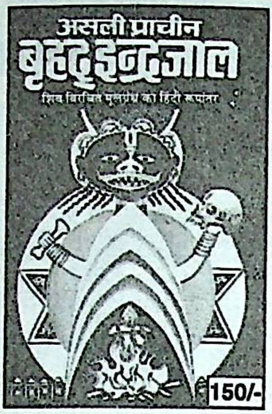

- ☐ यंत्र विधान रहस्य (मल्टी कलर में–सतरंगी श्रीयंत्र सहित) 150.00
- ☐ 5001 प्रभावशाली टोने-टोटके और तावीज 150.00
- ☐ असली प्राचीन बृहद् इन्द्रजाल 150.00
- ☐ गायत्री मंत्र साधना एवं उपासना 100.00
- ☐ गण्डे तावीज व रत्नों द्वारा कष्ट निवारण 80.00
- ☐ वनस्पति तंत्र और शाबर मंत्र 60.00
- ☐ महामृत्युंजय साधना एवं उपासना 60.00
- ☐ श्रीयन्त्र रहस्य (सतरंगी श्रीयंत्र सहित) 60.00
- ☐ शाबर मंत्र सिद्धि 60.00
- ☐ यंत्र सिद्धि 60.00
- ☐ नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियां 60.00
- ☐ सुलेमानी नक़्श 50.00
- ☐ चमत्कारिक यंत्र साधना 50.00
- ☐ चमत्कारिक तंत्र साधना 50.00
- ☐ चमत्कारिक मंत्र साधना 50.00
- ☐ रुद्राक्ष शक्ति के रहस्य 50.00
- ☐ तंत्र और प्रेत विद्या 50.00
- ☐ सम्मोहन और सम्मोहन चिकित्सा 50.00
- ☐ हिप्नोटिज्म के चमत्कार 50.00
- ☐ Practical Hypnotism 80.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# जानें, तलाशें और खड़े हों अपने पैरों पर

सटीक, सिलसिलेवार, सचित्र, प्रामाणिक जानकारी

## इंडस्ट्रियल बुक्स

| | |
|---|---|
| ☐ कम्पलीट स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज | 150.00 |
| ☐ पान मसाले, जर्दा, किवाम व गुटके | 120.00 |
| ☐ सिंथेटिक डिटर्जेन्ट्स, क्लीनर्स साबुन व शैम्पू | 120.00 |
| ☐ सिंथेटिक एवं हर्बल इत्र, सेंट, एसेंस एवं फूड कलर्स | 120.00 |
| ☐ कन्फेक्शनरी आइसक्रीम तथा फूड प्रोडक्टस | 120.00 |
| ☐ कम्प्लीट बेकरी विद् फास्ट फूड | 120.00 |
| ☐ प्रैक्टिकल स्क्रीन प्रिंटिंग (विद स्टीकर्स, लीफ, लेमिनेशन) | 100.00 |

## कैरियर

| | | |
|---|---|---|
| ☐ ड्राइंग पेंटिंग एण्ड स्केचिंग | (बड़े साइज में) | 80.00 |
| ☐ हिन्दी इंगलिश लैटरिंग स्टाइल्स | (बड़े साइज में) | 60.00 |
| ☐ कम्पलीट कलर फोटोग्राफी | (24 पेज रंगीन) | 60.00 |
| ☐ मॉडर्न फोटोग्राफी कोर्स | (16 पेज रंगीन) | 50.00 |
| ☐ कैरियर का चुनाव कैसे करें | | 100.00 |
| ☐ सेल्फ लेटर ड्राफ्टिंग कोर्स | | 100.00 |
| ☐ Self Letter Drafting Course | (in English) | 100.00 |
| ☐ 30 दिन में अंग्रेजी बोलना सीखें | | 40.00 |
| ☐ हिन्दी इंगलिश टीचर | | 40.00 |

## सामान्य ज्ञान

| | | | |
|---|---|---|---|
| ☐ कौन बनेगा करोड़पति | 150.00 | ☐ कौन बनेगा करोड़ोंपति | 120.00 |
| ☐ Kaun Banega Karoronpati | 120.00 | ☐ सामान्य ज्ञान–2003 | 20.00 |

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स**, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली–110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## परिवारोपयोगी

| | |
|---|---|
| ☐ कटिंग टेलरिंग ड्रेस डिजाइनिंग बुटीक कोर्स | 120.00 |
| ☐ होम टेलरिंग कोर्स | 80.00 |
| ☐ लेडीज हैल्थ गाइड (बड़े साइज में) | 80.00 |
| ☐ गर्भावस्था, प्रसवज्ञान और शिशुपालन | 60.00 |
| ☐ बेबी हैल्थ एण्ड चाइल्ड केअर | 50.00 |
| ☐ बच्चों के 5001 चुनिंदा नाम (सम्पूर्ण रंगीन) | 50.00 |
| ☐ सास-बहू सुखद सम्बन्धों का रहस्य | 40.00 |
| ☐ 2001 होम हिंट्स | 40.00 |
| ☐ बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारें | 60.00 |

## सेक्स एजूकेशन

| | |
|---|---|
| ☐ वात्स्यायन का कामसूत्र | 80.00 |
| ☐ सेक्स पावर कैसे बढ़ाएं | 50.00 |
| ☐ सेक्स क्या है—समझें | 50.00 |
| ☐ बच्चों को सेक्स शिक्षा कैसे दें | 40.00 |
| ☐ विवाह योग्य युवकों की सेक्स समस्याएं | 40.00 |
| ☐ सेक्स नर-नारी | 40.00 |
| ☐ विवाह योग्य युवतियों की सेक्स समस्याएं | 40.00 |
| ☐ किशोरियों की सेक्स-स्वास्थ्य समस्याएं | 40.00 |
| ☐ The Kamasutra of Vatsyayana | 80.00 |

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# पूजा, उपासना, तीर्थस्थान, व्रत कथा, पर्व रहस्य तथा महापुरुषों की अमृतमयी वाणी

## आत्मशुद्धि के सरल-सुगम उपाय

- ☐ स्वामी किशोरदास कृष्णदास कृत असली लाहौरी श्रीमद्भगवद् गीता (सजिल्द) 100.00

| | | | |
|---|---|---|---|
| ☐ कबीर वाणी अमृतसंदेश | 120.00 | ☐ 12 महीनों की एकादशी व्रतकथाएं | 30.00 |
| ☐ भजन सागर (दो रंगों में) | 120.00 | ☐ 108 आरती संग्रह (दो रंगों में) | 30.00 |
| ☐ कबीर वाणी अमृतसंदेश | 80.00 | ☐ शिव उपासना (16 पेज रंगीन) | 50.00 |
| ☐ रहीम के दोहे | 60.00 | ☐ महालक्ष्मी उपासना | 50.00 |
| ☐ असली लाहौरी श्रीमद्भगवद् गीता | 60.00 | ☐ सरस्वती उपासना | 50.00 |
| ☐ 1008 कबीर वाणी सत्य-ज्ञानामृत | 60.00 | ☐ हनुमान उपासना (16 पेज रंगीन) | 50.00 |
| ☐ दस गुरु (सिक्खों के दस गुरुओं का जीवनवृत्त) | 50.00 | ☐ दुर्गा उपासना | 50.00 |
| ☐ संभोग, साधना और समाधि | 50.00 | ☐ गायत्री उपासना | 50.00 |
| ☐ दुर्गा सप्तशती (8 पेज रंगीन) | 50.00 | ☐ सूर्य उपासना | 50.00 |
| ☐ बारह महीनों के हिन्दुओं के व्रत त्योहार | 50.00 | ☐ शनि उपासना | 50.00 |
| ☐ श्रीसूक्तम् (श्रीयन्त्र पोस्टर सहित) | 40.00 | ☐ भैरव उपासना | 50.00 |
| ☐ श्री सत्य साईं भजन पूजन विधि | 40.00 | ☐ काली उपासना | 50.00 |
| ☐ श्री सत्य साईं अवतार वाणी | 30.00 | ☐ गणेश उपासना (16 पेज रंगीन) | 40.00 |

- ☐ हमारे पूज्य तीर्थ (देश के लगभग 100 तीर्थस्थलों की सचित्र प्रस्तुति) 60.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# विश्वप्रसिद्ध साहित्य, अध्यात्म एवं नीतिशास्त्र

## साहित्य जहां आईना है किसी समाज का, वहीं अध्यात्म और नीतिशास्त्र कराते हैं सही दिशा का ज्ञान

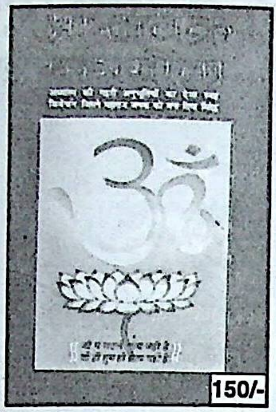

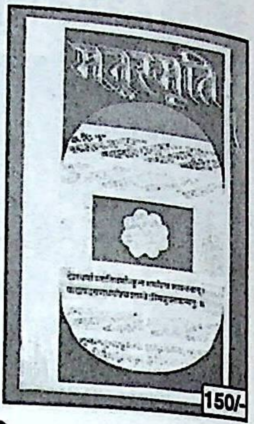


## विश्वप्रसिद्ध साहित्य

- ☐ नेपोलियन बोनापार्ट 150-00
- ☐ कुमारसम्भव 100-00
- ☐ जयशंकर प्रसाद की श्रेष्ठ कहानियां 60-00
- ☐ टॉलस्टाय की श्रेष्ठ कहानियां 60-00
- ☐ उमरावजान 'अदा' 50-00
- ☐ गॉडफादर 50-00
- ☐ खलिल जिब्रान की श्रेष्ठ कहानियां 50-00
- ☐ लोलिता 50-00
- ☐ शेक्सपीयर की सर्वश्रेष्ठ कहानियां 50-00

## अध्यात्म एवं नीतिशास्त्र

- ☐ अष्टावक्र महागीता 150.00
- ☐ मनुस्मृति (दो रंगों में) 150.00
- ☐ शुक्र नीति 100.00
- ☐ महान लोगों की वाणी 80.00
- ☐ भर्तृहरि शतक 60.00
- ☐ क्या है वेदों में ? 60.00
- ☐ क्या है उपनिषदों में ? 60.00
- ☐ चाणक्य नीति (नया टू कलर में) 50.00
- ☐ सम्पूर्ण चाणक्य सूत्र 40.00
- ☐ सम्पूर्ण चाणक्य नीति 40.00
- ☐ विदुर नीति 40.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# भारतीय फलित-ज्योतिष

## जातक के अतीत, वर्तमान और भविष्य का स्पष्ट ज्ञान
## आपदाओं तथा संकटों से मुक्ति के सरल उपाय

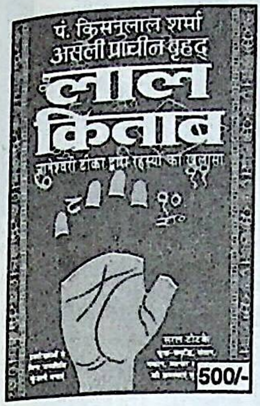

| | | | |
|---|---|---|---|
| ❑ असली प्राचीन बृहद् लाल किताब | 500.00 | ❑ नाड़ी ज्योतिष ज्ञान | 80.00 |
| ❑ असली प्राचीन बृहद् लाल किताब | 300.00 | ❑ ज्योतिष सीखिए | 80.00 |
| ❑ असली प्राचीन रावण संहिता | 500.00 | ❑ मंगल-शुक्र अनिष्ट से मुक्ति | 80.00 |
| ❑ रावण संहिता | 400.00 | ❑ विवाह एवं संतान योग | 60.00 |
| ❑ भृगु संहिता | 200.00 | ❑ मंगल कितना अमंगल | 60.00 |
| ❑ काली किताब (16 पेज रंगीन) | 150.00 | ❑ मूक, प्रश्न एवं स्वर ज्योतिष | 60.00 |
| ❑ असली लाल किताब | 120.00 | ❑ हनुमान ज्योतिष | 60.00 |
| ❑ लाल किताब के टोटके व उपाय | 100.00 | ❑ ज्योतिष द्वारा कामना सिद्धि | 60.00 |
| ❑ सुनहरी किताब | 120.00 | ❑ ज्योतिष द्वारा रोग निवारण | 60.00 |
| ❑ शनि राहु केतु प्रकोप से मुक्ति | 120.00 | ❑ ज्योतिष और धनयोग | 60.00 |
| ❑ भारतीय गणित ज्योतिष | 120.00 | ❑ राशि नक्षत्र और मुहूर्त विज्ञान | 60.00 |
| ❑ जन्मकुण्डली फलित दर्पण | 120.00 | ❑ कालसर्प योग | 50.00 |
| ❑ भारतीय फलित ज्योतिष संहिता | 120.00 | ❑ शनि और साढ़ेसाती | 50.00 |
| ❑ सम्पूर्ण रत्न विज्ञान (16 पेज रंगीन) | 100.00 | ❑ ज्योतिष और सेक्स | 50.00 |
| ❑ नवग्रह पीड़ा से मुक्ति | 100.00 | ❑ शनि का प्रकोप उससे बचाव | 50.00 |
| ❑ पाराशर होराशास्त्र | 100.00 | ❑ अनिष्ट ग्रह कारण और निवारण | 50.00 |
| ❑ राहु-केतु प्रकोप से मुक्ति | 100.00 | ❑ स्वप्न और शकुन | 50.00 |
| ❑ प्रश्न फल निर्णय | 100.00 | ❑ ज्योतिष कम्प्यूटर | 50.00 |
| ❑ स्त्री जातक फल | 80.00 | ❑ ज्योतिष द्वारा अशुभ ग्रहों का उपचार | 50.00 |

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

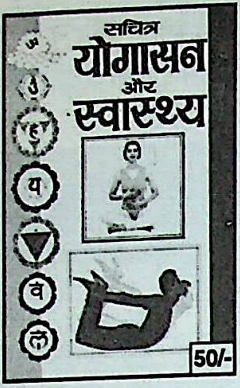


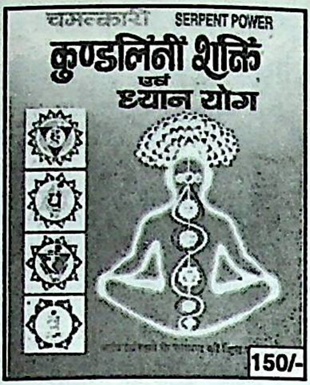

# योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

- ☐ चमत्कारी कुण्डलिनी शक्ति एवं ध्यान योग (बड़े साइज में) 150.00
- ☐ ध्यान क्रियाएं 60.00
- ☐ मिट्टी, पानी, धूप, तेल, शहद, व्यायाम 60.00
- ☐ प्राकृतिक जल चिकित्सा 60.00
- ☐ स्वास्थ्यवर्धक सब्जियां व मसाले 50.00
- ☐ सचित्र योगासन और स्वास्थ्य 50.00
- ☐ योग साधे रोग भागे 50.00
- ☐ दिल के रोग भगाए योग 50.00
- ☐ सरल प्राकृतिक चिकित्सा 50.00

## *स्वस्थ रहने के लिए पढ़ें हमारी 'घर का वैद्य' शृंखला*

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ☐ हल्दी | 20.00 | ☐ मूली | 20.00 | ☐ पीपल | 20.00 |
| ☐ अनार | 20.00 | ☐ नीम | 20.00 | ☐ नमक | 20.00 |
| ☐ आंवला | 20.00 | ☐ अदरक | 20.00 | ☐ आक | 20.00 |
| ☐ लहसुन | 20.00 | ☐ नीबू | 20.00 | ☐ गाजर | 20.00 |
| ☐ पपीता | 20.00 | ☐ हींग | 20.00 | ☐ दूध-घी | 20.00 |
| ☐ तुलसी | 20.00 | ☐ शहद | 20.00 | ☐ फिटकरी | 20.00 |
| ☐ प्याज | 20.00 | ☐ बेल | 20.00 | | |

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स**, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# मशहूर शायरों की कलम का कमाल

## देश-विदेश के शायरों की ग़ज़लों की नये अंदाज में पेशकश—

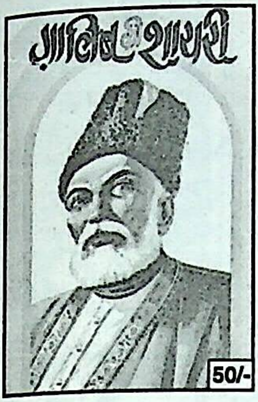

- ☐ ग़ालिब की शायरी (दो रंगों में) 50-00
- ☐ मीर की शायरी (दो रंगों में) 50-00
- ☐ इक़बाल की शायरी (दो रंगों में) 50-00
- ☐ ज़ौक़ की शायरी (दो रंगों में) 50-00
- ☐ आतिश की शायरी (दो रंगों में) 50-00
- ☐ मोमिन की शायरी (दो रंगों में) 50-00
- ☐ पाकिस्तानी शायरी 50-00
- ☐ दाग़ की शायरी 50-00
- ☐ ज़फ़र की शायरी 50-00
- ☐ ग़ज़लें हिन्दुस्तानी 50-00
- ☐ साक़ी, जाम, सुराही 50-00
- ☐ रंगारंग दोहे 50-00

## ☺ हंसें—हंसाएं, ठहाके लगाएं ☺

- ☐ पार्टी जोक्स 40-00
- ☐ पति-पत्नी के जोक्स 40-00
- ☐ प्रेमी-प्रेमिका जोक्स 40-00
- ☐ मिडनाइट जोक्स 40-00
- ☐ सुपर हिट जोक्स 40-00
- ☐ गुदगुदी एक्सप्रेस 40-00
- ☐ जीजा-साली की नोकझोंक 40-00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# बाल कथा साहित्य

## मानव सभ्यता को सही व नई दिशा

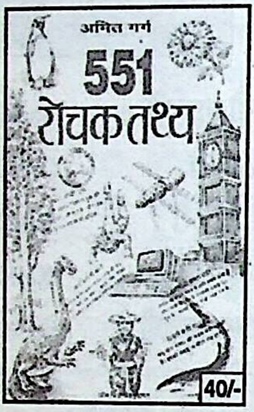

| | | | |
|---|---|---|---|
| ☐ बच्चों की सर्वश्रेष्ठ कहानियां | 50.00 | ☐ अलादीन का जादुई चिराग | 40.00 |
| ☐ बच्चों के सर्वश्रेष्ठ गीत | 40.00 | ☐ गुलिवर की यात्राएं | 30.00 |
| ☐ किस्सा तोता-मैना | 40.00 | ☐ मि. तीसमारखां | 30.00 |
| ☐ सिंहासन बत्तीसी | 40.00 | ☐ सिंदबाद की यात्राएं | 30.00 |
| ☐ वेदों की कथाएं | 50.00 | ☐ 551 रोचक तथ्य | 40.00 |
| ☐ पुराणों की कथाएं | 50.00 | ☐ मैजिक ट्रिक्स | 40.00 |
| ☐ किस्सा हातिमताई | 40.00 | ☐ 121 दिमागी कसरतें | 40.00 |

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स**, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# विश्वप्रसिद्ध विचारक स्वेट मार्डेन

## तथा उनकी ही शैली में लिखित अन्य ऐसी अनमोल पुस्तकें जो निराशा छोड़ जीना सिखाएं

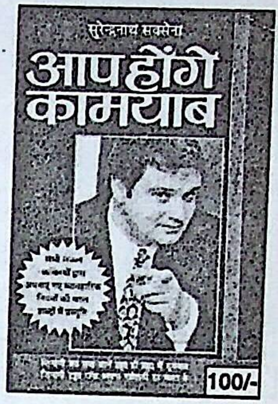


### स्वेट मार्डेन

| | | | |
|---|---|---|---|
| ❑ टॉप पर पहुंचने के टॉप सीक्रेट्स | 100.00 | ❑ आत्मविश्वास कैसे बढ़ाएं | 50.00 |
| ❑ आपकी सफलता आपकी जीत | 100.00 | ❑ चिंता छोड़ो, सदा खुश रहो | 50.00 |
| ❑ आप होंगे कामयाब | 100.00 | ❑ चलो चांद को छू लें | 50.00 |
| ❑ आत्मविश्वास आपकी जीत | 80.00 | ❑ भाग्य को बदलो | 50.00 |
| ❑ व्यवहार कुशल कैसे बनें | 50.00 | ❑ उन्नति कैसे करें | 50.00 |
| ❑ सफलता की चाबी | 50.00 | ❑ आज की बचत कल का सुख | 50.00 |
| ❑ सफल कैसे बनें | 50.00 | ❑ अपनी शक्ति को पहचानो | 50.00 |
| ❑ सुख की खोज | 50.00 | ❑ निराशा एक अभिशाप | 50.00 |
| ❑ हंसते-हंसते जीना सीखो | 50.00 | ❑ जीवन में सफलता कैसे पाएं | 50.00 |

### कुछ अन्य

| | | | |
|---|---|---|---|
| ❑ सफलता के 101 अनमोल सूत्र | 60.00 | ❑ जीवन को कैसे जीएं | 50.00 |
| ❑ स्मरणशक्ति कैसे बढ़ाएं | 60.00 | ❑ सच्चा सुख सच्ची शांति कैसे संभव | 50.00 |
| ❑ पर्सनैलिटी डवलपमेंट कोर्स | 60.00 | ❑ आपकी खुशियां आपके हाथ | 50.00 |
| ❑ इम्प्रूव योर ब्रेन पावर | 60.00 | ❑ करोड़पति कैसे बनें | 50.00 |

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# हिंदी के पाठकों के लिए

## शरत्चन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर बंकिमचन्द्र

## की कालजयी कृतियों की अनुपम प्रस्तुति

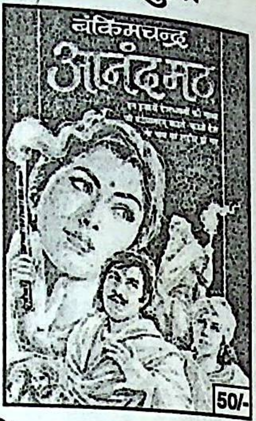


### टैगोर साहित्य

| | | | |
|---|---|---|---|
| ☐ गीतांजलि (दो रंगों में) | 60.00 | ☐ कुलवधू | 60.00 |
| ☐ गोरा | 60.00 | ☐ आंख की किरकिरी | 60.00 |
| ☐ नाव दुर्घटना | 60.00 | ☐ रवीन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षाप्रद कहानियां | 60.00 |

### शरत् साहित्य

| | | | |
|---|---|---|---|
| ☐ पथ के दावेदार | 60.00 | ☐ मझली दीदी | 50.00 |
| ☐ गृहदाह | 60.00 | ☐ देवदास (फिल्मी फोटो फीचर के साथ) | 50.00 |
| ☐ चरित्रहीन | 60.00 | ☐ देवदास | 40.00 |
| ☐ श्रीकांत | 60.00 | ☐ परिणीता | 40.00 |
| ☐ कमला | 50.00 | ☐ बिराज बहू | 40.00 |

### बंकिम साहित्य

| | | | |
|---|---|---|---|
| ☐ आनन्द मठ | 50.00 | ☐ सीताराम | 40.00 |
| ☐ राजमोहन की स्त्री | 40.00 | ☐ राजसिंह | 40.00 |
| ☐ कपाल कुण्डला | 40.00 | ☐ चन्द्रशेखर | 40.00 |

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# प्रेमचन्द साहित्य

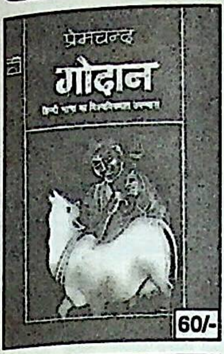

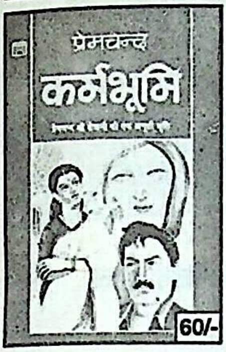

## मानसरोवर : 221 सम्पूर्ण कहानियां

सजिल्द (दोनों भाग एक साथ), मूल्य : 350-00

| | | | |
|---|---|---|---|
| ☐ मानसरोवर भाग-१ | 150-00 | ☐ कायाकल्प | 60-00 |
| ☐ मानसरोवर भाग-२ | 150-00 | ☐ गोदान | 60-00 |
| ☐ प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियां | 60-00 | ☐ ग़बन | 60-00 |
| ☐ रंगभूमि (दोनों भाग एक साथ) | 80-00 | ☐ कफन | 50-00 |
| ☐ प्रेमाश्रम | 60-00 | ☐ निर्मला | 50-00 |
| ☐ कर्मभूमि | 60-00 | ☐ वरदान | 40-00 |
| ☐ सेवासदन | 60-00 | ☐ प्रतिज्ञा | 40-00 |

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# देश और समाज के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले महापुरुषों के जीवन पर आधारित प्रेरणादायक पुस्तकें

## पढ़िए इन पुस्तकों को और जानिए कि कैसे बना जाता है— मानव से महामानव और एक सामान्य व्यक्ति से महापुरुष

*जननी जने तो भक्तजन*
*या दाता या सूर।*
*नहीं तो जननी बांझ रहे,*
*काहे गंवाये नूर॥*

| | | | |
|---|---|---|---|
| ☐ महाराणा प्रताप | 40.00 | ☐ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस | 40.00 |
| ☐ स्वामी दयानन्द सरस्वती | 40.00 | ☐ टीपू सुलतान | 40.00 |
| ☐ स्वामी विवेकानन्द | 40.00 | ☐ मदर टेरेसा | 40.00 |
| ☐ रामकृष्ण परमहंस | 40.00 | ☐ राजा राममोहन राय | 40.00 |
| ☐ स्वामी रामतीर्थ | 40.00 | ☐ डॉ. भीमराव अम्बेडकर | 40.00 |
| ☐ शंहीदे आजम भगत सिंह | 40.00 | ☐ सरदार वल्लभभाई पटेल | 40.00 |
| ☐ चन्द्रशेखर आजाद | 40.00 | ☐ लालबहादुर शास्त्री | 40.00 |
| ☐ झांसी की रानी लक्ष्मीबाई | 40.00 | ☐ इंदिरा गांधी | 40.00 |
| ☐ डॉ. केशवराव हेडगेवार | 40.00 | ☐ राजीव गांधी | 40.00 |
| ☐ छत्रपति वीर शिवाजी | 40.00 | ☐ लाला लाजपत राय | 40.00 |
| ☐ वीर सावरकर | 40.00 | ☐ बाल गंगाधर तिलक | 40.00 |

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

**मनोज पब्लिकेशन्स,** 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.